निर्गमन

1 [1] इस्राएल (याकूब) के बेटों के नाम, जो अपने-अपने
परिवार को लेकर याकूब के साथ मिस्र देश से आए थे,
ये हैं: [2] रूबेन, शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, ज़बूलून,
बिन्यामीन [4] दान, नप्ताली, गाद और आशेर। [5] यूसुफ़ पहले ही
से मिस्र में आ चुका था। याकूब के खुद के वंश में जो पैदा
हुए वे सब सत्तर लोग थे। [6] यूसुफ़ और उसके सभी भाई और
उस पीढ़ी के सभी लोग मर चुके थे। [7] लेकिन इस्राएल का
वंश फूलने-फलने लगा और वे लोग बहुत ताकतवर बनते चले
गए। वे इतना अधिक बढ़ गए कि सारे देश को भर लिया।
[8] मिस्र में एक नया राजा सिंहासन पर बैठा, जो कि यूसुफ़ को नहीं जानता था। [9] उस ने अपनी प्रजा से कहा, "देखो,
इस्राएली हम से गिनती और ताकत में बहुत ज़्यादा बढ़
गए हैं [10] इसलिए आओ, हम उन के साथ समझदारी के साथ
व्यवहार करें, कहीं ऐसा न हो कि वे बहुत बढ़ जाएँ और युद्ध
के समय हमारे दुश्मनों से मिलकर लड़ें और इस देश से निकल
जाएँ." [11] इसलिए उन्हों ने उन पर बेगारी कराने वालों
को नियुक्त किया ताकि वे उन पर भार डाल-डालकर उन्हें
सताएँ। उन्हों ने फ़िरौन (राजा) के लिए पितोम और रामसेस
नामक भण्डार वाले नगरों को बनाया [12] लेकिन ज्यों-ज्यों
वे उनको पीड़ा देते गए, त्यों-त्यों वे बढ़ते और फैलते चले
गए। इसलिए वे इस्रालियों से डरने लगे। [13] फिर भी मिस्त्रियों
ने इस्राएलियों से सख्ती के साथ सेवा करवाई। [14] उनकी
ज़िन्दगी को गारे, ईटों और खेती के तरह-तरह के काम की
कठोर सेवा से दुखी कर दिया। जिस किसी काम में वे उन से
सेवा करवाते थे उसमें वे कठोरता का बर्ताव किया करते थे।
[15] दो इब्री धाईयों को जिनका नाम शिप्रा और पूआ था राजा
की तरफ़ से आज्ञा मिली, [16] "इब्री महिलाओं के बेटों को पैदा
होते ही खतम कर डालना, लेकिन बेटियों को ज़िन्दा रहने
देना" [17] परमेश्वर का डर (इज्ज़त) होने की वजह से वे धाईयाँ
राजा का हुकुम नही मानती थीं और लड़कों को भी ज़िन्दा
छोड़ दिया करती थीं। राजा को यह बात मालूम होने पर
उस ने उन्हें बुलाकर पूछा, "तुम लड़कों को ज़िन्दा क्यों छोड़
देती?" [19] धाईयों ने जवाब में कहा, "इब्री महिलाएँ, मिस्त्री
महिलाओं से भिन्न हैं, वे फुर्तीली हैं। इसके पहले की धाईयाँ
वहाँ पहुँचे, बच्चा पैदा हो जाता है।" [20] इसलिए परमेश्वर ने
धाईयों की भलाई की और इब्री लोग बढ़कर ताकतवर हो
गए। [21] इसलिए कि धाईयाँ परमेश्वर से डरती थीं, परमेश्वर
ने उन के घर बसाए। [22] तब फ़िरौन ने अपनी सारी प्रजा के
लोगों को आज्ञा दी, "इब्री लोगों के सभी बेटों को नील नदी में
डुबा कर मार डालना, लेकिन बेटियों को ज़िन्दा रहने देना।"

2 [1] लेवी के परिवार के एक पुरूष ने लेवी वंश की महिला
से विवाह कर लिया। [2] वह गर्भवती हुई और समय आने
पर उसके एक सुन्दर बेटा पैदा हुआ। बालक के सुन्दर होने के
कारण उस ने उसे छिपा लिया। [3] जब वह ज़्यादा दिन छिपा
न पाई, तो उस ने सरकंडों की एक टोकरी बनायी जिस पर
चिकनी मिट्टी और राल लगाई। अपने बेटे को उस ने उस में
रखकर नील नदी के किनारे कासों के बीच छोड़ दिया। [4] यह
देखने के लिए कि आगे क्या होता है, उसकी बहन दूर खड़ी हो
गयी। [5] नहाने के लिए फ़िरौन राजा की बेटी नदी के किनारे
आई और वहीं उसकी सहेलियाँ टहल रही थी। कासों के बीच
टोकरी को देखकर राजा की बेटी ने अपनी दासी (नौकरानी)
से उस टोकरी को लाने के लिए कहा। [6] खोलते ही रोता
बालक देख उसे तरस आया और वह बोल उठी, "यह तो किसी
इब्री का बच्चा है।" [7] तब बालक की बहन ने फ़िरौन की बेटी
से कहा, "क्या मैं जाकर किसी इब्री महिला धाई को बुला
लाऊँ?" [8] फ़िरौन की बेटी बोली, "जाओ, ले आओ तब लड़की
जाकर बालक की माता को ले आई।" [9] फ़िरौन की बेटी उस से
बोली, "जाकर मेरे लिए इस बच्चे को दूध पिलाओ और मै तुम्हें
मजदूरी दूँगी।" [10] बालक के बड़े होने पर वह उसे फ़िरौन की
बेटी के पास ले गई और वह उसका बेटा बन गया। उस ने यह
कहकर उसे मूसा नाम दिया, "मैंने इसे पानी से निकाला था।"
[11] मूसा के जवान हो जाने पर वह बाहर अपने भाई-बन्धुओं
से मिला। उन के दुखों पर उस ने निगाह की। उस ने पाया कि
उसके एक मिस्त्री उसके इब्री भाई को मार रहा है। [12] उस ने
जब इधर-उधर नजर दौड़ायी, तो वहाँ कोई नहीं दिखा। तभी
उस ने उसे मिस्त्री को मार कर रेत में छिपा दिया। [13] एक
दिन उस ने दो इब्री आदमियों को आपस में मारपीट करते
देखा उस ने अपराधी से कहा,“ तू अपने भाई को मारता है?”
[14] वह बोला, "हमारे ऊपर तुम को हाकिम और जज किस ने
ठहराया है? जिस तरह तुम ने मिस्त्री को मार डाला, क्या
उसी तरह मुझे भी जान से मार डालना चाहते हो?" तब मूसा
यह सोचकर घबराया, कि ज़रूर सब को मालूम पड़ गया है।
[15] राजा (फ़िरौन) को यह मालूम पड़ने पर वह उसे मारने
की योजना बनाने लगा। डर के मारे मूसा वहाँ से भाग गया
और मिद्यान देश में जाकर रहने लगा। एक दिन वह एक

कुएँ के पास जाकर बैठ गया। 16 मिद्यान के याजक की सात
बेटियाँ थीं। वे वहाँ आकर अपने पिताजी की भेड़ बकरियों को
पानी पिलाने के लिए घमेंलों में पानी भर रही थीं। 17 तभी
चरवाहे आकर उनको हटाने लगे। इस कारणवश मूसा ने खड़े
होकर उनकी मदद की और भेड़-बकरियों को पानी पिलाया।
18 अपने पिता रूएल के पास लौटने पर उस ने उन से पूछा,
"आज तुम इतनी जल्दी कैसे लौट आई हो?" 19 उन्हों ने कहा,
"एक मिस्त्री आदमी ने हम को चरवाहों के हाथ से छुड़ाया
और हमारे लिए ढेर सारह पानी भर कर भेड़-बकरियों को
पिलाया।" 20 तब वह अपनी बेटियों से बोला, "वह आदमी
कहाँ है और तुम उसे क्यों नहीं ले आई? उसे बुलाओ कि वह
यहीं खाना खाए।" 21 आने के बाद मूसा उस उन लोगों के साथ
रहने के लिए राज़ी हो गया। रूएल ने मूसा के साथ अपनी बेटी
सिप्पोरा का विवाह कर दिया। 22 समय आने पर उनको बेटा
पैदा हुआ। तब मूसा ने यह कहकर उसका नाम गेर्शोम रखा
कि मैं पराए देश में परदेशी हूँ। 23 बहुत दिनों के बीत जाने पर
मिस्त्र के राजा का देहान्त हो गया। इस्त्राएली लोगों से सख्त
सेवा लिए जाने के कारण वे आँहे भरते थे। उन्हों ने परमेश्वर
के सामने गिड़गिड़ाया भी। 24 परमेश्वर ने उनकी कराहना
सुनकर अपनी उस वाचा को याद किया जो उन्होंने, अब्राहम,
इसहाक और याकूब के साथ बाँधी थी। 25 और इस्त्राएलियों
पर नज़र (दृष्टि) करके उन पर मन लगाया।

3 1 मूसा अपने ससुर यित्रो, मिद्यान के याजक की
भेड़-बकरियों को चराने लगा। एक बार जंगल के पश्चिम
में होरेब नामक परमेश्वर के पहाड़ पर 2 परमेश्वर के दूत ने
एक कटीली झाड़ी के बीच आग की लौ में उसे दर्शन दिया। उस
ने देखा कि झाड़ी जल रही है, लेकिन भस्म नहीं हो रही है।
3 तब मूसा बोला, "मैं वहाँ जाकर देखना चाहूँगा कि आखिर
ऐसा क्यों है।" 4 जब परमेश्वर ने देखा कि मूसा यह देखने के
लिए झाड़ी के पास चला आ रहा है, तो पुकारा, "हे मूसा, हे
मूसा।" मूसा ने उत्तर दिया, "क्या आज्ञा?" 5 परमेश्वर ने कहा,
"यहाँ पास मत आओ, अपने पाँवों से जूतियाँ उतार दो, क्योंकि
जिस जगह पर तुम खड़े हो वह पवित्र है।" 6 फिर परमेश्वर
ने कहा, "मैं तुम्हारे पिता, अब्राहम, इसहाक और याकूब का
परमेश्वर हूँ।" तब मूसा परमेश्वर की (आने वाली आवाज़
की) दिशा की तरफ़ देखते रहने से डरा और अपना मुँह
ढाँप लिया। 7 तब परमेश्वर बोले, "मैंने मिस्त्र में अपनी प्रजा
के दुखों को देखा है। उनकी उस चिल्लाहट को जो (बे-रहम)
मेहनत कराने वालों की वजह से होती है, उसे भी मैंने सुना है।
मेरा मन उनकी पीड़ा पर लगा है। 8 इस कारणवश मैं उतर
आया हूँ कि अपने लोगों को मिस्त्रियों की गुलामी से आजाद
कराऊँ। उन्हें निकालकर एक अच्छे और बड़े देश में जिस में दूध
और शहद बहता है अर्थात् कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी,
हिब्बी और यबूसी लोगों की जगह पहुँचाऊँ। 9 इसलिए अब
सुनो, इस्त्राएलियों की चिल्लाहट मुझे सुनाई पड़ी है। उन के
ऊपर किए जाने वाले मिस्त्रियों के अंधेर को भी मैं देख रहा
हूँ। 10 इसलिए आओ, मैं तुम्हें फ़िरौन (राजा) के पास भेजने
वाला हूँ, ताकि तुम मेरे लोगों को मिस्त्र से निकाल लाओ।
11 लेकिन मूसा ने परमेश्वर से कहा, "मैं कौन हूँ जो फ़िरौन
के पास जाऊँ और इस्त्राएलियों को मिस्त्र से निकाल लाऊँ?
12 परमेश्वर ने जवाब में कहा, "बेशक मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।
तुम को भेजने वाला मैं हूँ, इसका निशान यह होगा, जब तुम
उन लोगों को मिस्त्र से निकाल लाओगे, तब तुम इसी पहाड़
पर परमेश्वर की आराधना करोगे।" 13 मूसा ने परमेश्वर से
कहा, जब मैं इस्त्राएलियों के पास जाकर उन से कहूँ, "तुम्हारे
पूर्वजों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, तब यदि वे
मुझ से आपका नाम पूछें, तो मैं क्या बताऊँ?" 14 परमेश्वर ने
उत्तर में कहा, "मैं जो हूँ सो हूँ यह भी कि जिसका नाम 'मैं हूँ',
उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। 15 फिर परमेश्वर ने मूसा से
यह कहा, "तुम इस्त्राएलियों से यह कहना, 'तुम्हारे पूर्वजों के
परमेश्वर अर्थात् अब्राहम के परमेश्वर इसहाक के परमेश्वर
और याकूब के परमेश्वर, ने मुझ को तुम्हारे पास भेजा है।
देखो, सदा काल तक यही मेरा नाम रहेगा और पीढ़ी-पीढ़ी
तक लोग मुझे इसी नाम से याद करेंगे। 16 इसलिए अब जाकर
इस्त्राएली पुरनियों (बुजुर्गों) को इकट्ठा करो और उन से
कहो, तुम्हारे पूर्वज अब्राहम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर
ने मुझे दर्शन में यह कहा है, कि मैंने तुम पर और तुम से जैसा
व्यवहार मिस्त्र में किया जाता है उसे भी देखा है। 17 मैंने मन
बना लिया है कि तुम को मिस्त्र की पीड़ा में से निकालकर
कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिव्वी और यबूसी लोगों के
देश में ले चलूँगा। यह देश ऐसा है जिस में बहुत दूध और शहद
है। 18 तब वे तुम्हारी मानेंगे और तुम इस्त्राएली बुजुर्गों को
साथ लेकर मिस्त्र के राजा के पास जाकर उस से यह कहना,
हम इब्रियों के परमेश्वर से मिल चुके हैं, इसलिए अब हम को
जंगल में जाने दो, जहाँ पहुँचने में तीन दिन का समय लगता
है। वहाँ जाकर हमें परमेश्वर की आराधना करनी है। 19 मुझे
मालूम है मिस्त्र का राजा तुम्हें निकलने नहीं देगा। यहाँ तक
कि दबाव डाले जाने पर भी वह तुम्हें रोके रहेगा। 20 इसलिए
मैं उन सभी आश्चर्यकर्मों से जो मिस्त्र के बीच करूँगा, उस देश
को मारूँगा और उसके बाद ही वह तुम को जाने देगा। 21 तब
मैं मिस्त्रियों से अपनी प्रजा पर अनुग्रह करवाऊँगा। वहाँ से तुम
कंगाली हालत में नहीं निकलोगे। 22 तुम्हारी एक-एक महिला
अपनी पड़ोसिन और उन के घर में रहने वाली से सोने-चाँदी

के गहने और कपड़े माँग लेगी। तुम उन्हें अपने बेटे-बेटियों को पहनाना। इस तरह तुम मिस्रियों की दौलत को हासिल करोगे।

4 [1] मूसा ने उत्तर में कहा, वे लोग न मुझ पर विश्वास करेंगे और न ही मेरी सुनेंगे, लेकिन कहेंगे, "परमेश्वर ने तुम्हें दर्शन नहीं दिया है।" [2] परमेश्वर ने कहा, "तुम्हारे हाथ में क्या है?" वह बोला, "लाठी।" [3] परमेश्वर ने कहा, "उसे ज़मीन पर फेंक दो।" जैसे ही उस ने उसे ज़मीन पर डाला, वह साँप बन गई और मूसा उसके सामने से भाग खड़ा हुआ। [4] तब परमेश्वर ने कहा, "अपने हाथ से उसकी पूँछ पकड़ लो, तब वे विश्वास कर सकेंगे कि तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर अर्थात् अब्राहम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर ने तुम्हें दर्शन दिया हैं।" [5] जैसे ही उस ने हाथ बढ़ाकर उसको पकड़ा, वह उसके हाथ में लाठी बन गई [6] फिर परमेश्वर ने उस से यह भी कहा, "अपना हाथ छाती पर रखकर ढाँप लो।" इसलिए उस ने वैसा किया, लेकिन जब बाहर निकाला, तो हाथ को बर्फ की तरह सफे़द पाया। [7] तब परमेश्वर ने कहा, "अपना हाथ छाती पर रखकर फिर से ढाँको।" मूसा ने अपना हाथ छाती पर रखकर ढाँप लिया। लेकिन जब उस ने उसको छाती पर से निकाला तो देखा कि वह पूरी देह की तरह ही था। [8] तब परमेश्वर ने कहा, "यदि वे तुम्हारी बात का भरोसा न करें और पहले निशान को न मानें, तो दूसरे निशान का विश्वास कर लेगें। [9] यदि वे इन दोनों निशानों का विश्वास न करें और तुम्हारी बात न मानें, तब तुम नील नदी में से कुछ पानी लेकर सूखी ज़मीन पर डालना। जो पानी तुम नदी में से निकालोगे, वह सूखी ज़मीन पर खून बन जाएगा।" [10] मूसा परमेश्वर से बोला, "हे मेरे प्रभु मैं अच्छी तरह न पहले बोल सकता था, न जब से आप मुझ से बातचीत करने लगे हैं। मुझे साफ़-साफ़ बात करने में मुश्किल होतीहै। [11] परमेश्वर ने उस से कहा, "इन्सान का मुँह किस ने बनाया है? [12] अब जाओ, मै तुम्हारे मुँह के साथ होकर, जो कुछ तुम्हें कहना होगा, तुम्हें सिखलाता जाऊँगा।" [13] मूसा बोल उठा, "हे मेरे प्रभु कृपया किसी और को भेज दीजिएगा। [14] तब परमेश्वर का गुस्सा मूसा पर भड़क उठा और उस ने कहा, "क्या तुम्हारा भाई हारून लेवी नहीं है? मुझे मालूम है कि वह बोलने में अच्छा (निपुण) है। तुम से मिलने वह आ ही रहा है। तुम्हें देखकर उसे खुशी होगी। [15] इसलिए ये बातें तुम उसे सिखाना। मैं उसके और तुम्हारे मुँह के साथ होकर जो तुम्हें करना होगा, सिखाता जाऊँगा। [16] वह तुम्हारी तरफ़ से लोगों से बातें किया करेगा। वह तुम्हारे लिए मुँह और तुम उसके लिए परमेश्वर ठहरोगे। [17] इस लाठी को तुम अपने हाथ में रखना और इसी से चिन्हों को दिखाना।" [18] इसके बाद अपने ससुर के पास लौटकर मूसा ने उस से कहा, "अब मुझे जाने दीजिए ताकि मिस्र में रहने वाले अपने भाईयों के पास जाकर मालूम करूँ कि वे अब तक ज़िन्दा हैं या नहीं।" यित्रो बोला, "कुशल से जाओ।" [19] परमेश्वर ने मिद्यान देश में मूसा से कहा, "मिस्र को वापस चले जाओ, क्योंकि जो लोग तुम्हारी जान के प्यासे थे वे सभी मर चुके हैं। [20] तब मूसा अपनी पत्नी और बेटों को गदहे पर बैठाकर मिस्र देश की तरफ़ परमेश्वर की लाठी लिए लौटा। [21] तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, "मिस्र पहुँचने पर ध्यान देना कि जो अद्भुत काम करने की योग्यता (इज़ाजत) मैंने तुम्हें दी है, उन सभी को फ़िरौन को दिखलाना, लेकिन मैं उसके मन को कठोर कर दूँगा और वह मेरी प्रजा को जाने नहीं देगा। [22] तुम फ़िरौन से कहना, 'परमेश्वर यों कहता हैं, कि इस्राएल मेरा बेटा, यहाँ तक कि मेरा जेठा है। [23] मैं तुम से कह चुका हूँ कि मेरे बेटे को जाने दो ताकि वह मेरी सेवा करे। तुम ने अब तक उसे जाने नहीं दिया है। इस वजह मैं अब तुम्हारे बेटे वरन तुम्हारे जेठे को मार डालूँगा।" [24] एक दिन सफ़र में सराय में परमेश्वर ने मूसा को मार डालना चाहा। [25] तब सिप्पोरा ने एक तेज चकमक का पत्थर लेकर अपने बेटे की खलड़ी को काट डाला और यह कहकर मूसा के पाँवों पर फेक दिया" निश्चय तुम मेरे लिए खून बहाने वाले पति हो।" [26] तब परमेश्वर ने उसको छोड़ दिया। उस समय खतने के कारण वह बोली, "तुम खून बहाने वाले पति हो।" [27] तब परमेश्वर ने हारून से कहा कि वह जंगल में जाकर मूसा से मिले। उस ने ऐसा किया। परमेश्वर के पहाड़ पर उस से मिलने पर उस ने उसे गले लगाया। [28] तब मूसा ने हारून को यह बतलाया कि परमेश्वर ने क्या-क्या कहकर उसे भेजा है और कौन से चिन्ह दिखलाने की आज्ञा उसे दी है। [29] तब मूसा और हारून ने इस्राएलियों के पास जाकर बुज़ुर्गों (पुरनियों) को इकट्ठा किया [30] परमेश्वर ने जो कुछ मूसा को बताया था, वह सभी हारून ने उन लोगों को कह सुनाया। साथ ही साथ उन के सामने चिन्ह भी दिखाए। [31] लोगों ने उन पर विश्वास किया। यह सुनकर कि परमेश्वर ने इस्राएलियों को याद किया और उन के दुखों पर ध्यान दिया, उन्हों ने सिर झुकाकर दण्डवत किया।

5 [1] इसके बाद मूसा और हारून ने जाकर फ़िरौन से कहा, "इस्राएल के परमेश्वर का ऐसा कहना है, मेरी प्रजा के लोगों को जाने दो कि वे जंगल में मेरे लिए त्यौहार मनाएँ।" [2] फ़िरौन बोला, "परमेश्वर है कौन कि मैं उनकी बात मानूँ और इस्राएलियों को जाने दूँ? मैं परमेश्वर को जानता नहीं और इस्राएलियों को जाने नहीं दूँगा।" [3] उन्हों ने कहा, "इब्रियों के परमेश्वर ने हम से मुलाकात की है, इसलिए तीन

दिन के सफ़र का जो रास्ता है, हम तय करेंगे, ताकि अपने परमेश्वर के लिए बलिदान चढ़ाएँ। कहीं ऐसा न हो कि वह हमारे बीच मरी फैला दें या तलवार चलाएँ। 4 मिस्र का राजा उन से बोला,“ हे मूसा और हारून तुम लोगों से उनका काम क्यों छुड़वाना माँगते हो? तुम जाकर अपनी-अपनी ज़िम्मेंदारी पूरी करो। 5 फिर फ़िरौन ने फिर कहा, "देखो, इस देश में उन की संख्या बहुत बढ़ चुकी है और तुम उन्हें मेहनत से मुक्त करना चाहते हो।" 6 उसी दिन फ़िरौन ने उन लोगों को जो मजदूरों से काम लेते थे और उन के प्रमुखों को यह आज्ञा दी 7 अब तक तुम ईटें बनाने के लिए लोगों को पुआल दिया करते थे, आगे मत देना। उन्हें अपने आप जाकर पुआल इकट्ठा करने दो। 8 फिर जितनी ईटें उन्हें पहले बनानी पड़ती थी, उतनी ही अभी भी बनानी पड़ेंगी। ईटों की गिनती में कमी न होने पाए। आलसी होने के कारणवश वेचिल्लाते रहते है, "हमें जाकर परमेश्वर को बलिदान करने दो।" 9 इन लोगों से और ज़्यादा मेहनत करवाई जाए कि वे उसी में लगे रहें और झूठी बातों पर मन न लगाएँ 10 तब लोगों से मेहनत करवाने वालों और उन के प्रमुखों ने बाहर जाकर उन से कहा, "फ़िरौन का कहना यह है कि अब से तुम्हें पुआल नही मिलेगा। 11 जहाँ कही तुम्हें पुआल मिलता है, बटोरो, लेकिन तुम्हारा काम घटाया नहीं जाएगा। 12 इसलिए पुआल ढूँढने के लिए वे लोग सारे मिस्र में बिखर गए, लेकिन उनको खूँटी ही मिली। 13 काम कराने वालों ने उन्हें जल्दी-जल्दी करने को कहा। यह भी कि जैसे पहले पुआल मिलने पर करते थे, अब बिना पुआल पाए काम में लगे रहो 14 इस्राएलियों में से जिन प्रमुखों को फ़िरौन के मेहनत कराने वालों ने उनका अधिकारी ठहराया था, उनकी पिटाई हुई और उन से पूछा गया,“ क्या कारण है कि तुम ने अपनी ठहराई हुई ईटों की गिनती के अनुसार पहले की तरह कल और आज पूरी नहीं कराई?" 15 तब इस्राएलियों के प्रमुखों ने जाकर फ़िरौन से पूछा कि वह अपने दासों से ऐसा बर्ताव क्यों कर रहे हैं? 16 आपके दासों को पुआल तो दिया नहीं जाता है और वे हम से कहते रहते हैं, ईटें बनाओ, ईटें बनाओ। आपके दासों की पिटायी भी हुई है, लेकिन गलती आपके लोगों की है।" 17 फ़िरौन बोला, "तुम आलसी हो, इसलिए परमेश्वर के लिए बलिदान चढ़ाने की इजाज़त माँग रहे हो 18 अब जाओ और अपना काम करो, पुआल तो तुम्हें दिया नहीं जाएगा, लेकिन ईटों की गिनती तुम्हें पूरी करनी है।" 19 यह बात कि पुआल नहीं दिया जाएगा और काम उतना ही करना है, सुनकर प्रमुख लोगों ने जान लिया कि अब उन के परेशानी के दिन आ चुके हैं। 20 फ़िरौन के सामने से बाहर निकल आने पर मूसा और हारून ने उन से भेंट की 21 मूसा और हारून से वे बोले, "परमेश्वर तुम पर दृष्टि करके इन्साफ़ करे, क्योंकि तुम ने हमको फ़िरौन और उसके कर्मचारियों की निगाह में घृणित ठहराकर हमें मार डालने के लिए उन के हाथों में तलवार दे दी है।" 22 लौट कर मूसा ने परमेश्वर से कहा, "हे प्रभु आप ने इन लोगों के साथ ऐसा गलत क्यों किया? और आप ने मुझे यहाँ क्यों भेजा? जब से मैं आपके नाम से फ़िरौन के पास बात करने के लिए गया, तब से उस ने इस प्रजा के साथ बुरा बर्ताव किया है। आप ने अपनी प्रजा को कोई आज़ादी नहीं दी।"

6 1 तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, "अब तुम देखोगे कि मैं फ़िरौन से क्या करूँगा, जिस से वह उनको ज़बरदस्ती निकालेगा। वह ज़रूर उन्हें ज़बरदस्ती निकाल देगा। 2 परमेश्वर ने मूसा से कहा, "मैं परमेश्वर हूँ।" 3,4 मैंने उन के साथ अपनी वाचा पक्की की है अर्थात् कनान देश जिस में वे परदेशी होकर रहते थे, उसे उन्हें दे दूँ। 5 मिस्रियों के गुलाम इस्राएलियों का कराहना मैं सुन चुका हूँ और मैंने अपनी वाचा को याद किया है। 6 इसलिए तुम इस्राएलियों से कहो, "मैं परमेश्वर हूँ और तुम को मिस्रियों की गुलामी से मैं छुड़ाऊँगा। अपने हाथ बढ़ाकर उन्हें भारी सज़ा़ देकर मैं तुम्हें छुड़ा लूँगा। 7 मैं तुम को अपनी प्रजा बनाने के लिए अपना लूँगा। मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँगा। तब तुम जान जाओगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ जो तुम्हें मिस्रियों के बोझ के नीचे से निकाल लाया है। 8 जिस देश को देने का वायदा मैंने अब्राहम, इसहाक और याकूब से किया था, उसी में तुम्हें पहुँचाकर उसे तुम्हारा हिस्सा बना दूँगा। मैं परमेश्वर हूँ।" 9 ये बातें मूसा ने इस्राएलियों को बतायीं, लेकिन उन्हों ने मन की बेचैनी और गुलामी के कारण उसकी न सुनी। 10,11 तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, "तुम जाकर मिस्र के राजा फ़िरौन से कहो कि इस्राएलियों को अपने देश में से निकल जाने दो।" 12 लेकिन मूसा ने परमेश्वर से कहा, "देखो, इस्राएलियों ने मेरी नहीं सुनी, फिर राजा मुँह से हकलाने वाले की क्या सुनेगा? 13 तब परमेश्वर ने मूसा और हारून को इस्राएलियों और मिस्र के राजा फ़िरौन के लिए इस आशय से आज्ञा दी कि वे इस्राएलियों को मिस्र देश से निकाल ले जाएँ 14 उन के बुज़ुर्गों के परिवारों के मुख्य पुरूष ये है : इस्राएल को जेठे, रूबेन के बेटे, हनोक ,पल्लू, हेस्रोन और कर्म्मी; इन्हीं में से रूबेन के कुल हुए। 15 शिमोन के बेटे यमूएल, यामीन, ओहद, याकिन और साहेर और एक कनानी महिला का बेटा शाऊल, इन्ही से शिमौन के कुल की शुरूवात हुई। 16 लेवी के बेटे जिन से उनकी वंशावली शुरू हुई, उन के नाम ये हैं अर्थात् गेर्शोन, कहात और मरारी। लेवी की पूरी उम्र एक सौ तैंतीस साल की हुई। 17 गेर्शोन के बेटे जिनसे उन के परिवार का नाम चला,

लिबानी और शिमी। कहात के बेटे अम्राम, मिसहार, हेब्रोन और उजीएल, कहात की पूरी उम्र एक सौ सैंतीस साल की हुई। 18 कहात के बेटे : अम्राम, मिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल और कहात की पूरी उम्र एक सौ तीस वर्ष की हुई। 19 मरारी के बेटे : महली और मुशी। लेवियों के परिवार जिन से उनका वंश शुरू हुआ ये ही हैं। 20 अम्राम ने अपनी फूफी योकेबेद से विवाह किया और उसी से मूसा और हारून पैदा हुए थे। अम्राम एक सौ सैतीस साल तक जिया था। 21 मिसहार के बेटे : कोरह, नेपेग और जिक्री 22 उजीएल के बेटे : मीशाएल, एलसापन और सिन्नी। 23 हारून ने अम्मीनादाब की बेटी और नहशोन की बहन एलीशेबा से विवाह किया। उन से नादाब, अबीहू, एलाजार और ईतामार उत्पन्न हुए। 24 कोरह के बेटे : अस्सीर, एलकाना, अबीआसाप थे, इन्हीं से कोरहियों के कुलों की शुरूवात हुई। 25 हारून के बेटे एलाजार ने पूतीएल की एक बेटी से विवाह किया, जिस से पीनहास का जन्म हुआ। इन्हीं से उनका कुल चलता रहा। 26 लेवियों के पितरों के घरानों के मुख्य पुरूष ये ही हैं। हारून और मूसा को परमेश्वर ने यह हुक्म दिया इस्राएलियों को झुण्ड-झुण्ड में जत्थों के अनुसार मिस्र देश से निकाल ले आओ।" 27 ये वही मूसा और हारून हैं, जिन्होंने मिस्र के राजा फ़िरौन से कहा, कि हम इस्राएलियों को मिस्र से निकाल ले जाएँगे। 28 परमेश्वर ने मिस्र देश में मूसा से कहा, 29 "मैं परमेश्वर हूँ, इसलिए मैं जो कुछ कहूँ, वही तुम मिस्र के राजा से कहना 30 लेकिन मूसा परमेश्वर से बोला, "मैं बोलने में स्पष्ट नहीं हूँ, फ़िरौन मेरी क्यों सुनने लगा?

7 1 तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, "सुनो, मैं फ़िरौन राजा के लिए तुम्हें परमेश्वर सा ठहरा रहा हूँ और तुम्हारा भाई-हारून तुम्हारा नबी ठहरेगा। 2 जो-जो आज्ञा मैं तुम्हें दूँ, वह तुम कहना और हारून उसे फ़िरौन को बताएगा, ताकि वह इस्राएलियों को अपने देश से निकाल जाने दे। 3 लेकिन मैं फ़िरौन के मन को सख्त कर दूँगा और अपने बहुत से निशान और अद्‌भुत काम मिस्र देश में दिखाऊँगा। 4 फिर भी फ़िरौन तुम्हारी सुनेगा नहीं। मैं मिस्र देश पर अपना हाथ बढ़ाकर मिस्रियों को भारी सज़ा देकर अपनी फ़ौज अर्थात् अपनी इस्राएली प्रजा को मिस्र देश से निकाल लूँगा 5 जब मैं मिस्र पर हाथ बढ़ाकर इस्राएलियों को उनकी गुलामी से छुड़ाऊँगा, तभी मिस्री जान सकेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ।" 6 तब मूसा और हारून ने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार किया। 7 जब मूसा और हारून की परमेश्वर से बातें होने लगीं तब मूसा अस्सी और हारून तिरासी साल का था। 8 मूसा और हारून से परमेश्वर ने कहा, 9 "जब फ़िरौन तुम से कहे, "अपने सबूत के लिए कोई अजीब काम दिखाओ" तब तुम हारून से कहना, वह अपनी लाठी फ़िरौन के सामने फेंक दो ताकि वह साँप बन जाए।" 10 तब मूसा और हारून ने फ़िरौन के पास जाकर परमेश्वर के हुक्म के अनुसार किया। जब हारून ने अपनी लाठी फ़िरौन और उसके कर्मचारियों के देखते-देखते ज़मीन पर डाल दी, वह साँप बन गई। 11 तब फ़िरौन ने पण्डितों और टोनहा करने वालों को बुलवाया। मिस्र के जादूगरों ने आकर अपने-अपने तंत्र-मंत्र से वैसा ही किया। 12 उन्हों ने भी अपनी-अपनी लाठी को डाल दिया और वे भी साँप बन गई। लेकिन हारून की लाठी उनकी लाठियों को निगल गई। 13 लेकिन राजा का मन और कठोर हो गया और उस ने मूसा तथा हारून की बातों को नहीं माना 14 तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, "राजा का मन सख्त हो जाने से वह मेरे लोगों को नहीं जाने दे रहा है।" 15 इसलिए सुबह फ़िरौन के पास जाओ, वह तो पानी की तरफ़ आएगा। जो लाठी साँप बन गई थीं, उसी को नदी के किनारे राजा से भेंट करते समय अपने साथ रखना। 16 उस से इस तरह कहना, "इब्रियों के परमेश्वर ने मुझ से यह कहने के लिए तुम्हारे पास भेजा है कि उनकी प्रजा के लोगों को जाने दिया जाए, ताकि वे जंगल में उनकी उपासना करें, लेकिन आप तो सुनने के लिए राज़ी नहीं 17 परमेश्वर यों कहते हैं, इस से फ़िरौन जान लेगा कि मैं ही परमेश्वर हूँ। तब अपनी लाठी को नील नदी के पानी पर मारूँगा और सारह पानी खून बन जाएगा। 18 नील नदी की मछलियाँ मर जाएँगी और उसमें से बदबू आने लगेगी। यहाँ तक कि मिस्री लोग उस पानी को पीना भी नहीं चाहेंगे। 19 फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा, "हारून से कहो कि अपनी लाठी लेकर मिस्र देश में जितना भी पानी है अर्थात् नदियाँ, नहरें, झीलें, तालाब सभी पर अपना हाथ बढ़ाओ, ताकि सारा पानी खून बन जाए। मिस्र में लकड़ी और पत्थर सभी में भरा हुआ पानी खून बन जाएगा। 20 तब मूसा और हारून ने परमेश्वर के कहने के अनुसार किया। फ़िरौन और उसके कर्मचारियों के देखते-देखते लाठी को नील नदी के पानी पर मारा गया। सारह पानी खून बन गया। 21 नील नदी की मछलियों के मरने से उसमें से बदबू आने लगी। मिस्री लोग नदी का पानी पी नहीं पा रहे थें, क्योंकि सारे मिस्र का पानी खून बन चुका था। 22 तब मिस्र के जादूगरों ने भी अपने तंत्र-मंत्र से वैसा ही किया। फ़िरौन का मन कठोर का कठोर रहा। परमेश्वर के कहने के अनुसार राजा फ़िरौन ने मूसा और हारून की बात नहीं सुनी। 23 फ़िरौन ने ध्यान दिया भी नहीं दिया और अपना मुँह फेरकर चल दिया। 24 इसलिए मिस्री लोग नदी का पानी पी नहीं पा रहे थे, वे नदी के आस-पास खोदने लगे कि किसी तरह पीने का पानी मिल जाए। 25 नील नदी को मारे हुए सात दिन हो गए।

8 1 तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, "फ़िरौन के पास जाओ
और कहो, परमेश्वर तुम से चाहते हैं कि तुम उनकी प्रजा
को जाने दो ताकि वे उनकी आराधना करें। 2 लेकिन अगर तुम
ऐसा नहीं करोगे, तो वह मेंढक भेजकर देश भर को नुकसान
पहुँचाएँगे। 3 नील नदी मेंढकों से भर जाएगी। मेंढक तुम्हारे
घर, बिस्तर, कर्मचारियों के घरों और तुम्हारी प्रजा के तन्दूरों
और कठौतियों में भी चढ़ जाएँगे। 4 तुम पर, तुम्हारी प्रजा
और कर्मचारियों सभी पर मेंढक चढ़ जाएँगे। 5 फिर याहवे ने
मूसा को हुक्म दिया, "हारून से कह दो कि नदियाँ, नहरों
और झीलों के ऊपर अपनी लाठी के साथ अपना हाथ बढ़ाकर
मेंढकों को मिस्र देश में ले आओ। 6 तब हारून ने मिस्र के
तालाबों के ऊपर अपना हाथ बढ़ाया और मेंढ़कों ने मिस्र देश
पर चढ़ाई कर दी। 7 अपने तंत्र-मंत्र की विद्या से जादूगर भी
ऐसा करने में सफल हो गए। 8 तब फ़िरौन ने मूसा और हारून
को बुलवाकर कहा, "याहवे से प्रार्थना करो कि वह मुझ से और
मेरी प्रजा से मेंढकों को हटा ले, तब मैं इस्राएलियों को जाने
दूँगा, ताकि वे याहवे की उपासना करें। 9 तब मूसा फ़िरौन से
बोला, "मैं कब याहवे से यह प्रार्थना करूँ कि मेंढक नील नदी
को छोड़ और कहीं न हों?" 10 राजा फ़िरौन ने कहा, "कल"
वह बोला, "जान लो कि हमारे परमेश्वर याहवे की तरह कोई
दूसरा नहीं है। 11 और मेंढक तुम्हारे पास से, तुम्हारे घरो में
से और तुम्हारे कर्मचारियों और प्रजा के पास से दूर होकर
सिर्फ़ नदी में ही होंगे। 12 इसके बाद मूसा और हारून फ़िरौन
के पास से चल दिए और मूसा ने उन मेंढकों के बारे में गुहार
लगाई जो उस ने फ़िरौन पर भेजे थे। 13 याहवे ने मूसा के
कहने के अनुसार किया और मेंढक घरों, आँगनों और खेतों में
भर गए। 14 लोगों ने मरे मेंढकों को इकट्ठा किया, जिसकी
बदबू सब जगह फैल गई। 15 मेंढकों की विपत्ति से आराम
मिलने पर फिर फ़िरौन अपनी ज़िद्द पर अड़ गया 16 तब याहवे
मूसा से बोले, "हारून को आज्ञा दो और तुम अपनी लाठी
बढ़ाकर ज़मीन की मिट्टी पर मारो, जिससे वह मिस्र देश भर
में कुटकियाँ बन जाएँ।" 17 उन्हों ने वैसा ही किया, अर्थात्
हारून ने लाठी को हाथ में लेकर ज़मीन की मिट्टी पर मारा।
फलस्वरूप इन्सान और जानवर दोनों ही पर कुटकियाँ हो
गईं। यहाँ तक कि सारे मिस्र देश में ज़मीन की मिट्टी कुटकियाँ
बन गई। 18 अपने तंत्र-मंत्र की ताकत से जब जादूगरों ने वैसा
करना चाहा, लेकिन वे कामयाब न हुए। इस तरह मनुष्यों
और जानवरों दोनों पर कुटकियाँ बनी रहीं। 19 तब जादूगरों
ने फ़िरौन से कहा, "यह परमेश्वर का काम है।" तब याहवे के
कहने के अनुसार फ़िरौन का मन सख्त होता गया और उस
ने मूसा और हारून की न सुनी। 20 फिर परमेश्वर ने मूसा
से कहा, "सुबह-सवेरे फ़िरौन के सामने जाना, वह पानी की
तरफ़ आएगा। उस से कहना, परमेश्वर का कहना है, मेरे
लोगों को जाने दो ताकि वे मेरी आराधना करें। 21 अगर तुम
मेरे लोगों को नहीं जाने दोगे, तो तुम पर, तुम्हारी प्रजा पर
और तुम्हारे घरों में झुण्ड के झुण्ड डास भेजूँगा। यही हाल
मिस्त्रियों के घरों और उन के रहने की ज़मीन का होगा।
22 उसी दिन मैं गोशेन देश को जिस में मेरे लोग रहते हैं, अलग
करूँगा। उसमें डांसों के झुण्ड नही होंगे, ताकि तुम जान लो
कि इस दुनिया में मैं ही परमेश्वर हूँ। 23 तुम्हारी अपनी प्रजा
के बीच फर्क क्या है, मैं यह दिखा दूँगा। यह चिन्ह कल होगा।"
24 परमेश्वर ने, वैसा ही किया और फ़िरौन के भक्त और उसके
कर्मचारियों के घरों में और सारे मिस्र देश में डासों के झुण्ड
भर गए, जिसकी वजह से देश बर्बाद हो गया। 25 तब फ़िरौन
ने मूसा और हारून को बुलवाया और कहा, "तुम जाओ और
इसी देश में अपने परमेश्वर के लिए बलिदान करो।" 26 मूसा
बोला, "ऐसा करना ठीक नहीं, क्योंकि हम अपने परमेश्वर
के लिए मिस्त्रियों की घिनौनी चीज चढ़ाएँगे और यदि हम
मिस्त्रियों के देखते उनकी घिनौनी चीज चढ़ाएँ, तो क्या वे हम
पर पथराव नही करेंगे? 27 तीन दिन का रास्ता तय कर जंगल
ही में, जैसा परमेश्वर कहें, वैसा ही बलिदान करेंगे। 28 फ़िरौन
बोला, "मैं जंगल में तुम्हें जाने दूँगा, ताकि तुम जंगल में उनकी
आराधना (उपासना) करो। देखो, ज़्यादा दूर मत जाना और
मेरे लिए प्रार्थना करना।" 29 तब मूसा ने कहा, सुनो, मैं बाहर
जाकर परमेश्वर से निवेदन करूँगा, कि डासों के झुण्ड तुम्हारे
और तुम्हारे कर्मचारियों और प्रजा के पास से दूर कर दिए
जाएँ, लेकिन फ़िरौन भविष्य में कपट करके हमें परमेश्वर
के लिए बलिदान करने को जाने देने के लिए मना न करे।"
30 इसलिए मूसा ने फ़िरौन के पास बाहर जाकर परमेश्वर से
प्रार्थना की। 31 परमेश्वर ने मूसा के कहने के मुताबिक डांसों
के झुण्डों को फ़िरौन और उसके कर्मचारियों और उसकी प्रजा
से दूर किया। यहाँ तक कि एक भी न रहा। 32 तब फ़िरौन ने
फिर से पुराना अड़ियल रवैया अपना लिया और लोगों को
जाने न दिया।

9 1 फिर याहवे ने मूसा से कहा, "फ़िरौन के पास जाकर
कहो, 'इब्रियों के परमेश्वर याहवे का कहना है, मेरी प्रजा
के लोगों को जाने दो, ताकि वे मेरी इबादत करें। 2 यदि तुम
उन्हें पकडे़ रहोगे और जाने न दोगे, 3 तो तुम्हारे घोड़ों,
गदहों, ऊँटों, गाय-बैलों, भेड़-बकरियों आदि जानवरों पर जो
मैदान में हैं, याहवे का ऐसा गुस्सा भड़केगा, कि भारी मरी
होगी। 4 किन्तु याहवे इस्राएलियों के जानवरों और मिस्त्रियों
के जानवरों में ऐसा अन्तर रखेंगे, कि इस्राएलियों के जानवरों
में से कोई भी नहीं मरेगा।" 5 तब याहवे ने कहा, "इस देश

में ऐसा मैं कल ही करूँगा।" 6 दूसरे दिन ऐसा हुआ भी - इस्राएलियों का एक जानवर भी नहीं मरा, लेकिन मिस्रियों के सभी जानवर मर गए। 7 फ़िरौन के पता लगाने पर मालूम पड़ा कि इस्राएलियों के पशुओं में से एक भी नहीं मरा था। इसके बावजूद फ़िरौन का मन कठोर हो गया और उस ने उन्हें जाने नहीं दिया। 8 फिर याहवे ने मूसा और हारून ने कहा, "तुम दोनों मिट्टी में से एक-एक मुट्ठी लो और मूसा उसे फ़िरौन के सामने आसमान की तरफ़ उड़ा दो। 9 तब वह बारीक धूल पूरे मिस्र देश में इन्सानों और जानवरों दोनों पर फफोले और फोड़े बन जाएगी।" 10 उन दोनों ने वैसा किया और मनुष्यों और पशुओं दोनों पर फफोले और फोड़े बन गई। 11 जिस तरह के फोड़े मिस्रियों के निकले, वैसे ही जादूगरों के भी निकले, जिसकी वजह से वे मूसा के सामने खड़े तक नहीं रह सके। 12 तब याहवे ने फ़िरौन के मन को सख्त कर दिया और जैसा याहवे ने मूसा से कहा था, अनसुनी कर दी। 13 इसके बाद याहवे ने मूसा से कहा, "सुबह उठकर फ़िरौन के सामने खड़े होकर कहो, "इब्रियों के परमेश्वर याहवे इस तरह कहते हैं, मेरी कौम के लोगों को जाने की इजाज़त दो, ताकि वे जाकर मेरी उपासना करें। 14 यदि तुम ने ऐसा नहीं किया तो मैं तुम पर, तुम्हारे कर्मचारियों और तुम्हारी प्रजा पर हर तरह की विपत्तियाँ उण्डेलूँगा। तब तुम जान सकोगे कि इस दुनिया में मेरी तरह कोई और दूसरा नहीं है। 15 मैंने तो अपना हाथ बढ़ाकर तुम्हें, तुम्हारी प्रजा को मरी से मारा होता और इस दुनिया में से तुम्हारा नामो-निशाँ मिट गया होता। 16 लेकिन मैंने तुम्हें इसलिए जीवित रखा कि मैं तुम्हें अपनी शक्ति दिखाऊँ और सारी पृथ्वी पर अपना नाम मशहूर करूँ। 17 क्या अभी भी तुम मेरी प्रजा के सामने अपने आपको बड़ा समझते हो और जाने नहीं दे रहे हो? 18 सुनो, कल इसी समय ऐसे भारी ओले बरसाऊँगा, जैसे मिस्र की शुरूआत से आज तक कभी नहीं पड़े। 19 इसलिए अब अपने लोगों को भेजकर मैदान के पशुओं और जो कुछ हो, उसे जल्दी से छिपा लो, नहीं तो मैदान के सभी जानवर और इन्सान ओलों की मार से मर जाएँगे। 20 इसलिए फ़िरौन के उन कर्मचारियों ने जो याहवे के कहने का सम्मान करते थे, अपने नौकरों और जानवरों को घर में कर लिया। 21 लेकिन जिन्होंने याहवे की बात को हल्का-फुलका जाना, अपने पशुओं और नौकरों को बाहर ही रहने दिया। 22 फिर याहवे ने मूसा से कहा कि वह अपने हाथ आकाश की तरफ़ बढ़ाए ताकि सारे मिस्र देश के लोगों, पशुओं और खेती पर ओले गिरें। 23 निर्देष के अनुसार मूसा ने वैसा किया। याहवे की सामर्थ से बादल गरजने लगे, ओले गिरने लगे और आग पृथ्वी तक आती रही। 24 गिरने वाले ओलों के साथ आग भी मिली हुई थी। वे ओले इतने भारी थे कि मिस्र देश के बसने के समय से कभी देखे नहीं गए थे। 25 मिस्र के खेतों में मनुष्य, जानवर और उपज और पेड़ो को बर्बाद होते देखा गया। 26 इस्राएलियों का इलाका गोशेन इस बर्बादी से बच गया। 27 इस बर्बादी को देख फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलवा कर कहा,"इस बार मैंने अपराध किया है। याहवे धर्मी (खरे) हैं। मेरी प्रजा और मैं अधर्मी (दुष्ट) हैं। 28 बादलों का गरजना और ओलों का गिरना काफ़ी हो चुका है। अब याहवे से प्रार्थना करो, तभी तुम्हें जाने दिया जाएगा और तुम्हें कोई नहीं रोकेगा। 29 मूसा बोला, "नगर के बाहर निकलते ही मै याहवे की ओर अपने हाथ फैलाऊँगा और बादल का गरजना, ओले गिरना रूक जाएगा इस से तुम जान जाओगे कि पृथ्वी याहवे की है। 30 फिर भी मेरा यह मानना है कि तुम और तुम्हारे कर्मचारी परमेश्वर का भय न मानेंगे।" 31 सन और जौ तो ओलों से मारे जा चुके हैं, क्योंकि जौ की बालें निकल चुकी थीं और सन में फूल लगे हुए थे। 32 लेकिन क्योंकि गेहूँ और कठिया बढ़े न थे, इसलिए वे मारे नहीं गए। 33 जब मूसा ने फ़िरौन के पास से नगर के बाहर निकलकर याहवे की तरफ़ हाथ फैलाए, तभी बादल का गरजना और ओलों का बरसना बन्द हो गया और अधिक बरसात नहीं हुई। 34 परन्तु यह देख कर कि पानी और ओलों का गिरना और बादल का गरजना बन्द हो गया है, फ़िरौन ने अपने कर्मचारियों समेत अपने मन को कठोर करके पाप किया। 35 इस प्रकार फ़िरौन का मन हठीला होता गया और उस ने इस्राएलियों को जाने न दिया, जैसा कि याहवे ने मूसा के द्वारा कहलाया था।

10 1 फिर याहवे ने मूसा से कहा, "फ़िरौन के पास जाओ, क्योंकि मैं ही ने उसके और उसके कर्मचारियों के मन को इसलिए हठीला कर दिया है कि अपने चिन्ह उन लोगों के बीच दिखाऊँ। 2 तुम अपने बच्चों और उन के बच्चों को बताना कि याहवे ने मिस्रियों को ठट्ठों में किस तरह उड़ाया और कौन-कौन से चिन्ह दिखाए, ताकि तुम यह जान सको कि मैं याहवे हूँ।" 3 तब मूसा और हारून ने फ़िरौन के पास जाकर कहा, "इब्रियों के परमेश्वर याहवे इस तरह कहते हैं, तुम कब तक मेरे सामने नम्र होने में हिचकिचाते रहोगे? मेरी कौम के लोगों को आराधना-स्तुति करने के लिए जाने दो। 4 यदि तुम मेरी कौम को छोड़ोगे नहीं, तो मैं कल ही तुम्हारे देश में टिड्डियाँ ले आऊँगा। वे ज़मीन पर इस तरह छा जाएँगी, कि कुछ और दिखाई तक नहीं पड़ेगा। ओलों से बचे-कुचे को और मैदानी इलाकों के पेड़ों का भी सफ़ाया कर देंगी। 6 वे तुम्हारे, तुम्हारे कर्मचारियों, यहाँ तक कि सभी मिस्रियों के घरों में भर जाएँगी। इतनी टिड्डियाँ तुम्हारे बापदादों या उन के पुरखों ने भी अपने जन्म से नहीं देखी होंगी।" यह कहकर वह फ़िरौन

के पास से बाहर निकल आया। 7 तब फ़िरौन के कर्मचारी
फ़िरौन से कहने लगे, "मूसा कब तक हमारे लिए एक समस्या
(जाल) बना रहेगा? उसके लोगों को जाने भी दीजिए कि वे
जाकर अपने परमेश्वर की वन्दना करें। क्या आप अभी तक
समझ नहीं पा रहे हैं कि सारा मिस्र बर्बाद हो चुका है? 8 तब
मूसा और हारून को फिर से फ़िरौन के पास बुलवाया गया
और पूछा गया कि उपासना के लिए कौन-कौन जाने वाला
है?" 9 मूसा बोल उठा, "हम अपने बेटे-बेटियों, भेड़-बकरियों,
गाय-बैलों, बच्चों और बुज़ुर्गों के साथ जाएँगे, क्योंकि हमें
याहवे के लिए त्यौहार मनाना है। 10 फ़िरौन ने उत्तर में कहा,
"याहवे तुम्हारे संग रहे। यदि मैं तुम्हारे बच्चों समेत तुम्हें
जाने देता हूँ तो देखो समस्या तुम्हारे सामने है। 11 मैं ऐसा
नहीं होने दूँगा। जैसा तुम पुरूष चाहते थे, जाओ और प्रभु
की सेवा करो।" इसके बाद ही फ़िरौन के सामने से उन्हें भेज
दिया गया। 12 तब याहवे ने मूसा से कहा, "मिस्र देश के ऊपर
हाथ बढ़ाकर टिड्डियों द्वारा उस अन्न को बर्बाद कर डालो जो
ओलों की मार से बच चुका है। 13 इसलिए मूसा ने अपनी
लाठी को मिस्र देश के ऊपर बढ़ाया और याहवे ने दिन-रात
पुरवाई चला दी। सुबह होते ही उस पुरवाई के साथ टिड्डियाँ
आ गई। 14 टिड्डियों का भारी दल मिस्र देश में आ पहुँचा।
ऐसा पहले कभी नही हुआ था और न भविष्य में होने वाला
था। 15 टिड्डियों के सारी पृथ्वी पर छा जाने से देश में अँधेरा
हो गया। सारा अनाज या फल सभी जो ओलों से बच गया
था, टिड्डियों ने चट कर लिया। इस कारणवश मिस्र देश में न
कुछ हरियाली रह गई, न ही खेत में अनाज रह गया। 16 तब
फ़िरौन ने तुरन्त मूसा और हारून को बुलवा कर कहा, "मैंने
तो तुम्हारे और तुम्हारे परमेश्वर के खिलाफ़ अपराध किया
है। 17 इसलिए इस बार मुझे माफ़ करो और अपने परमेश्वर
याहवे से प्रार्थना करो कि वह इस बर्बादी (मौत) को दूर करें।
18 तब मूसा ने फ़िरौन के पास निकल कर याहवे से प्रार्थना
की। 19 तब याहवे ने बहुत तेज पश्चिमी हवा बहाकर टिड्डियों
को उड़ाकर लाल समुद्र में डाल दिया और मिस्र की किसी
जगह एक टिड्डी भी न दिखी। 20 तौभी परमेश्वर ने फ़िरौन
के दिल को कठोर कर दिया, इसलिए उस ने इस्राएलियों
को जाने नहीं दिया। 21 फिर याहवे ने मूसा से कहा, "अपना
हाथ आसमान की ओर बढ़ाओ कि मिस्र देश के ऊपर अँधेरा
छा जाए। ऐसा अँधेरा कि टटोला जा सके।" 22 तब मूसा ने
अपना हाथ आसमान की तरफ़ बढ़ाया और सारे मिस्र देश
में तीन दिन तक घोर अँधेरा छाया रहा। 23 तीन दिन तक
कोई भी किसी को देख न पाया, न ही कोई अपनी जगह से
उठा, लेकिन सभी इस्राएलियों के घरों में रोशनी थी। 24 तब
फ़िरौन ने मूसा को बुलाकर कहा, "अपने बच्चों को साथ ले
जाओ और याहवे की इबादत करो, सिर्फ़ अपने मवेशियों को
छोड़ जाओ।" 25 मूसा बोला, "हमें मेलबलि और होमबलि के
जानवर भी देने पड़ेंगे, ताकि हम परमेश्वर याहवे के लिए
चढ़ाएँ। 26 इसलिए हमारे जानवर भी हमारे साथ जाएँगे।
उनका एक खुर तक भी यहाँ नहीं रह जाएगा। हमें सभी
जानवर ले जाने होंगे, क्योंकि मालूम नहीं कि क्या-क्या ले
जाकर आराधना करनी होगी।" 27 किन्तु याहवे ने फ़िरौन का
मन कठोर कर दिया, जिससे उस ने उन्हें जाने न दिया। 28 तब
फ़िरौन बोल उठा, "मेरे सामने से चले जाओ और सावधान
रहो। मैं तुम्हारा मुँह तक नहीं देखना चाहता हूँ, जिस दिन
ऐसा हुआ, तो तुम जीवित न बचोगे।" मूसा ने जवाब दिया,
"ठीक है मैं आपका मुँह कभी नहीं देखूँगा।"

11 1 याहवे ने मूसा से कहा, "एक और मुसीबत मैं
फ़िरौन और मिस्र देश पर डालूँगा, उसके बाद वह
तुम्हें जाने देगा। 2 मेरी प्रजा को यह आज्ञा सुनाओ कि हर एक
पुरूष अपने पड़ोसी और हर एक महिला अपनी पड़ोसन से
सोने चाँदी के गहने माँग ले।" 3 तब याहवे ने मिस्रियों के मन
में अपने लोगों के लिए तरस भर दिया। मूसा, मिस्र देश में
फ़िरौन के कर्मचारियों और साधारण लोगों की निगाह में बहुत
श्रेष्ठ था। 4 तत्पश्चात, मूसा बोला, "याहवे का कहना यह है, मैं
बीच रात में मिस्र देश में चलूँगा। 5 तब मिस्र में सिंहासन पर
बैठने वाले फ़िरौन से लेकर चक्की पीसने वाली गुलाम (दासी)
के पहलौठे, यहाँ तक कि पशुओं के सब पहलौठे, वरन पशुओं
तक के सब पहिलौठे मर जाएँगे। 6 पूरे मिस्र देश में ऐसा बड़ा
हाहाकार मच जाएगा, जैसा उस से पहले न कभी हुआ था
और न होगा। 7 लेकिन इस्राएलियों के विरूद्ध, क्या मनुष्य,
क्या पशु, किसी पर कुत्ता भी न भोकेंगा। इस से तुम जान
लोगे कि मैं मिस्रियों और इस्राएलियों में अन्तर करता हूँ।
8 तब तुम्हारे ये सब कर्मचारी मेरे पास आकर मुझे दण्डवत
कर के कहेंगे, "आप ने सभी मानने वालों समेत तुम निकल
जाओ।" उसके बाद मैं निकल जाऊँगा। गुस्से से यह कहते हुए
मूसा फ़िरौन के पास से निकल गया। 9 याहवे ने मूसा से कह
दिया था, "फ़िरौन तुम्हारी नहीं सुनेगा, क्योंकि मैं चाहता हूँ
कि मिस्र देश में अद्‌भुत काम करूँ।" 10 याहवे ने फ़िरौन का
मन और कठोर कर दिया, इसलिए उस ने इस्राएलियों को
अपने देश से जाने न दिया।

12 1 प्रभु परमेश्वर याहवे ने मूसा और हारून से
कहा, 2 "यह महीना तुम लोगों के लिए पहला या
शुरूवाती महीना ठहरे। 3 इस्राएल के सारे झुण्ड को बताओ
कि इसी महीने के दसवें दिन को तुम्हें अपने पूर्वजों के घरानों

के अनुसार हर घर के लिए एक मेम्ना लेना है। 4 यदि किसी
के परिवार में एक मेम्ने के खाने के लिए लोग कम हों, तो वह
अपने सब से निकट के रहने वाले पड़ोसी के साथ सदस्यों
की गिनती के मुताबिक एक मेम्ना ले। प्रत्येक के खाने के
अनुसार मेम्ने का हिसाब करना। 5 तुम्हारा मेम्ना निर्दोष और
एक साल की आयु का हो चाहे भेड़ का, चाहे बकरी का।
6 इस महीने के चौदहवें दिन तक उसे ऐसे ही रहने देना।
उस दिन शाम के समय इस्राएल के सारे लोग उसे कुर्बान
करें। 7 इसके बाद उसके खून में से कुछ लेकर जिन घरों में
मेम्ने को खाया जाएगा, उन के दरवाज़ों के दोनों बाजुओं और
चौखट के सिरे पर लगाया जाए। 8 उसके गोश्त को उसी रात
आग में भूँजकर अखमीरी रोटी और कड़वे सागपात के साथ
खाया जाए। 9 उसको सिर, पैर और अन्तड़ियों समेत आग में
भूँजकर खाना। कच्चा या पानी में कुछ भी पकाकर मत खाना।
10 उसमें से कुछ भी सुबह तक मत रहने देना। यदि रह जाए
तो उसे आग में जला देना। 11 उसको खाने का तरीका यह है
कमर बाँधकर, पाँव में जूतियॉ पहन हाथ में लाठी लिए हुए
जल्दी-जल्दी खाना। यह याहवे का पर्व कहलाएगा। 12 उस
रात मैं मिस्र देश में पशुओं और मनुष्यों के पहिलौठों को
मारते और देवताओं को सज़ा देते हुए गुज़रूँगा। मैं याहवे
(प्रभु) हूँ। 13 जिन घरों में तुम लोग रहोगे, उन पर वह खून
तुम्हारे लिए निशान ठहरेगा। कहने का मतलब यह है कि उस
खून को देखकर मैं तुम्हें नाश न करूँगा। मिस्र देश के लोगों
को मारते समय तुम्हारा कुछ नुकसान न होगा और तुम बचे
रहोगे। 14 वह दिन तुम्हे सदैव याद दिलाएगा और उसे तुम
त्यौहार की तरह मानना। तुम्हारी आने वाली पीड़ियों में भी
वह सदा काल तक एक पर्व के रूप में मनाया जाए। 15 सात
दिन तक तुम अखमीरी रोटी खाना। पहले ही दिन अपने-अपने
घर से खमीर हटा देना। जो पहले दिन से लेकर सातवें दिन
तक कोई खमीरी चीज़ खाए वह जन इस्राएलियों में से बर्बाद
किया जाए। 16 पहले दिन और सातवें दिन एक पवित्र सभा
करना। दोनों ही दिनों में किसी तरह का काम न किया जाए।
सिर्फ़ खाना खाने की इजाजत है। 17 तुम बिना खमीर की रोटी
का त्यौहार मनाना, क्योंकि उसी दिन मैंने तुम को झुण्ड-झुण्ड
में रखकर मिस्र देश से निकाला हूँ। इसलिए वह दिन तुम्हारी
पीढ़ियों में हमेशा का एक रिवाज बना रहे। 18 पहले महिने
के चौदहवें दिन की शाम से लेकर इक्कीसवें दिन की शाम तक
तुम अखमीरी रोटी का सेवन करना। 19 सात दिन तक तुम्हारें
घरों में कुछ भी खमीर न रहे, लेकिन जो कोई (देशी या
परदेशी) किसी खमीरी वस्तु को खाए, वह मार डाला जाए।
20 कोई खमीरी पदार्थ मत खाना। अपने-अपने घरों में बिना
खमीर की रोटी खाना। 21 इसके बाद मूसा ने इस्राएल के सब
बुजु़र्गों को बुलाया और आज्ञा दी, "तुम लोग अपने-अपने
कुल के अनुसार एक-एक मेम्ना अलग करके फ़सह का पशु बलि
करना। 22 तसले में रखे मेम्ने के खून में जूफा का एक गुच्छा
डुबाकर दरवाजे़ के चौखट के सिरे और दोनो बाजुओं पर
थोड़ा लगाना साथ ही सुबह तक कोई भी जन अपने घर से
बाहर न निकले। 23 याहवे देश के बीच से गुजरते हुए मिस्त्रियों
को मारते जाएँगे। इसलिए जहाँ-जहाँ चौखट और बाजुओं पर
खून दिखेगा, वहाँ नाश करने वाले को भीतर जाने नहीं दिया
जाएगा। 24 इस प्रथा को अपने और अपने वंश के लिए सदा
की विधि जानकर मानते रहना। 25 उस देश में जिसे याहवे
अपने कहने के अनुसार तुम को देंगे, दाखिल हो, तब यह काम
किया करना। 26 जब तुम्हारे बच्चे इस प्रथा के बारे में सवाल
करें, 27 तब उनको यह जवाब देना, "याहवे ने जो मिस्त्रियों
के मारने के समय मिस्र में रहने वाले हम इस्राएलियों के
घरों को छोड़कर हमारे घरों को बचाया, उसी की याद में
यह फ़सह का बलिदान किया जाता है।" तब लोगों ने झुककर
दण्डवत किया। 28 इस्राएलियों ने जाकर वैसा ही किया, जैसे
मूसा और हारून द्वारा उन्हें बताया गया। 29 बीच रात में
याहवे ने मिस्र देश में सिंहासन पर बैठने वाले फ़िरौन से लेकर
गड्ढे में पड़े हुए बंधुए तक, सभी के पहलौठों को, यहाँ तक कि
सब के पहलौठों को खतम कर डाला 30 रात ही को फ़िरौन
उठ बैठा और उसके सभी कर्मचारी और सारे मिस्त्री लोग जग
गए। घरों-घरों में मौत की वजह से बड़ा हाहाकार मच गया।
31 रात ही में फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलवाया और
कहा, "इस्राएलियों समेत तुम मेरी प्रजा के बीच से निकल
जाओ और जाकर याहवे की उपासना करो 32 अपने मवेशियों
को अपने साथ ले जाओ और जाते-जाते मुझे आशीर्वाद भी दे
दो।" 33 मिस्त्रियों का कहना था, "हम सब मर मिटे हैं" उन्हों
ने इस्राएली लोगों पर दबाव डालकर कहा, "देश से झटपट
निकलो।" 34 तब उन्हों ने अपने गुंध-गुंधाए आटे को बिना
खमीर दिए ही कठौतियों समेत कपड़ों में बाँधकर अपने-अपने
कंधे पर डाल दिया। 35 मूसा के निर्देष के अनुसार इस्राएलियों
ने मिस्त्रियों से सोने-चाँदी के गहने और कपड़े माँग लिए।
36 याहवे ने मिस्त्रियों को अपने लोगों के प्रति इतना दया से
भर दिया, कि जो-जो उन्हों ने माँगा, वह सभी उन्हें दे दिया।
इस तरह मिस्त्रियों से इस्राएलियों ने हासिल किया। 37 इसके
बाद इस्राएली रामसेस से सुक्कोत को चल पड़े। यदि बालबच्चों
को न गिनें, तो पैदल चलनेवाले पुरूष ही है छहः लाख थे।
38 उन के संग मिली-जुली भीड, भेड-बकरी, गाय-बैल और
बहुत से जानवर भी थे। 39 मिस्र से लाए गए गुँधे हुए आटे से
उन्हों ने बिना खमीर की रोटियाँ बनाईं। क्योंकि हड़बड़ी में
मिस्र से निकाले जाने के समय, उन के पास समय नहीं था

कि रास्ते के लिए कुछ पकाएँ। इस लिए वह गूँधे हुआ आटा
खमीर-रहित था। 40 इस तरह इस्राएलियों को मिस्र में रहते
चार सौ तीस साल हो गए थे। 41 और जिस दिन वे बाहर
आए, पूरे चार सौ तीस वर्ष पूरे हुए। 42 याहवे इस्राएलियों
को मिस्र देश से निकाल लाए थे, इसलिए वह रात उन्हीं के
लिए मनाए जाने के लिए रखी गई। तब से युगों तक ऐसा
करना उन के लिए वाजिब ठहराया गया। 43 फिर याहवे ने
मूसा से कहा, "त्यौहार का तरीका यह होगा कि कोई परदेशी
उसमें से न खाए। 44 जो किसी का खरीदा हुआ गुलाम हो
और तुम लोगों ने उसका खतना किया हो, तो वह उसमें से
खा पाएगा। 45 मजदूर और परदेशी दोनों को उसमें से खाना
मना है। 46 उसका खाना एक ही घर में हो अर्थात् तुम उसके
मांस में से कुछ घर से बाहर न ले जाना और बलिपशु की कोई
हड्डी न तोड़ना। 47 त्यौहार को मनाना सभी इस्राएलियों की
जिम्मेंदारी है। 48 यदि कोई परदेशी तुम लोगों के साथ रहकर
याहवे के लिए पर्व को मनाना चाहे, तो पहले अपने यहाँ के
सभी पुरूषों का खतना करवाए, पास आकर उसे मानें, तभी
वह तुम में से एक (या देशी) कहलाएगा। 49 तुम्हारे बीच रहने
वाले तुम्हारे अपने लोग और बसने वाले परदेशी दोनों के लिए
एक ही कानून (नियम) हो। 50 याहवे द्वारा दी गई इस आज्ञा
के अनुसार इस्राएलियों ने किया । 51 उसी दिन इस्राएलियों
को याहवे मिस्र देश से दल-दल करके निकाल लाए।

13 1 फिर याहवे ने मूसा से कहा, 2 मनुष्य और पशु
दोनों ही के ज्येष्ठ (बडे-बेटे) मेरे रहें, उन्हें मेरे लिए
अलग रखना।" 3 फिर मूसा ने लोगों से कहा, "इस दिन को
याद रखना। इस दिन तुम गुलामी के घर से अर्थात् मिस्र से
याहवे की शक्ति से निकाल लाए गए हो, इस में अखमीरी
रोटी का सेवन न किया जाए। 4 तुम लोग आबीब के महीने में
आज के दिन निकले हो। 5 इसलिए जब याहवे तुम को कनानी,
हित्ती, एमोरी, हिब्बी और यबूसी लोगों के देश पहुँचाएँगे,
जिसे देने के लिए उन्हों ने तुम्हारे पूर्वजों (बुज़ुर्गों) से वायदा
किया था और जिस में दूध और शहद की नदियाँ बहती हैं,
तब तुम इसी महीने में त्यौहार मनाना। 6 सात दिन अखमीरी
रोटी खाया करना और सातवें दिन याहवे के लिए त्यौहार
मनाना। 7 इन सात दिनों में अखमीरी रोटी खाई जाए। यहाँ
तक कि तुम्हारे देश भर में न खमीरी रोटी, न खमीर तुम्हारे
पास देखने में आए। 8 उस दिन तुम अपने-अपने बेटों को यह
कह कर समझा देना कि यह हम उसी काम के कारण करते हैं,
जो याहवे ने हमारे लिए किया था। 9 फिर तुम्हारे लिए तुम्हारे
हाथ में एक निशान होगा, और तुम्हारी आँखो के सामने याद
कराने वाली वस्तु ठहरें, जिस से याहवे का नियमशास्त्र तुम्हारे
मुँह पर रहे, क्योंकि उन्हींने अपने ताकत से तुम्हें मिस्र देश
से निकाला है। इसलिए तुम इस प्रथा को हर साल निश्चित
समय पर मनाया करना। 11 "फिर जब याहवे उस शपथ के
अनुसार जो उन्हों ने पुरखाओं से और तुम से भी खाई है, तुम्हें
कनानियों के देश में पहुँचाकर उसको तुम्हें दे देंगे। 12 तब
तुम में से जितने अपनी माँ के बड़े बच्चे हैं, - चाहे पशु के भी,
उन्हें याहवे के लिए अर्पण करना। सभी नर बच्चे याहवे के हैं।
13 और गदही के हर एक पहिलौठे के बदले मेम्ना देकर उसको
छुड़ा लेना और यदि तुम उसे छुड़ाना न चाहो तो उसका गला
तोड़ देना। लेकिन आप अपने सब पहलौठे बेटों को बदला
देकर छुड़ा लेना। 14 आने वाले दिनों में जब तुम्हारे बेटे तुम
से पूछें, "यह क्या है?" तो उन से कहना, 'याहवे हमें गुलामी
के घर से (मिस्र देश से) अपने हाथों के बल से निकाल लाए
थे । 15 उस समय जब फ़िरौन ने ज़िद्दी होकर हमको जाने
देना न चाहा, तब याहवे ने मिस्र देश में मनुष्य से लेकर पशु
तक के पहलौठों को मार डाला था। इसी वजह से पशुओं में से
जितने अपनी-अपनी माँ के पहिलौठे नर हैं, उन्हें हम याहवे
के लिए कुर्बान करते हैं। लेकिन सब ज्येष्ठ बेटों को हम बदला
देकर छुड़ा लेते हैं। 16 यह तुम्हारे हाथों पर एक चिन्ह-सा
और तुम्हारी भौंहों के बीच टीका-सा ठहरें, क्योंकि याहवे
हम लोगों को मिस्र से अपनी शक्ति से निकाल लाए हैं।"
17 जब फ़िरौन ने लोगों को जाने की आज्ञा दे दी, तब हालांकि
पलिश्तियों के देश में होकर जो रास्ता जाता है वह छोटा था,
तौभी परमेश्वर यह सोचकर उनको उस रास्ते से नहीं ले गए
कि कहीं ऐसा न हो, ये लोग लड़ाई देख, पछताकर मिस्र को
वापस आएँ। 18 इसलिए परमेश्वर उन्हें घुमाकर लाल समुद्र के
रास्ते से ले चले और इस्राएली पंक्ति बनाकर मिस्र से निकल
गए। 19 मूसा, यूसुफ़ की हड्डियाँ साथ ले गया, क्योंकि यूसुफ़
ने इस्राएलियों को आश्वासन दिया था कि परमेश्वर तुम्हें
छुडाएँगे। उस ने उन से यह कसम खिलवाई, की कि वे उसकी
हड्डियों को अपने साथ ले जाएँगे। 20 फिर उन्हों ने सुक्कोत से
निकलकर जंगल की छोर पर एताम में डेरा किया। 21 याहवे
उन्हें दिन को रास्ता दिखाने के लिए बादल के खम्भे में और
रात को रोशनी देने के लिए आग के खम्भे में होकर उन के
आगे-आगे चला करते थे, जिससे वे रात और दिन चलते जाएँ।
22 परमेश्वर ने न तो बादल के खम्भे को दिन में, न आग के
खम्भे को रात में उन लोगों के सामने से हटाया।

14 1 याहवे ने मूसा से कहा, 2 "इस्राएलियों से कहो कि
वे लौटकर मिगदोल और समुद्र के बीच, पीहाहीरोत
के सामने बालसपोन के सामने अपने डेरे खड़े करें, डेरों
की दिशा समुन्दर की ओर होनी चाहिए। 3 तब फ़िरौन

इस्राएलियों के बारे में सोचेगा, वे देश की उलझनों में फँसे हैं और जंगल में घिर गए हैं।" 4 इसके बाद मैं फ़िरौन को ढीठ बना दूँगा और वह उनका पीछा करेगा। तब फ़िरौन और उसकी सारी फ़ौज के द्वारा मेरा नाम ऊँचा होगा। हाँ, मिस्री लोग जान लेंगे कि मैं याहवे हूँ।" ऐसा उन्हों ने किया भी। 5 जैसे ही मिस्र के राजा को यह पता चला कि वे लोग भाग गए हैं, तो फ़िरौन और उसके कर्मचारियों का मन उन के खिलाफ़ पलट गया और वे कहने लगे, "अरे, हमने यह क्या किया, कि इस्राएलियों को अपनी गुलामी से आजा़द कर दिया!" 6 तब राजा ने अपने रथ को जुतवाकर अपनी फ़ौज को साथ लिया। 7 उस ने छः सौ अच्छे से अच्छे रथ, यहाँ तक कि मिस्र के सभी रथों पर सरदारों को बैठाया। 8 याहवे ने मिस्र के राजा फ़िरौन को ज़िद्दी बना दिया। इसलिए उस ने इस्राएलियों का पीछा किया लेकिन इस्राएली बिना किसी डर के आगे बढ़ते जाते थे। 9 लेकिन फ़िरौन के सब घोड़ों, रथों और सवारों समेत मिस्री फ़ौज उनका पीछा करके उन के पास जो पीहाहीरोत के नजदीक, बालसपोन के सामने समुंदर के किनारे पर डेरे डाले पड़े थे, जा पहुँची। 10 फ़िरौन के नजदीक आते ही इस्राएलियों ने देखा कि मिस्री उनका पीछा कर रहे हैं। यह देख इस्राएली डरे और चिल्लाकर याहवे को पुकारा। 11 उन्हों ने मूसा से कहा, "तुम जंगल में हमारे को मरने के लिए ले आए हो, क्या मिस्र में कब्रें नहीं थीं? 12 मिस्र में हम तुम से कहते रहे, कि मिस्रियों की सेवा करने के लिए हमें यही रहने दो। जंगल में ढेर हो जाने के बजाए मिस्रियों की सेवा करना बेहतर था।" 13 मूसा बोल उठा, "मत डरो, खड़े-खड़े बचाव का वह काम देखो, जो याहवे तुम्हारे लिए आज करेंगे। आज तुम जिन मिस्रियों को देख रहे हो, भविष्य में कभी न देखोगे। 14 तुम चुपचाप रहो, याहवे तुम्हारे पक्ष में लड़ेंगे।" 15 याहवे ने मूसा से पूछा, "मेरे सामने तुम गिड़गिड़ा क्यों रहे हो? इस्राएलियों को आज्ञा दो कि यहाँ से चल दें। 16 तुम अपनी लाठी उठाकर समुद्र के ऊपर बढ़ाओ, वह दो हिस्सों में बँट जाएगा। ऐसा होने पर इस्राएली समुद्र के बीच में से गुजरेंगे जैसे सूखी ज़मीन पर से। 17 हाँ सुनो, मिस्रियों के मनों को ज़िद्दी बना दूँगा और वे वहाँ भी उन लोगों का पीछा करेंगे। तब फ़िरौन और उसकी सारी फ़ौज, रथों और सवारों की बर्बादी द्वारा मेरी बड़ाई करेंगे। 18 जब फ़िरौन, उसके रथों और सवारों पर जीत से मेरी बड़ाई होगी, तब मिस्रियों को मालूम हो जाएगा कि मैं याहवे हूँ। 19 इसके बाद इस्राएली सेना के आगे-आगे चलने वाला स्वर्गदूत उन के पीछे हो गया। उन के आगे चलने वाला बादल का खंभा, आगे से हटकर पीछे जा ठहरा। 20 इस तरह से वह मिस्रियों और इस्राएलियों की फ़ौजों के बीच में आ गया। बादल और अँधेरा बना रहा, लेकिन रात को फिर भी उन्हें रोशनी मिलती रही। वे रातभर एक दूसरे के निकट नहीं आए। 21 फिर मूसा ने अपना हाथ समुंदर के ऊपर बढ़ाया और याहवे ने रातभर तेज हवा चलायी। इस कारणवश समुद्र को दो हिस्सों में कर के पानी इस तरह से हटा दिया कि बीच में सूखी ज़मीन सी हो गई। 22 इस्राएली समुद्र के बीच भूमि पर चलते गए और पानी उन के दाहिने और बाई ओर एक दीवार का काम कर रहा था। तब मिस्री अर्थात् फ़िरौन के सभी घोड़े, रथ और सवार उनका पीछा करते हुए समुद्र के बीच में चले गए। 24 रात के अन्तिम पहर में याहवे ने बादल और आग के खम्भे में से मिस्रियों की सेज पर दृष्टि करके उन्हें घबरा दिया। 25 उस ने उन के रथों के पहियों को निकाल डाला, जिससे उनको चलाना कष्टदायक हो गया। तब मिस्री एक दूसरे से कहने लगे, "आओ, हम इस्राएलियों के सामने से भाग जाएँ, क्योंकि याहवे उनकी ओर से मिस्रियों के विरूद्ध युद्ध कर रहे हैं।" 26 फिर मूसा से याहवे ने कहा, "तुम अपना हाथ फिर से समुद्र के ऊपर बढा़ओ, ताकि पानी मिस्रियों, उन के रथों और सवारों पर फिर बहने लगे।" 27 जैसे ही मूसा ने वैसा किया, सुबह होते-होते समुद्र ज्यों का त्यों हो गया। मिस्री उल्टे पैर भाग उठे, लेकिन याहवे ने उनको समुद्र ही में नाश कर डाला। 28 पानी के उल्टे पलटने से समुद्र के बीच के सभी फ़िरौन की सेना के लोग जो इस्राएलियों का पीछा कर रहे थे सब के साथ वहीं डूब मरे। 29 लेकिन इस्राएली समुद्र के मध्य सूखी ज़मीन पर चलते गए और उन के दोनों तरफ़ पानी दीवार की तरह खड़ा रहा। 29 लेकिन इस्राएली समुद्र के मध्य सूखी ज़मीन पर चलते गए और उन के दोनों तरफ़ पानी दीवार की तरह खड़ा रहा। 30 इस तरह याहवे ने उस दिन इस्राएलियों को मिस्रियों के शिकंजे से छुड़ाया। इस्राएलियों ने मिस्रियों को समुद्र के किनारे पर भरे पड़े हुए देखा। 31 याहवे ने मिस्रियों पर जो शक्ति दिखाई थी, उसे देखकर इस्राएलियों के मन में परमेश्वर का डर समा गया और याहवे तथा मूसा पर भी विश्वास किया।

15 1 तब मूसा और इस्राएलियों ने याहवे के लिए यह गाना गाया। वे बोले, "मैं याहवे का गीत गाऊँगा, क्योंकि वह महाशक्तिशाली ठहरे हैं, उन्हों ने घोड़ों समेत सवारों को समुद्र में डुबो दिया है। 2 याहवे मेरे बल और भजन का विषय हैं, वही मेरे उद्धार भी ठहरे हैं, मेरे परमेश्वर वही हैं, मैं उन्हीं की स्तुति करूँगा, (मैं उन के लिए रहने का स्थान बनाऊँगा), वही मेरे पूर्वजों के परमेश्वर हैं, मैं उन्हीं की सराहना करूँगा। 3 याहवे सैनिक हैं, उनका नाम याहवे है। 4 उन्हों ने फ़िरौन के रथों और पूरी फ़ौज को समुद्र में फ़ेंक दिया। उसके बढ़िया से बढ़िया रथ लाल समुद्र में डूब गए।

5 गहरे पानी से वे ढप गए। पत्थर की तरह वे गहरे में डूब
गए। 6 हे याहवे, आपका दाहिना हाथ शक्ति में महाप्रतापी
हुआ, हे याहवे, आपका दाहिना हाथ दुश्मन को चूर-चूर कर
डालता है। 7 आप अपने दुश्मनों को अपने महाप्रताप से गिरा
देते हैं। आपके गुस्से के भड़कने से वे भूसे की तरह भस्म हो
जाते हैं। 8 आपके नथनों की साँस से पानी इकट्ठा हो गया,
धाराएँ ढेर की तरह थम गई, समुद्र के बीच में गहरा जल जम
गया। 9 दुश्मन ने कहा था, मैं पीछा करूँगा, मैं जा पकड़ूँगा,
मैं लूट के सामान को बाँट लूँगा, उन वस्तुओं से मैं तृप्त हो
जाऊँगा। अपनी तलवार खींचते ही अपने हाथ से उन्हें बर्बाद
कर डालूँगा। 10 आप ने अपने सांस की हवा चलाई, तब समुद्र
ने उनको ढाँप लिया, वे इस इतनी बड़ी मात्रा के पानी में सीसे
की तरह डूब गए। 11 हे याहवे, देवताओं में आपकी तरह कौन
है? आप तो पवित्रता के कारण महाप्रतापी और अपनी स्तुति
करने वालों के डर योग्य और आश्चर्य के कामों को करने वाले
हैं। 12 आप ने अपना दाहिना हाथ बढ़ाया और पृथ्वी ने उन्हें
निगल लिया है। 13 आप ने अपनी करूणा से अपनी छुड़ाई
हुई प्रजा की अगुवाई की है, अपनी ताकत से आप उसे अपने
पवित्रस्थान को ले चले हैं। 14 देश-देश के लोग सुनकर काँप
उठेंगे, पलिश्तियों के प्राणों के लाले पड़ जाएँगे। 15 एदोम के
गवर्नर घबरा जाएँगे, सभी कनान निवासियों के मन पिघल
जाएँगे। 16 उन के भीतर डर और घबराहट समा जाएगी,
आपकी बाँह के प्रताप से वे पत्थर की तरह अबोल हो जाएँगे,
जब तक, हे याहवे, आपकी प्रजा के लोग निकल न जाएँ,
जब तक आपके मोल लिए हुए पार न हो जाएँ। 17 आप उन्हें
पहुँचाकर अपने निज भाग वाले पहाड़ पर बसाएँगे, यह वही
जगह है, हे याहवे जिसे आप ने अपने रहने के लिए बनाया
और वही पवित्रस्थान है जिसे हे प्रभु आप ने खुद ही स्थिर
किया है। 18 याहवे सदा सर्वदा राज्य करते रहेंगे। 19 इसलिए
कि फ़िरौन के घोड़ो, रथों और सवारों सभी को जो समुद्र के
बीच में थे, याहवे ने पानी को पलटाकर डुबो कर मार डाला,
लेकिन इस्राएली समुद्र के बीच मानो सूखी ज़मीन पर से
गुजर गए। 20 तब हारून की बहन और नबिया मरियम ने
हाथ में डफ लेकर सभी महिलाओं की अगुवाई की जो डफ
लेकर नाच रहीं थी। 21 मरियम उन के साथ यह गाती गई,
"याहवे का गीत गाओ, क्योंकि वह महाप्रतापी हैं, घोड़ो समेत
सवारों को उन्हों ने समुद्र में फेंक दिया है।" 22 इसके बाद
मूसा इस्राएलियों को लाल समुद्र से आगे ले गया। जब वे शूर
नामक जंगल पहुँचे, तो तीन दिन तक पानी का कोई सोता न
मिला 23 एक जगह उन्हें पानी मिला भी, लेकिन वह खारा
था और उसे न पी सके, इसलिए उस स्थान का नाम मारा हो
गया। 24 लोग कुड़कुड़ाते हुए मूसा से पूछने लगे कि वे क्या
पीएँ। 25 जब मूसा याहवे के सामने गिड़गिड़ाया, तो उसे एक
पौधा दिखाया गया, जिसको पानी में डालने से खारा पानी
मीठा हो गया। उसी जगह याहवे ने उन के लिए एक विधि
और नियम बनाने के साथ परीक्षा की, 26 "यदि तुम अपने
परमेश्वर याहवे का वचन (शिक्षा) तन मन से सुनो और उन
के अनुसार जो सही है वही करो, उनकी आज्ञाओं पर कान
लगाने के साथ सभी विधियों (आज्ञाओं) को मानो, तो जितनी
बीमारियाँ मैंने मिस्त्रियों पर भेजी है, उन में से एक भी तुम
पर न भेजूँगा, क्योंकि मैं तुम्हारी बीमारियों को ठीक करने
वाला याहवे हूँ।" 27 एलीम नामक जगह पर आने पर उन्हें
बारह सोते और सत्तर खजूर के पेड़ मिले। इसलिए उन्हों ने
वहीं अपने-अपने तम्बू गाड़ दिए।

16 1 फिर एलीम से निकलकर इस्राएली मिस्र देश से
निकलने के बाद दूसरे महीने के पंद्रहवे दिन को सीन
नामक जंगल में जो एलीम और सीनै पहाड़ के बीच में है,
आ पहुँचे। 2 जंगल में इस्राएली मूसा और हारून के विरोध
में बडबड़ा कर कहने लगे, 3 "जब हम मिस्र देश में मांस के
बर्तनों के पास बैठकर मन चाहा खाना खाते थे, तब यदि
याहवे के हाथ से हमें मार डाला जाता तो वही अच्छा था।
लेकिन तुम हम सभी को यहाँ भूखा मारने ले आए हो।" 4 तब
याहवे ने मूसा से कहा, "देखो, मैं तुम्हारे लिए आसमान से
खाने की चीज़ बरसाऊँगा। इन्हें बाहर जाकर हर दिन का ही
खाना इकट्ठा करना होगा। इसी से मैं उन्हें जाचूँगा कि वे मेरी
आज्ञाओं-नियमों को मानेंगे या नहीं। 5 हर छठवें दिन उन्हें
दुगना खाना मिलेगा जिसे उन्हें बटोरकर तैयार रखना होगा।"
6 तब मूसा और हारून इस्राएलियों से बोले कि शाम को वे
जान जाएँगे कि मिस्र के बाहर उन्हें निकाल लाने वाले याहवे
ही हैं। 7 सुबह-सवेरे उन्हें याहवे का तेज दिखाई देगा, क्योंकि
उन के बुड़बुड़ाने को याहवे ने सुना है उन दोनों पर बुड़बुड़ाना
बिल्कुल बेकार है। 8 फिर मूसा ने कहा, "यह तभी होगा जब
याहवे शाम को तुम्हें खाने के लिए मांस और प्रातःकाल मन
चाही रोटी देंगे। उन के विरोध में कुड़कुड़ाने को वह सुनते है,
हम क्या हैं? वास्तव में तुम उन के विरोध में यह बुराई कर रहे
हो।" 9 मूसा ने हारून से बोला, "इस्राएलियों को आज्ञा दो कि
वे सभी याहवे के सामने पेश हो, क्योंकि वो बुड़बुड़ाना सुन
चुके हैं।" 10 हारून जब यह इस्राएलियों से कह ही रहा था, कि
जंगल की ओर याहवे का तेज बादल में दिखा। 11 तब याहवे ने
मूसा से कहा, 12 "इस्राएलियों का बुड़बुड़ाना मैंने सुना है, उन
से कहो कि गोधूलि के समय तुम मांस खाओगे और सुबह-सवेरे
रोटी से तृप्त हो जाओगे। हाँ तुम यह भी जान जाओगे कि मैं
तुम्हारा परमेश्वर याहवे हूँ। 13 शाम के समय बटेरे आकर पूरी

छावनी पर बैठ गईं और सुबह छावनी के चारों ओर ओस गिरी। 14 ओस सूख जाने के बाद ज़मीन पर पाले के किनकों के समान छोटे-छोटे छिलके दिखाई दिए। 15 यह देखते ही इस्राएली बौखला उठे और कहा यह तो मन्ना है। तब मूसा का जवाब यह था कि यह खाने की वस्तु है और याहवे ने दी है। 16 याहवे की आज्ञा यह है कि तुम अपनी ज़रूरत के अनुसार खाने के लिए इकट्ठा किया करना। अपने घर के सदस्यों के अनुसार हर व्यक्ति के लिए एक ओमेर बटोरना। जिसके तम्बू में जितने हो वह उन्हीं के लिए बटोरे।" 17 और किसी ने ज़्यादा किसी ने कम उठाया। 18 ओमेंर से नापने पर जिसके पास अधिक था, उसके पास अधिक न रहा, जिसके पास कम था, उसे कुछ कमी भी नहीं हुई। ऐसा इसलिए क्योंकि हर एक इन्सान ने अपने खाने लायक ही बटोरा था। 19 इसके बाद मूसा ने उन्हें सबेरे तक रखने के लिए मना किया। 20 लेकिन ऐसे लोग भी थे, जिन्होंने मूसा की बात की परवाह नहीं की। जितने लोगों ने आवश्यकता से अधिक इकट्ठा किया, उसमें कीड़ पड़ गए और बदबू आने लगी। इसलिए मूसा को गुस्सा भी आया। 21 वे सुबह-सवेरे हर दिन अपनी ज़रूरत के अनुसार खाने के लिए बटोर लेते थे। धूप कड़ी होने पर वह गल जाता था। 22 छठवें दिन लोगों ने दोगुना (एक व्यक्ति के लिए दो हिस्से) बटोरा। यह बात उन के प्रधानो ने आकर मूसा को बता दी। 23 मूसा बोला, "हाँ याहवे ही की यह आज्ञा है, क्योंकि कल पवित्र विश्राम होगा। 24 मूसा के कहने के अनुसार जब लोगों ने दोगुना बटोरा, तो न उसमें बदबू आई और न कीड़े पड़े। 25 तब मूसा बोला, "आज उसी को खाओ, क्योंकि आज विश्राम दिन हैं; इसलिए तुम को मैदान में नहीं मिलेगा। 26 छः दिन तुम उसे बटोरोगे, लेकिन सातवाँ दिन आराम का है, उस दिन वह नही मिलेगा।" 27 इसके बावजूद कुछ लोग सातवें दिन भी बटोरने के लिए घर से बाहर गए, लेकिन उन्हें कुछ भी न मिला। 28 तब याहवे ने मूसा से कहा, "कब तक तुम लोग मेरी आज्ञाओं और व्यवस्था को नहीं मानोगे?" 29 देखो, याहवे ने तुम्हें सातवाँ दिन आराम के लिए दिया है, इसी कारण छठवें दिन तुम्हें दो दिन का खाना मिलता है। इसलिए तुम सभी सातवें दिन घर ही में रहना, बाहर मत जाना।" 30 लोगों ने ऐसा किया भी। 31 इस्राएलियों ने उसे दी जानेवाली वस्तु का नाम मन्ना रखा। वह धनिया की तरह सफेद था। उसका स्वाद शहद के बने हुए पूए का सा था। 32 फिर मूसा बोला, "याहवे का आदेश यह है कि ओमेंर (एक नाप) रख लो, जिससे अपने वंश की पीढ़ी-पीढ़ी को बता सको। तब वे जानेंगे, कि मिस्र से निकालकर जंगल में परमेश्वर कैसी रोटी खिलाते थे।" 33 तब मूसा ने हारून से बोला, "एक बर्तन लो और उस में ओमेर भर लेकर उसे याहवे के सामने रख दो ताकि वह तुम्हारी पीढ़ियों के लिए रखा रहे।" 34 याहवे के आदेश के मुताबिक हारून ने गवाही के सन्दूक के सामने रख दिया, ताकि वहीं रहे। 35 जब तक इस्राएली प्रतिज्ञा किए गए देश में न पहुँचे, तब तक (चालीस साल) तक मन्ना खाते रहे। कनान देश की सीमा तक पहुँचने तक उन्हें खाने के लिए मन्ना ही मिलता था। एक ओमेर एपा का दसवाँ भाग है।

17 1 फिर याहवे की आज्ञा के अनुकूल सीन नामक जंगल से निकलकर, रपीदीम पहुँचकर इन लोगों ने अपने तम्बू गाढ़ दिए। वहाँ पीने का पानी नहीं था। 2 इसलिए वे मूसा से बहसबाजी़ कर कहने लगे, "हमें पानी चाहिए।" मूसा बोल उठा, "तुम मुझ से झगड़ा करके याहवे को क्यों जाँच रहे हो?" 3 प्यास लगने पर वे मूसा पर बुड़बुड़ाकर कहने लगे, "हमारे बाल-बच्चों और जानवरो समेत, हमें मार डालने के लिए तुम मिस्र से क्यों ले आए हो?" 4 मूसा याहवे के सामने दोहाई देकर कहने लगा, "इनके साथ मैं करूँ क्या? ये मुझ पर पत्थर फेंकने को तैयार हैं।" 5 याहवे ने मूसा से कहा, "इस्राएल के कुछ बूढ़े लोगों में से कुछ को अपने साथ ले लो। जिस लाठी को तुम ने नील नदी पर मारा था, उसे अपने हाथ में लेकर लोगों के आगे चलते जाओ। 6 मैं तुम्हारे आगे चलकर होरेब पहाड़ की एक चट्टान पर खड़ा हो जाऊँगा। उस चट्टान पर तुम मारना। उसमें से जो पानी निकले, उसी से ये लोग अपनी प्यास बुझाएँ। मूसा ने ठीक वैसा ही किया। 7 उस जगह का नाम मूसा ने मस्सा मरीबा रख दिया, क्योंकि इस्राएलियों ने वहाँ वाद-विवाद किया था। "क्या याहवे हमारे बीच हैं या नहीं?" यह कहकर याहवे को वे वहाँ परख रहे थे। 8 तभी रपीदीम में अमालेकी आए और इस्राएलियों से लड़ने लगे। 9 तब मूसा ने यहोशू को कई पुरूषों को चुनने-छाँटने के लिए कहा। यह भी कि वे सब अमालेकियों से लड़े। मूसा बोला, "परमेश्वर की लाठी हाथ में लिए हुए मैं पहाड़ी की चोटी पर खड़ा रहूँगा।" 10 मूसा के इस आदेश को यहोशू ने माना और अमालेकियों से युद्ध करने लगा। मूसा और हारून हूर पहाड़ी पर बने रहे। 11 मूसा का हाथ जब तक उठा रहता था, तब तक इस्राएल जीत जाता था, लेकिन जब वह उसे नीचे करता था, तो जीत अमालेकियों की होती थी। 12 मूसा के थक जाने पर उन्हों ने एक पत्थर रखा, जिस पर मूसा बैठ गया। दोनों बाजू पर हारून और हूर उसके हाथों को सूरज ढलने तक सहारा देते रहे। 13 और यहोशू ने अनुचरों समेत अमालेकियों को तलवार की ताकत से हरा दिया। 14 तब याहवे ने मूसा से कहा, "यह बात सदा याद रहे, इसलिए लिख लो और यहोशू को बताओ कि आसमान के नीचे से मैं अमालेक का नामो-निशां मिटा डालूँगा। 15 तब मूसा ने एक वेदी बनाई और उसका नाम

'याहवे-निस्सी' रखा। उस ने कहा, "याहवे ने प्रण कर लिया है कि वह पीढ़ियों तक लड़ाई करते रहेंगे।"

18 1 मिद्यान के याजक और मूसा के ससुर यित्रों को
मालूम पड़ा कि परमेश्वर ने मूसा और अपनी प्रजा
इस्राएल के लिए क्या-क्या किया है (यह कि इस्राएलियों को
मिस्र की गुलामी से छुड़ाया है)। 2 वह अपनी बेटी और मूसा
की पत्नी सिप्पोरा को, जिसे पहले नैहर भेज दिया गया था
और दोनों बेटों को ले आया। 3 यह कहकर कि मैं अनजाने देश
में यात्री हुआ हूँ, मूसा ने एक बेटे का नाम गेर्शोन रखा। 4 दूसरे
का नाम उस ने एलीएजेर यह कहकर रखा, "मेरे पिता के
परमेश्वर ने फ़िरौन की तलवार से बचाकर मेरी मदद की।"
5 मूसा का ससुर यित्रो, मूसा की पत्नी और उसके बच्चों के साथ
जंगल में उस स्थान तक पहुँचा, जहाँ परमेश्वर के पहाड़ के
पास उसका डेरा था। 6 आते ही उस ने मूसा को समाचार भेजा
कि वह मूसा की पत्नी और बच्चों को उसके पास लाया है। 7 तब
मूसा भी उस से मिलने निकला और दण्डवत किया, आलिंगन
किया। आपस में एक दूसरे का हाल-चाल पूछते हुए वे डेरे तक
आ आए। 8 वहाँ मूसा ने उन सभी बातों का बखान किया जो
याहवे ने, इस्राएलियों के पक्ष में, फ़िरौन और मिस्रियों के
विरोध में किया। यह भी कि रास्ते में इस्राएलियों क्या-क्या
दुख झेले और याहवे किस तरह उन्हें छुड़ाते रहे। 9 इस्राएलियों
के साथ की गई भलाईयों और मिस्रियां की गुलामी से छुड़ाने
के समाचार को सुन यित्रो खुश होकर कहने लगा, 10 याहवे
की बड़ाई हो जिन्होंने तुम्हें फ़िरौन और मिस्रियों की गुलामी
से मुक्ति दी है। 11 मैंने अब जान लिया है कि याहवे सभी
देवताओं से बढ़कर हैं। 12 इसके बाद मूसा के ससुर यित्रो ने
परमेश्वर के लिए होमबलि और मेलबलि चढ़ाए। इस्राएलियों
के सभी बुजु़र्गों के साथ हारून, मूसा के ससुर यित्रों के संग
परमेश्वर के सामने खाना खाने आया। 13 अगले दिन लोगों के
झगड़े निपटाने (न्याय करने), मूसा सुबह से शाम तक व्यस्त
रहा। लोग उसके आस-पास दिन भर खड़े रहे। 14 यह सब
देखकर यित्रो ने मूसा से कहा कि इस तरह उसका अकेले ही
न्याय करना और लोगों का दिन भर खड़े रहना अच्छा नहीं
है। 15 मूसा बोला, "लोग पूछताछ करने मेरे पास आते हैं, मैं
करूँ क्या? 16 अपने मुकदमें को सुलझाने वे मेरे पास आते हैं
और मैं परमेश्वर की विधि और व्यवस्था समझाकर उनका
न्याय करता हूँ।" 17 यित्रो तुरन्त बोल उठा, "जो कुछ तुम कर
रहे हो, वह उचित नहीं है। 18 यह काम तुम्हारे अकेले के लिए
बहुत मुश्किल है। तुम और तुम्हारे लोग ज़रूर थक जाएँगे।"
19 मैं तुम्हें सलाह देता हूँ, मेरी सुनो परमेश्वर तुम्हारे संग
है। तुम इन लोगों के लिए परमेश्वर के पास जाकर इन के
मुकदमों को पेश किया करो। 20 विधि (कानून व्यवस्था) इन्हें
समझाकर सिखाओ कि इन्हें किस रास्ते पर चलना है, क्या
करना है। 21 साथ ही इन में से ऐसे लोगों को चुन लो जो गुणी,
परमेश्वर का भय मानने वाले, सच्चे और अन्याय के लाभ से
नफ़रत करने वाले हो फिर इन्हें भी हज़ार-हज़ार, सौ-सौ,
पचास-पचास और दस-दस लागों पर प्रधान नियुक्त कर दो।
22 ये ही लोग इन का न्याय करे, बड़े मुकदमों को तुम्हारे पास
लाएँ और मामूली मसलों (विवादों) को खुद ही निपटा दिया
करें। तब तुम्हारा बोझ हल्का हो जाएगा, क्योंकि वे तुम्हारा
भार बाँट लेंगे। 23 यदि तुम ऐसा करो और परमेश्वर तुम्हें ऐसी
आज्ञा दे, तो तुम ठहर सकोगे और ये सभी लोग अपने स्थान
कुशल से पहुँच जाएँगे। 24 मूसा ने अपने ससुर की यह बात
मानी और वैसा ही किया। 25 इसलिए उस ने चरित्रवान लोगों
को चुनकर हज़ार-हज़ार, सौ-सौ, पचास-पचास, दस-दस
लोगों के ऊपर प्रधान ठहराया। 26 वे लोग सब का न्याय करने
लगे। जो मुकदमा कठिन हुआ करता था, उसे वे मूसा के पास
लाया करते थे। छोटे मुकदमों को वे स्वयं देख लिया करते थे।
27 तब मूसा ने यित्रो को विदा किया और वह अपने देश की
ओर चल दिया।

19 1 जिस दिन इस्राएलियों को मिस्र से निकले हुए
तीन महिने बीते, उसी दिन वे सीनै नामक जंगल में
आए। 2 रपीदीम से निकलकर वही सीनै जंगल में ही उन्हों
ने अपने डेरे लगाए और पहाड़ के सामने छावनी डाली।
3 मूसा पहाड़ पर चढ गया जहाँ उस ने याहवे की आवाज़
सुनी, "याकूब के घराने यानि कि इस्राएलियों से यह कहो,
4 मिस्रियों के साथ मैंने क्या किया, यह तुम ने देख लिया
है। मैं तुम्हें मानो उकाब पक्षी के पंखों पर बैठाकर लाया हूँ।
5 इसलिए यदि तुम मेरी मानोगे और मेरी वाचा का पालन
करोगे, तो सभी लोगों में से तुम ही मेरी दौलत होगे। सारी
पृथ्वी मेरी है। 6 मेरी दृष्टि में तुम पुरोहितों (याजकों) का राज्य
और पवित्र राष्ट्र (जाति) ठहरोगे। यह सब तुम इस्राएलियों
से कहो।" 7 मूसा ने नीचे उतरने के बाद बुजु़र्गों (पुरनियों)
को बुलाकर यह सब कह डाला। 8 सभी मिलकर बोले, "हम
वह सब करेंगे जो याहवे चाहते हैं।" मूसा ने यह समाचार
याहवे को दे दिया। 9 तब याहवे ने मूसा से कहा, "सुनो, मैं
बादल के अँधेरे में होकर तुम्हारे पास आता हूँ, इसलिए कि
जब मैं तुम्हारे साथ बातचीत करूँ, तब वे भी सुनें और हमेशा
तुम पर विश्वास करें।" और मूसा ने याहवे से लोगों की बातों
का वर्णन किया। 10 तब याहवे ने मूसा को आज्ञा दी, "तुम
उन के पास जाकर उन्हें पवित्र करो और वे अपने कपड़े धो
लें। 11 तीसरे दिन तक के देखते सीनै पहाड़ पर उतर आएँगे।

12 लोगों के लिए तुम चारों और एक बाड़ा बांधकर उन से
कहना सावधान, कोई न तो पहाड़ पर चढ़े, न उसकी सीमा
को छुए, जिस ने पहाड़ को छुआ, वह मार डाला जाए। 13 कोई
उसको छुए तक नहीं और जो छुए, उस पर पत्थरवाह किया
जाए या तीर से मारा जाए चाहे वह इन्सान हो या जानवर।
किसी तरह से वह ज़िन्दा न बचे। नरसिंगे की ऊँची आवाज़
देर तक सुनाई दिए जाने पर लोग पहाड़ के पास आ जाएँ।
14 तब मूसा पहाड़ से उतरा और लोगों के पास आकर उन्हें
पवित्र कराया, लोगों ने अपने कपड़े धो लिए। 15 लोगों से
उस ने कहा, "तीसरे दिन तक तैयार हो जाओ, पत्नी के पास
न जाना।" 16 तीसरे दिन के आने पर सुबह होते ही बादल
गरजा और बिजली चमकी और पहाड़ पर काली घटा छा गई
और नरसिंगे की जोरदार आवाज़ आई। छावनी के सभी लोग
काँप उठे। 17 लोगों की भेंट परमेश्वर से करवाने के लिए मूसा,
छावनी से निकाल ले गया। वे सभी पहाड़ के नीचे खड़े थे।
18 याहवे आग में होकर सीनै पहाड़ पर उतरे थे इसलिए पूरा
पहाड़ धुएँ से भर गया। उसका धुआँ भट्टे का सा था और पूरा
पहाड़ बहुत काँप रहा था। 19 नरसिंगे की आवाज़ जो़रदार
और भारी होने के बाद मूसा बोला और परमेश्वर ने उसको
जवाब दिया। 20 सीनै पहाड़ की चोटी पर याहवे उतरे और
मूसा को चोटी पर बुलाया और मूसा ऊपर चढ़ गया। 21 तब
याहवे ने मूसा से कहा, "नीचे जाओ और लोगों को चेतावनी
दो, कही ऐसा न हो कि वे बाड़ा तोड़ के देखने के लिए पास
आएँ और नष्ट हो जाएँ। 22 याहवे के पास आनेवाले पुरोहित
भी अपने आपको पवित्र करें, कहीं ऐसा न हो कि याहवे उन
लोगों को मारें।" मूसा ने उत्तर दिया, "कि लोग सीनै पहाड़
पर चढ़ नहीं पाएँगे, क्योंकि आप ने हमें बाड़ा बाँधकर पवित्र
रखने के लिए चेतावनी दे रखी है। 24 उतर जाओ और हारून
के साथ ऊपर आओ। पुरोहित और जनसाधारण बाढ़ा तोड़कर
चढ़ न पाएँ, क्योंकि ऐसा होने पर परमेश्वर का क्रोध भड़क
सकता है। यह सब कुछ मूसा ने लोगों को बता दिया।

20 1 तब परमेश्वर ने ये सब वचन कहें, 2 मैं तुम्हारा
परमेश्वर याहवे हूं जो तुम्हें गुलामी के घर अर्थात्
मिस्र देश से निकाल लाया हूँ। 3 मुझे छोड़ किसी दूसरें को
ईश्वर करके न मानना। 4 तुम अपने लिए खोदकर कोई मूर्ति
न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आसमान में या
पृथ्वी पर, या पृथ्वी के जल में है। 5 तुम उन के सामने घुटने
मत टेकना, न उनकी पूजा करना, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर
याहवे ईष्या करने वाला परमेश्वर हूँ। जो मुझ से दुश्मनी
रखते हैं, उन के बेटों, पोतों, परपोतों और पितरों को भी दण्ड
देता हूँ। 6 जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी बातों को मानते है,
उन हज़ारों पर तरस किया करता हूँ। 7 "तुम अपने परमेश्वर
का नाम बेकार में मत लेना, क्योंकि जो याहवे का नाम बेकार
ले वह उसको निर्दोष न ठहरें। 8 तुम विश्राम दिन को पवित्र
(अलग) मानने के लिए याद रखना। 9 छै दिन तुम मेहनत
करके सारह काम करना। 10 सातवाँ दिन तुम्हारे परमेश्वर
याहवे के लिए विश्राम दिन है। उसमें न तो किसी तरह का
काम करना, न तुम्हारा बेटा, बेटी, दास, दासी, तुम्हारे पशु,
न कोई परदेशी जो तुम्हारे फा़टकों के अन्दर हो। 11 क्योंकि
छह दिन में याहवे ने आकाश, पृथ्वी, समुद्र और जो कुछ उसमें
है, वह सब बनाया। सातवें दिन कुछ न बनाया। इस कारण
याहवे ने सातवें दिन को दूसरे सभी दिनों से अलग ठहराया।
12 "तुम अपने पिताजी और अपनी माँ जी का आदर करना,
जिससे जो देश तुम्हारे परमेश्वर याहवे तुम्हें देते हैं, उसमें
तुम बहुत दिन तक रहने पाओ। 13 तुम किसी की जान मत
लेना। 14 व्यभिचार न करना। 15 चोरी न करना। 16 किसी
के खिलाफ़ झूठी गवाही मत देना। 17 किसी के घर, पत्नी,
दास-दासी (नौकरों), मवेशी या किसी की कोई चीज का
लालच मत करना। 18 सभी लोग गर्जन, बिजली और नरसिंगे
की आवाज़ सुनते, धुआँ उठते पहाड़ को देखते, काँपते हुए दूर
खड़े रहे। 19 वे मूसा से कहने लगे, "तुम ही हम से बातें करो,
तभी हम सुन पाएँगे। परमेश्वर हम से न बोलें, ऐसा न हो कि
हम मर जाएँ। 20 मूसा ने लोगों से कहा, "मत डरो, क्योंकि
परमेश्वर इसलिए आए हैं कि तुम्हें जाँचे और उनका डर
तुम्हारे मन में बना रहे कि तुम पाप न करो।" 21 वे लोग दूर ही
खड़े रहे, लेकिन मूसा और भयानक अँधेरे के पास गया, जहाँ
परमेश्वर थे। 22 तब याहवे ने मूसा से कहा, "तुम इस्त्राएलियों
को मेरे ये वचन सुनाओ, खुद तुम लोगों ने देखा है कि मैंने
आसमान (आकाश) से तुम से बातें की हैं। 23 किसी और को
जैसे सोने या चाँदी के देवताओं को मेरे साथ मिला मत लेना।
24 मिट्टी की एक वेदी बनाकर अपनी भेड-बकरियाँ, गाय-बैलों
के होमबलि और मेलबलि को उस पर चढ़ाना जहाँ-जहाँ मैं
अपने नाम की याद कराऊँ, वहाँ-वहाँ मैं आकर तुम्हें आशीष
दूँगा। 25 यदि तुम मेरे लिए पत्थर की वेदी बनाना चाहो, तो
वे तराशे हुए नहीं होने चाहिए। इसलिए कि हथियार का
इस्तेमाल करने से वह अशुद्ध हो जाएगी। 26 वेदी पर चढ़ते
समय सीढी़ का उपयोग कभी मत करना, कहीं ऐसा न हो
कि तुम्हारी देह उस पर नंगी दिखे।

21 1 नियम, जिन्हें समझाया जाना ज़रूरी हैं ये है,
2 किसी भी इब्री दास को यदि खरीदा जाए तो वह
छह साल तक सेवा करता रहे और सातवें साल आजाद होकर
यों ही चला जाए। 3 यदि वह अकेला आया था, तो कोई बात

नही, लेकिन यदि उसके साथ उसकी पत्नी भी थी, तो उसकी पत्नी भी उसके साथ जाए। 4 यदि उसके मालिक ने उसे पत्नी दी हो और उस से सन्तान हो, तो पत्नी और बच्चे स्वामी के ही रहें और वह अकेला चला जाए। 5 लेकिन यदि वह दास जो़र ड़ालकर कहे, "मैं अपने मालिक, पत्नी और बच्चों से प्रेम करता हूँ इसलिए मैं आजा़द होकर जाना नहीं चाहता। 6 तब उसका मालिक उसे परमेश्वर को उपस्थित जानकर दरवाजे़ के बाजू के पास ले जाकर उसके कान में सुतारी से छेद करे और तब से वह सदा स्वामी की सेवा करता रहे। 7 "यदि कोई अपनी बेटी को दासी होने के लिए बेच दे, तो वह दासी की तरह बाहर न जाए। 8 यदि उसका स्वामी उसको अपनी पत्नी बनाए और उसमें खुश न रहे, तो वह उसे मूल्य से छुड़ाई जाने दे। उसका विश्वासघात करने के बाद उसे विदेशी लोगों के हाथ बेचने का उसे अधिकार न होगा। 9 यदि उस ने उसका अपने बेटे से विवाह कर दिया हो, तो उस से बेटी का सा बर्ताव करे। 10 चाहे वह दूसरी पत्नी कर भी ले, तौभी वह उसका खाना, कपडे़ और संगति कम न करे। 11 यदि वह ऐसा करता है तो वह महिला बिना दाम चुकाए ही चली जाए। 12 "जो व्यक्ति किसी को ऐसा मारे कि वह मर जाए तो उसे भी मार दिया जाए। 13 यदि वह उसका खून करने की ताक में न रहा हो और परमेश्वर की इच्छा ही से वह उसके हाथ में पड़ गया हो, तो ऐसे मारने वाले के भागने के लिए मैं एक जगह निश्चित करूँगा, जहाँ वह भाग जाए। 14 लेकिन ज़िद्द में आकर यदि कोई किसी का चालाकी से खून करें, तो उसको मार डालने के लिए मेरी वेदी के पास से भी अलग ले जाना। 15 "जो अपने माता-पिता को मारे-पीटे, उसे मृत्युदण्ड मिले। 16 मनुष्य को चुराने और बेच देने वाले को मौत की सज़ा मिले, चाहे चुराया व्यक्ति बरामद हो या न हो। 17 जो इन्सान अपने पिता या माँ को श्राप दे, उसे भी मौत की सज़ा़ दी जाए। 18 झगड़े में पत्थर या मुक्के की मार से यदि कोई बिछौना पकड़ ले। 19 तो लाठी के सहारे उसके चल सकने पर मारनेवाला सज़ा का भागीदार न हो। उसके बिस्तर पर पड़े रहने तक के समय के नुकसान की भरपाई वह करे और उसका इलाज भी। 20 "किसी गुलाम (दास या दासी) की पिटाई करने से यदि वह मर जाए, तो मालिक को सज़ा मिले। 21 लेकिन अगर वह दो दिन तक ज़िन्दा रहता है, तो मालिक को सज़ा न दी जाए, क्योंकि वह गुलाम ही उसकी दौलत है। 22 यदि लोगों की आपसी मारपीट में कोई गर्भवती के चोट लगने पर, उसका गर्भ गिर जाए, लेकिन कोई और नुकसान न हो तो मारने वाले से उतनी राशि दण्ड स्वरूप ली जाए, जितना उसका पति, पंच की सलाह से माँगे। 23 किन्तु यदि उसको कुछ और हानि पहुँचे, तो प्राण के बदले, प्राण 24 आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ, पाँव के बदले पाँव; 25 दाग के बदले दाग, घाव के बदले घाव और मार के बदले मार की सज़ा़ हो। 26 जब कोई अपने दास या दासी की आँख पर ऐसा मारे कि फूट जाए, तो वह उसकी आँख के बदले उसे आजा़द कर दे और जाने दे।

22 1 यदि कोई व्यक्ति बैल, भेड़ या बकरी चुराकर उसे मार डाले या बेच दे, तो वह बैल के बदले पाँच बैल, भेड़-बकरी के बदले चार भेड़-बकरी भर दे। 2 अगर सेंध लगाते समय एक चोर पकड़ा जाता है, पिटाई होती है और वह मर जाता है, तो उसके खून का दोष नहीं लगेगा। 3 हाँ यदि दिन निकल चुका है, तो उसके खून का दोष लगे। यह ज़रूरी है कि वह हानि भरपाई कर दे। यदि उसके पास कुछ न हो, तो वह चोरी के कारण बेच दिया जाए। 4 यदि चुराया हुआ बैल या गदहा या भेड़ या बकरी उसके पास मिले, तो वह उसका दोगुना भर दे। 5 यदि कोई जन अपने जानवर से किसी दूसरे का खेत या अंगूर का बगीचा चराए, तो वह अपने खेत की या अपने बगीचे की उत्तम से उत्तम उपज में से उसकी हानि भर दे। 6 यदि कोई आग जलाए और काँटों में लगने के अलावा फूलों के ढेर या अनाज या खड़े खेत में लग जाए, तो वह नुकसान की भरपाई कर दे। 7 यदि कोई दूसरे के पास धन या सामान की धरोहर धरे और वहाँ से चोरी हो जाए, तो चोर के पकड़े जाने पर उसे दूना-भरना पड़े। 8 यदि चोर पकड़ा नहीं जाता है, तो घर का स्वामी परमेश्वर के सम्मुख लाया जाए ताकि यह पुष्ट हो जाए कि उस ने अपने भाई बंधु की दौलत पर हाथ लगाया है या नहीं। 9 हर तरह के अपराध चाहे वह बैल, गधों, भेड़, कपड़े या किसी और खोई वस्तु के बारे में हैं, जिसके बारे में कोई और दावा करता है, दोनों पक्ष न्यायी (जज) के सामने आएँ। जिस व्यक्ति को न्यायी दोषी ठहराता है, वह दूसरे व्यक्ति को दोगुना दण्ड भर दे। 10 यदि किसी के पास गदहा, बैल, भेड़-बकरी या कोई और पशु रखने के लिए सौंपा गया हो और मर जाने, चोट खाने या हाँके जाने को किसी ने न देखा हो। 11 तो उन दोनों के बीच यह प्रतिज्ञा (कसम) हो, "मैंने इसकी संपत्ति पर हाथ नहीं लगाया।" तब संपत्ति का स्वामी इसे सत्य मान ले और दूसरे को उसे कुछ भी कर भर देना नहीं होगा। 12 यदि वह सचमुच उसके यहाँ से चुराया गया हो, तो वह उसके स्वामी को उसे भर दे। 13 यदि वह फाड़ डाला गया हो, तो सबूत लेकर आए ताकि उसकी भरपाई हो। 14 यदि कोई दूसरे से पशु माँग लाए और उसके स्वामी के संग न रहते उसको चोट लगे या वह मर जाए तो वह हानि ज़रूर भर दे। 15 यदि उसका मालिक साथ में हो तो दूसरे को उसके नुकसान की भरपाई नही करनी पड़ेगी और यदि वह किराए का हो तो उसकी हानि उसके

किराए में आ गई। 16 यदि कोई पुरूष किसी कन्या को जिसके
विवाह की बात न लगी हो, फुसलाए और कुकर्म करे, तो वह
उसकी कीमत(वधूमूल्य) देकर उस से विवाह कर ले। 17 लेकिन
यदि उसका पिता उसे देने से मना करे, तो कुकर्म करनेवाला
कन्याओं के मोल की प्रथा के अनुसार कीमत दे। 18 जादू-टोना
करने वाला को जीवित न रहने दिया जाए। 19 पशुगमन करने
वाले को जान से मार डाला जाए। 20 याहवे को छोड़कर
किसी ओर देवता के लिए बलिदान चढ़ाने वाले को बर्बाद
किया जाए। 21 न ही परदेशी को सताना न उस पर अंधेर
करना, क्योंकि एक समय था जब तुम भी मिस्र में परदेशी
थे। 22 विधवा या अनाथ बच्चे को परेशान मत करना। 23 यदि
तुम ऐसों को पीड़ा दो और वे मुझे पुकारें, तो मैं ज़रूर उनकी
सुनूँगा। तब मेरा क्रोध भड़क उठेगा और मैं तुम्हें तलवार
से मरवाऊँगा और तुम्हारी पत्नियाँ विधवा और तुम्हारी
औलाद अनाथ हो जाएँगे। 25 मेरी प्रजा के किसी गरीब व्यक्ति
को यदि तुम उधार दो तो महाजन की तरह उस से ब्याज
मत लेना। 26 यदि तुम अपने भाई-बंधु के कपड़ों को गिरवी
(बंधक) करके रख भी लो तो शाम होने तक उसे लौटा देना।
27 क्योंकि वह उसका एक ही ओढ़ना है। यदि उसके पास एक
ही ओढ़नी हो तो वह रात में ओढ़ेगा क्या? जब वह मेरे सामने
गिड़गिड़ाएगा, मैं उसकी सुन लूँगा, क्योंकि मैं तरस खाने
वाला हूँ। 28 न ही परमेश्वर (या जजों) को बुरा कहना, न ही
अपने ऊपर के अधिकारियों को। 29 अपने खेतों की उपज और
फलों के रस में से कुछ मुझे (मेरे नाम से) देने में देर न करना।
अपने पहलौठों को मेरे नाम से अलग करना। 30 अपनी गायों
और भेड़-बकरियों के पहलौठों को भी मेरे लिए अलग करना।
अपनी माँ के साथ बच्चा सात दिन तक रहे, आठवें दिन तुम
उसे मुझको दे देना। 31 मेरी खातिर तुम पवित्र रहना मैदान में
फाड़े हुए पशु का गोश्त न खाना, उसे कुत्तों को खिला देना।

23 1 झूठी बात मत फैलाना। अन्यायी गवाह बनकर
दुष्ट व्यक्ति का साथ मत देना। 2 किसी भी बुराई
को करने के लिए बहुत से लोगों के पीछे न जाना और न
मुकदमें में न्याय बिगाड़ने के लिए साक्षी देना। 3 किसी गरीब
के मुकदमें में उसकी भी तरफ़दारी न करना। 4 यदि तुम्हारे
दुश्मन का बैल या गदहा भटकता हुआ तुम्हें मिल जाए, तो
उसके यहाँ तक पहुँचा देना। 5 यदि तुम अपने दुश्मन के गदहे
को बोझ से दबा देखो, तो चाहे तुम्हारे मालिक के लिए छुड़ाने
को तुम्हारा मन न भी चाहे, तौभी मालिक का साथ देकर
उसे आजाद करा लेना। 6 तुम्हारे बीच रहने वाले गरीबों के
मुकदमें की न्याय-प्रक्रिया में अड़ंगा न डालना। 7 झूठे मुकदमें
से बचे रहना और निरपराध तथा खरे व्यक्ति का खून मत
करना, क्योंकि मैं दुष्ट को निर्दोष न ठहराऊँगा। 8 घूस न लेना
क्योंकि घूस देखने वालों को भी अंधा कर देती है और भले
लोगों की बातें (पक्ष) उलट देती है। 9 परदेशी पर अत्याचार
(अंधेर) न करना, क्योंकि तुम भी मिस्र देश में परदेशी थे
और तुम परदेशी के मन के सोच-विचार को समझ सकते हो।
10 छह वर्ष अपनी ज़मीन में बोना और उसकी उपज इकट्ठा
करना। 11 लेकिन सातवें साल में उसे यों ही पड़े रहने देना।
ऐसा करने पर तुम्हारे गरीब भाई-बंधु लोग उसमें से खा
सकेंगे। फिर भी जो कुछ बच जाए वह बनैले जानवर खा सकें।
ऐसा ही अंगूर और जैतून के बगीचों के साथ करना। 12 छह
दिन अपना कामकाज करना और सातवे दिन आराम। ऐसा
करने से तुम्हारे बैल और गदहे राहत पाएँगे और तुम्हारी
दासियों के बच्चे और परदेशी भी। 13 जो कुछ मैंने तुम से कहा
है, उसमें सावधानी बरतना। तुम दूसरे देवताओं के बारे में मुँह
से चर्चा तक न करना। 14 हर साल तीन बार मेरे लिए त्यौहार
मानना। 15 अबीब महीने के निश्चित समय पर अखमीरी रोटी
सात दिन खाकर अखमीरी रोटी का पर्व मनाना। इसी महीने
में तुम मिस्र की गुलामी से छूटे थे। कोई खाली हाथ ऐसे
समय में मेरी उपस्थिति में न आए। 16 तुम्हारे बोये हुए खेत
की पहली फ़सल से कटनी का पर्व मनाना। साल के अन्त में
जब तुम अपनी मेहनत के फल बटोरो, तो बटोरन का पर्व
मनाना। 17 हर वर्ष तीन बार तुम्हारे सारे पुरूष प्रभु याहवे को
अपना मुँह दिखाएँ। 18 मेरे बलिपशु का खून खमीरी रोटी के
साथ मत चढ़ाना। मेरे पर्व के उत्तम बलिदान में से प्रातः काल
तक कुछ मत रहने देना। 19 अपनी ज़मीन की पहली उपज
का पहला हिस्सा अपने परमेश्वर याहवे के भवन में लाना।
बकरी का बच्चा उसकी माँ के दूध में न पकाना। 20 सुनो,
मैं एक दूत तुम्हारे आगे-आगे भेजूँगा, वही रास्ते में तुम्हारी
रक्षा करेगा। जिस स्थान को मैंने तैयार किया है, वह तुम्हें
वहाँ तक पहुँचाएगा। 21 उसके सामने तुम सावधान रहना,
उसकी मानना, विरोध मत करना। वह तुम्हारा अपराध क्षमा
न करेगा, क्योंकि उसमें मेरा नाम होगा। 22 यदि तुम दिल
से उसकी मानो और मेरे कहने अनुसार करो तो मैं तुम्हारे
दुश्मनों का दुश्मन और द्रोहियों का द्रोही बन जाऊँगा। 23 इस
तरह मेरा दूत तुम्हारे आगे-आगे चलकर तुम्हें एमोरी, हित्ती,
परिज्जी, कनानी, हिब्बी और यबूसी लोगों के यहाँ पहुँचाएगा
और मैं उन्हें बर्बाद कर डालूँगा। 24 उन के देवताओं के सामने
मत झुकना, न ही उनकी पूजा करना। उन के समान काम मत
करना। मूरतों को पूरी तरह से सत्यानाश कर देना। उन लोगों
की लाटों टुकड़े-टुकड़े कर देना। 25 तुम अपने परमेश्वर याहवे
की आराधना करना, तब वह तुम्हारे अनाज पानी पर आशीष
देंगे और तुम्हारे बीच में से बीमारी को दूर करेंगे। 26 तुम्हारे

देश में न किसी का गर्भ गिरेगा, न कोई बाँझ रहेगा। तुम पूरी
उम्र तक जीओगे। 27 जिन लोगों के बीच तुम जाओगे, मैं उन
सभी के मन में अपना डर पहले ही से समवा दूँगा, कि वे
व्याकुल हो जाएँगे। तुम्हारे शत्रु तुम्हें अपनी पीठ दिखाएँगे।
28 मैं तुम से पहले बर्रों को भेजूँगा, जो हिब्बी, कनानी और
हित्ती लोगों को तुम्हारे से भगाकर दूर कर देंगी। 29 मैं उन
को तुम्हारे आगे से एक साल में नही निकालूँगा, ऐसा न हो
कि देश उजड़ जाए और बनैले पशु संख्या में बढ़कर तुम्हें
परेशान करने लगें। 30 जब तक तुम फूल-फलकर देश को
अपने अधिकार में न कर लो तब तक मैं उन्हें तुम्हारे आगे से
थोड़ा-थोड़ा कर के निकालता रहूँगा। 31 लाल समुद्र से लेकर
मैं पलिश्तियों के समुद्र तक और जंगल से महानद तक के देश
को तुम्हारे नियन्त्रण में कर दूँगा। उस देश के रहने वालों को
भी मैं तुम्हारे वश में कर दूँगा। तुम उन्हें अपने सामने से जोर
लगाकर निकालोगे। 32 तुम न उनसे न उन के देवताओं से
वाचा बान्धना। 33 वे तुम्हारे देश में न रहने पाएँ, कहीं ऐसा न
हो कि वे तुम से मेरे विरोध में पाप करवाएँ। यदि तुम उन के
देवताओं की उपासना करो, तो यह तुम्हारे लिए फन्दा बनेगा।

24 1 फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा, "तुम हारून,
नादान, अबीहू और इस्राएलियों से सत्तर बुज़ुर्गों
के साथ ऊपर मेरी उपस्थिति में आकर दूर से दण्डवत करना।
2 केवल मूसा याहवे परमेश्वर के पास आए, लेकिन वे न
आएँ। दूसरे सभी लोग तो उसके संग ऊपर भी न आएँ। 3 नीचे
उतरकर मूसा ने याहवे की कही सभी बातों और नियमों को
बता दिया। तभी सब लोग एक आवाज़ में बोल उठे, "याहवे
की कही सभी बातों को हम मानेंगे।" 4 तब मूसा ने याहवे की
कही बातों को लिख डाला। भोर को उठकर उस ने पहाड़ के
नीचे इस्राएल के बारह गोत्रों (कबीलों) के अनुसार बारह
खम्बे बनवाए। 5 तब उस ने याहवे के लिए होमबलि और बैलों
के मेलबलि चढ़ाने के लिए नवजवानों को भेजा। 6 मूसा ने खून
के आधे हिस्से को कटोरों में रख दिया और आधा वेदी पर
छिड़क दिया। 7 उसके बाद उस ने वाचा की किताब को लेकर
लोगों को पढ़कर सुनाया। वह सब सुनकर वे सभी बोल उठे,
"याहवे ने जो कुछ करने के लिए कहा, हम अवश्य करेंगे।"
8 तब मूसा ने खून को लोगों पर छिड़क दिया और कहा,
"देखो, यह उस वाचा का खून है, जिसे याहवे ने इन सभी
वचनों पर तुम्हारे साथ बाँधी है।" 9 तब मूसा, हारून, नादाब,
अबीहू और इस्राएलियों के सत्तर बुज़ुर्ग ऊपर गए। 10 उन्हों
ने इस्राएल के परमेश्वर याहवे की उपस्थिति (दर्शन) का
अनुभव किया। वहाँ नीलमणि का सा चबूतर उन्हें परमेश्वर
के कदमों पर दिखाई दिया, जो नीले आसमान की तरह था।
11 परमेश्वर ने इस्राएलियों के प्रधानों पर हाथ न बढ़ाया।
उन्हें भी परमेश्वर का दर्शन हुआ और भोजन आदि किया।
12 याहवे ने मूसा से कहा, "पहाड़ पर मेरे पास आकर रहो
और मैं तुम्हें पत्थर की पटियाएँ तथा लिखी हुई व्यवस्था और
आज्ञा दूँगा ताकि तुम उन्हें सिखाओ। 13 तब मूसा यहोशू के
साथ पहाड़ पर चढ़ गया। 14 बुज़ुर्ग अगुवों से वह यह कह
गया, "जब तक हम तुम्हारे पास वापस न आएँ, इन्तज़ार करते
रहना। हाँ, हारून और हूर जो तुम्हारे साथ हैं; वहीं किसी
मुकदमें के उठ जाने पर निबटारा करें।" 15 तभी मूसा पहाड़
पर चढ़ गया और बादल ने पहाड़ को ढाँक लिया। 16 तब
याहवे का तेज, सीनै पहाड़ पर ठहरा रहा और वह बादल उस
पर छैः दिन तक छाया रहा। सातवें दिन याहवे ने मूसा को
बादल के बीच में से पुकारा 17 पहाड़ के ऊपर परमेश्वर की
उपस्थिति (महिमा) तेज आग की तरह दिखती थी। 18 इसके
बाद मूसा पर्वत पर चालीस दिन-रात बना रहा। 19 तब मूसा
बादल के बीच में गया और पहाड़ पर चढ़ गया। मूसा वहाँ
पहाड़ पर चालीस दिन-चालीस रात रहा।

25 1 याहवे ने मूसा से कहा, 2 "इस्राएलियों को बताओ
कि मेरे लिए भेट लाएँ। जो लोग अपने मन से देना
चाहें, केवल उन्हीं से लेना। 3 भेंट ली जाने वाली वस्तुएँ ये हैं :
सोना, चाँदी, पीतल, 4 नीला, बैजनी और लाल रंग का कपड़ा,
बारीक सन का कपड़ा, बकरी का बाल 5 लाल रंग से रंगी
मेंढ़ों की खालें सुइसों की खालें, बबूल की लकड़ी 6 रोशनी के
लिए तेल, अभिषेक के तेल के लिए और खुशबूदार धूप के लिए
खुशबूदार वस्तुएँ, 7 एपोद और चपरास के लिए सुलैमानी
पत्थर और जड़ने के लिए मणि। 8 वे मेरे लिए एक पवित्रस्थान
बनाएँ ताकि मैं उन के मध्य रहा करूँ। 9 निवासस्थान का
जैसा नमूना मैं दिखाता हूँ, वैसा ही तुम बनाना। 10 बबूल की
लकड़ी का एक सन्दूक बनाया जाए, जिसकी लम्बाई ढाई
हाथ, चौड़ाई और ऊँचाई डेढ़-डेढ़ हाथ की हो। 11 भीतर और
बाहर उसे सोने से मढ़वाना। सन्दूक के ऊपर चारों तरफ़
सोने की बाड़ बनवाना। 12 सोने के चार कड़े बनवाकर उसके
चारों पायों पर, एक और दो कडे और दूसरी ओर भी दो
कड़े लगवाना। 13 बबूल की लकड़ी के डण्डे बनवाकर उसे
सोने से मढ़वाना। 14 डण्डों को सन्दूक की दोनों तरफ़ के
कड़ों में डालना जिससे उन के सहारे सन्दूक उठाया जा सके।
15 ये डण्डे सन्दूक के कड़ों में लगे रहे और उस से अलग न
किए जाएँ। 16 जो साक्षीपत्र मैं तुम्हें दूँगा, उसे उसी सन्दूक
में रखना। 17 फिर विशुद्ध सोने का एक प्रायश्चित का ढकना
बनवाना। उसकी लम्बाई ढाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की
हो। 18 सोना ढालकर दो करूब बनवाकर प्रायश्चित के ढकवन

के दोनों सिरों पर लगवाना। 19 एक करूब एक सिरे पर,
दूसरा दूसरे सिरे पर लगवाना। करूबों और प्रायश्चित के ढकने
को एक ही टुकड़े से बनवाकर उसके दोनों सिरों पर लगवाना।
20 उन करूबों के पंख ऊपर से ऐसे फैले हुए बने, कि प्रायश्चित
का ढक्कन उन से ढपा रहे और उन के चेहरे आमने-सामने
और प्रायश्चित के ढकने की ओर रहें। 21 प्रायश्चित के ढक्कन
का सन्दूक के ऊपर लगवाना और जो साक्षीपत्र मैं तुम्हें दूँगा
उसे सन्दूक के अन्दर रखना। 22 मैं उसके ऊपर रहकर तुम से
मिला करूँगा और इस्राएलियों के लिए जितनी आज्ञाएँ मुझ
को तुम्हें देनी होंगी, उन सब के बारे मैं प्रायश्चित के ढकने के
ऊपर से और उन करूबों के बीच में से, जो साक्षीपत्र के सन्दूक
पर होंगे, तुम से बातचीत किया करूँगा। 23 फिर बबूल की
लकड़ी की एक मेंज बनवाना। उसकी लम्बाई दो हाथ, चौड़ाई
एक हाथ और ऊँचाई डेढ़ हाथ की हो। 24 उसे शुद्ध सोने से
मढ़वाना और उसके चारों ओर सोने की एक बाड़ बनवाना।
25 उसके चारों तरफ़ चार अंगुल चौड़ी एक पटरी बनवाना।
इस पटरी के चारों ओर सोने की एक बाड़ बनवाना। 26 सोने
के चार कड़े बनवाकर मेंज के उन चारो कोनों में लगवाना, जो
उसके चारों पायों में होंगे। 27 वे कड़े पटरी के पास ही हों और
डण्डों को सम्भालने वाले हों, ताकि मेंज उन्हीं के बल उठाई
जा सके। 28 डण्डों को बबूल की लकड़ी से बनवाकर सोने से
मढ़वाना और मेंज भी उन्हीं से उठाई जाए। 29 उसके परात
धूपदान, चम्मच और उण्डेलने के कटोरे, सभी चोखे सोने से
बनवाना। मेंज पर मेरे सामने भेंट की रोटियाँ हर दिन रखा
करना। 31 फिर शुद्ध सोना ढलवाकर एक दीवट, पाये और
डण्डी बनवाई जाए। उसके पुष्पकोष, गाँठ और फूल, सभी
एक ही टुकड़े के बने हों। 32 उसके किनारों से छः डालियाँ
निकलें। तीन डालियाँ दीवट के एक ओर से और तीन उसके
दूसरी ओर से निकली हुई हों। 33 एक -एक डाली में बादाम
के फूल की तरह तीन-तीन पुष्पकोष, एक-एक गाँठ और
एक-एक फूल हों। दीवट से निकली हुई छहों डालियों का यही
आकार या रूप हो। 34 दीवट की डण्डी में बादाम के फूल के
समान चार पुष्पकोष अपनी-अपनी गाँठ और फूल सहित हों।
35 दीवट से निकली हुई छहों डालियों में से दो-दो डालियों
के नीचे एक-एक गाँठ हो, वे दीवट सहित एक ही टुकड़े के
बने हुए हों। 36 उनकी गाँठें और डालियाँ सभी दीवट सहित
एक ही टुकड़े की हों। शुद्ध सोने को ढलवाकर पूरी दीवट एक
ही टुकड़े की बनवाना। 37 सात दीपक बनाए जाएँ और उन्हें
जलाया जाए, ताकि दीवट के सामने रोशनी हो। 38 गुलतराश
और गुलदान सभी शुद्ध सोने के हों। 39 वह सब इन सभी
सामान सहित किक्कार भर सोने का बने। 40 बड़ी सोच-समझ
से इन वस्तुओं को दिए गए नमूने के अनुसार बनाया जाए, जो
तुम्हें इस पहाड़ पर दिखाया गया है।

26 1 फिर निवासस्थान के लिए दस परदे बनवाना। इन्हें
बटी हुई रानी वाले और नीले, बैंजनी और लाल रंग
के कपड़े की कढ़ाई के काम किए हुए करूबों के साथ बनवाना।
2 हर एक परदे की लम्बाई अट्ठाइस हाथ और चौड़ाई चार
हाथ की हों। सभी परदे एक ही नाप के हों। 3 पाँच परदे एक
दूसरे से जुड़े हुए हों। बाकी पाँच परदे भी एक दूसरे से जुड़े
हुए हों। 4 जिस जगह पर ये दोनों परदे जोड़े जाएँ, वहाँ के
दोनों छोरों पर नीले-नीले फन्दे लगवाना। 5 दोनों छोरों में
पचास-पचास फन्दे ऐसे लगवाना कि वे आमने-सामने हों।
6 सोने के पचास अंकड़े बनवाना और परदों के पंचो को आंकड़ों
के द्वारा एक-दूसरे ऐसा जुड़वाना कि निवास स्थान मिलकर
एक हो जाए। 7 फिर निवास के ऊपर तम्बू का काम देने के
लिए बकरी के बाल के ग्यारह परदे बनवाना। 8 एक-एक परदे
की लम्बाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हो। सभी
ग्यारह परदों का नाप एक सा हो। 9 और पाँच परदे अलग और
छैः परदे अलग जुड़वाना और छठवे परदे को तम्बू के सामने
मोड़ कर दोहरा कर देना। 10 तुम पचास अंकड़े उस परदे के
छोर में जो बाहर से मिलाया जाएगा और पचास ही अंकड़े
दूसरी ओर के परदे की छोर में जो बाहर से मिलाया जाएगा,
बनवाना। 11 पीतल के पचास अंकड़े बनाना और अंकड़ो को
फन्दों में लगाकर तम्बू को ऐसा जुड़वाना कि वह मिलकर एक
हो जाए। 12 तम्बू के परदों का लटका हुआ हिस्सा अर्थात् जो
आधा पट रहेगा, वह निवास के पिछली तरफ़ लटका रहे।
13 तम्बू के परदों की लम्बाई में से हाथ भर इधर और हाथ भर
उधर निवास को ढाँकने के लिए उसके दोनों ओर लटका हुआ
रहे। 14 फिर तम्बू के लिए लाल रंग से रंगी हुई मेंढ़ों की खालों
का एक ओढ़ना और उसके ऊपर सूइसों की खालों का भी एक
ओढ़ना बनाना। 15 "फिर निवास को खड़ा करने के लिए बबूल
की लकड़ी के तख्ते बनवाना। 16 एक-एक तख्ते की लम्बाई दस
हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की हो। 17 एक-एक तख्ते में एक
दूसरे से जोड़ी हुई दो चूलें हों। निवास के सभी तख्तों को इसी
तरह बनाना। 18 निवास के लिए जो तख्ते तुम बनवाओगे, उन
में से बीस तख्ते दक्षिण दिशा के लिए हों। 19 बीसों तख्तों
के नीचे चाँदी की चालीस कुर्सियाँ बनवाना अर्थात् एक-एक
तख्ते के नीचे उसकी चूलों के लिए दो-दो कुर्सियाँ। 20 निवास
की दूसरी ओर अर्थात् उत्तर की तरफ़ के लिए बीस तख्ते
बनवाना। 21 उन के लिए चाँदी की चालीस कुर्सियाँ अर्थात्
एक-एक तख्ते के नीचे दो-दो कुर्सियाँ बनवाना। 22 निवास
की पिछली ओर अर्थात् पश्चिम की ओर के लिए छैः तख्ते

बनवाना। 23 पिछले भाग में निवास के कोनों के लिए दो तख्ते
बनवाना 24 और ये नीचे से दो-दो भाग के हों और दोनों भाग
ऊपर के सिरे तक एक-एक कड़े में मिलाए जाएँ। दोनों तख्तों
का यही रूप हो और ये दोनों कोनों के लिए हों। 25 आठ तख्ते
हों और उनकी चाँदी की सोलह कुर्सियाँ हों, अर्थात् एक-एक
तख्तों के नीचे दो-दो कुर्सियाँ हों। 26 फिर बबूल की लकड़ी के
बेड़ें बनवाना अर्थात् निवास के एक ओर के तख्तों के लिए
पाँच, 27 निवास के दूसरी ओर के तख्तों के लिए पाँच बेड़ें और
निवास का जो भाग पश्चिम की ओर पिछले भाग में होगा,
उसके लिए पाँच बेड़ें बनवाना। 28 बीच वाला बेंड़ा जो तख्तों
के बीच में होगा, वह तम्बू के एक सिर से दूसरे सिरे तक पहुँचे।
29 फिर तख्तों को सोने से मढ़वाना। उन के कड़े जो बेड़ों के
घरों का काम देंगे, उन्हें भी सोने के बनवाना और बेड़ों को भी
सोने के बनवाना बेड़ों को भी सोने से मढ़वाना। निवास को
इस तरह से खड़ा करना, जैसा इस पहाड़ पर तुम्हें दिखाया
जा चुका है। 31 फिर नीले, बैंजनी और लाल रंग के और बटी
हुई महीन सनीवाले कपड़े का एक बीच वाला परदा बनवाना।
वह कढ़ाई के काम किए हुए करूबों के साथ बने। 32 उसके
सोने से मढ़े हुए बबूल के चार खम्भों पर लटकाना। इनकी
अंकड़ियाँ सोने से बनी हो। ये चाँदी से बनी चार कुर्सियों पर
खड़ी रहें। 33 बीच वाले पर्दे को अंकड़ियों के नीचे लटकाकर
उसको आड़ में साक्षीपत्र के सन्दूक अन्दर ले जाना। इस तरह
वह बीच वाला परदा तुम्हारे लिए पवित्रस्थान को महापवित्र
स्थान से अलग किए रहेगा। 34 फिर महापवित्र स्थान में
साक्षीपत्र को सन्दूक के ऊपर प्रायश्चित के ढक्कन को रखना।
35 उस परदे के बाहर निवास के उत्तर की ओर मेंज रखना।
उसके दक्षिण की ओर मेंज के सामने दीवट को रखना। 36 फिर
तम्बू के दरवाजे़ के लिए नीले, बैंजनी और लाल रंग के और
बटी हुई महीन सनी वाले कपड़े का कढ़ाई का काम किया
हुआ एक परदा बनाना। 37 इस पर्दे के लिए बबूल के पाँच खंबें
बनवाना। उन्हें सोने से मढ़वाना। उनकी कड़ियाँ सोने की हों
और उन के लिए पीतल की पाँच कुर्सियाँ ढलवाकर बनवाना।

27 1 फिर वेदी को बबूल की लकड़ी की पाँच हाथ लम्बी
और पाँच हाथ चौड़ी बनवाना। वेदी चौकोर हो
और उसकी ऊँचाई तीन हाथ की हो। 2 उसके चारों कोनों पर
चार सींग बनवाना। वे एक ही टुकड़े से बने हों और उन पर
पीतल मढ़वाना, 3 उसकी राख उठाने के बर्तन, फावड़ियाँ,
कटोरे, काँटे और अँगीठियाँ बनवाना। सब कुछ पीतल का
होना चाहिए। 4 उसके लिए पीतल की जाली की एक झँझरी
बनवाना झँझरी के चारों सिरो में पीतल के चार कडे़
लगवाना 5 झँझरी को वेदी के चारों ओर की कंगनी के नीचे
इस तरह लगवाना, कि वह वेदी की ऊँचाई के बीच तक
पहुँचे। 6 वेदी के लिए बबूल की लकड़ी के डण्डे बनवाना और
उन्हें पीतल से मढ़वाना। 7 डण्डे कड़ों में डाले जाएँ, कि जब
जब वेदी उठायी जाए, तब वे उसके दोनों किनारों पर रहें।
8 वेदी को तख्तों से खोखली बनवाना। जैसी वह तुझे पहाड़
पर दिखायी गई है, वैसी ही बनाना 9 फिर निवास के आँगन
को बनवाना उसके दक्षिण की ओर के लिए बटी हुई महीन
सनी के कपडे के पर्दे हों। उसकी लम्बाई सौ हाथ हो, एक
किनारे पर इतनी ही हो। 10 उन के लिए बीस खंबें बनें, इन
के लिए पीतल की बीस कुर्सियाँ बनें और खम्भों के कुन्डे और
पट्टियाँ चाँदी की हों। 11 इसी तरह उत्तर की ओर के लिए सौ
हाथ लम्बा परदा हो, तथा उसके बीस सम्ये और कांसे के बीस
खांचे हो। खम्भों के कुण्डे और उनकी पट्टियाँ चाँदी की बनाना।
12 फिर आँगन की चौड़ाई में पश्चिम की ओर पचास हाथ के
पर्दे हों। उन के लिए खम्भे दस और खाने भी दस हों। 13 पूरब
की ओर आँगन की चौड़ाई पचास हाथ की हो। 14 आँगन के
दरवाजे़ की ओर पन्द्रह हाथ के पर्दे हों और उसके लिए खम्भे
तीन और खाने तीन हों। 15 दूसरी ओर भी पन्द्रह हाथ के पर्दे
हों, उन के लिए भी तीन खम्भे और तीन खाने हों। 16 आँगन
के दरवाजे़ के लिए एक परदा बनवाना जो नीले, बैंगनी
और लाल रंग के कपड़े और बटी हुई महीन सनी के कपड़े का
कामदार बना हुआ बीस हाथ का हो, उसके लिए खम्भे चार
और खाने भी चार हों। 17 आँगन के चारो ओर के सभी खम्भे
चाँदी की पट्टियों से जुड़े हुए हों। 18 आँगन की लम्बाई सौ हाथ
की, चौड़ाई पचास हाथ की हो। उसकी कनात की ऊँचाई पाँच
हाथ की हो। उसकी कनात बटी हुई महीन सनी के कपड़े की
बने और खम्भों के खाने पीतल के हों। 19 निवास स्थान के
तरह-तरह के बर्तन और सभी समान और उसके सब खूँटे और
आँगन के सभी खूँटे पीतल के हों। 20 फिर तुम इस्त्राएलियों को
आज्ञा देना कि मेरे पास दीवट के लिए कूट के निकाला हुआ
जैतून का निर्मल तेल ले आना। उसी से दीपक सदैव जलता
रहे। 21 मिलाप वाले तम्बू में, उस बीच वाले पर्दे से बाहर
जो साक्षीपत्र के सामने होगा, हारून और उसके बेटे दीवट
शाम से सुबह तक याहवे के सामने सज़ा़ कर रखें। यह विधि
इस्त्राएलियों की पीढ़ियों के लिए हमेशा-हमेशा तक रहे।

28 1 फिर तुम इस्त्राएलियों में से अपने भाई हारून,
नादाब, अबीहू, एलीआजर और ईतामार नामक
उसके बेटों को अपने पास ले आना कि वे मेरे लिए याजक
(पुरोहित) की जिम्मेदारी निभाएँ। तुम अपने भाई हारून के
लिए वैभव और शोभा के लिए पवित्र कपड़े बनवाना। 3 जितेन
लोगों के मन (ह्रदय) में बुद्धि है, जिनको मैंने बुद्धि देने वाली

आत्मा से भर दिया है, उनको तुम हारून के कपड़े बनाने की आज्ञा दो, कि वह मेरे लिए याजक का काम करने के लिए पवित्र बने। 4 जो कपड़े उन्हें बनाने होंगे, वे ये हैं - सीनाबन्द, एपोद, बागा, चारखाने का अंगरखा, पगड़ी और कमरबन्द। ये पवित्र वस्त्र तुम्हारे भाई हारून और उसके बेटों के लिए बनाए जाएँ, कि वे मेरे लिए याजक का काम करें। 5 वे सोने और नीले, बैंजनी और लाल रंग का और महीन सनी का कपड़ा लें। 6 वे सोने और नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े का और बटी हुई महीन सनी के कपड़े का बनाएँ। यह एक योग्य कढ़ाई करने वाले से बनवाया जाए। 7 वह इस तरीके से जोड़ा जाए कि उसके दोनों कन्धों के सिरे आपस में मिले रहें। 8 एपोद पर जो काढ़ा हुआ पटुका होगा, उसकी बनावट उसी की तरह हो और वे दोनों बिना जोड़ के हों। ये सोने और नीले, बैंजनी और लाल रंग वाले और बटी हुई महीन सनी वाले कपड़े के हों। 9 फिर दो सुलेमानी मणि लेकर उन पर इस्राएल के बेटों के नाम खुदवाना। 10 उन के नामों में से छैः एक मणि पर और बाकी छैः नाम दूसरे मणि पर, इस्राएल के बेटों के जन्म के अनुसार खुदवाना। 11 मणि खोदने वाले के काम ही की तरह, जैसे छापा खोदा जाता है, वैसे ही उन दो मणियों पर इस्राएल के बेटों के नाम खुदवाना। उन्हें सोने के खानों में जड़वा देना। दोनों मणियों को एपोद के कन्धों पर लगवाना। वे इस्राएल को याद दिलवाने वाले मणि ठहरेंगे। दूसरे शब्दों में हारून उन के नाम याहवे के सामने अपने दोनों कन्धों पर यादगारी के लिए लगाए रहे। 13 सोने के खाने बनवाना। 14 डोरियों की तरह गूँथे हुए दो जंजीर चोखे सोने के बनवाएँ जाएँ और गूँथे हुए जंजीरों को उन खानों में जड़वाना 15 फिर न्याय की चपरास को भी कढ़ाई के काम का बनवाना। एपोद की तरह सोने और नीले, बैंजनी और लाल रंग के और बटी हुई महीन सनी के कपड़े की उसे बनवाना। 16 वह चौकोर और दोहरी हों। उसकी लम्बाई और चौड़ाई एक बालिश्त की हो। उसमें चार पंक्ति मणि जड़ाना। पहली पंक्ति में माणिक, पद्मराग और लालड़ी हों। 18 दूसरी पंक्ति में मरकत, नीलमणि और हीरा 19 तीसरी पंक्ति में यशब, सूर्यकांत और नीलम 20 चौथी पंक्ति में फीरोजा, सुलेमानी मणि और यशब हों। इन सभी को सोने के खानों (छेदों) में जड़ दिया जाए। 21 इस्राएल के बेटों की गिनती के अनुसार मणियों की संख्या हो। कहने का अर्थ यह है कि उन के नामों की गिनती के आधार पर बारह नाम एक-एक मणि पर ऐसे खोदे जाएँ, जैसे कि छाप कर खोदा गया हो। 22 फिर चपरास पर डोरियों की तरह गूँथे हुए शुद्ध सोने की जंजीर लगवाना। 23 साथ ही चपरास में सोने की दो कड़ियाँ लगवाई जाएँ। दोनों कड़ियों को चपरास के दोनों सिरों पर लगवाना। 24 सोने के दोनों गूँथी हुई जंज़ीरों को उन दो कड़ियों में जो चपरास के सिरों पर होंगी, लगवाना। 25 गूँथी हुई दोनों जंज़ीरों के दोनों बाकी सिरों को दोनो छेदों में जड़वाकर एपोद के दोनों कन्धों के बन्धनों पर उसके सामने लगवाया जाएँ। 26 सोने की दो और कड़ियाँ बनवाकर चपरास के दोनों सिरों पर उसकी उस कोर पर जो एपोद के अन्दर की ओर होगी, लगवाना। 27 इसके अलावा सोने की दो और कड़ियाँ बनवाकर एपोद के दोनों कन्धों के बन्धनों पर, नीचे से उसके सामने और उसके जोड़ के पास एपोद के काढे हुए पट्टे के ऊपर लगवाना। 28 चपरास अपनी कड़ियों के द्वारा एपोद की कड़ियों में नीले फी़ते से बाँधी जाए। इस तरह वह एपोद के काढ़े हुए पट्टे पर बनी रहे और चपरास एपोद पर से अलग न होने पाए। 29 जब-जब हारून पवित्रस्थान में दाखिल हों, तब-तब वह न्याय की चपरास पर अपने दिल के ऊपर इस्राएलियों के नामों को लगाए रहे। इस तरह से याहवे के सामने उनकी याद हर दिन बनी रहेगी। 30 न्याय की चपरास में तुम ऊरीम-तुम्मीम को रखना। जब-जब हारून याहवे के सामने आए, तब-तब वे उसके हृदय के ऊपर हों। इस तरह हारून इस्राएलियों के लिए याहवे के न्याय को अपने हृदय के ऊपर प्रतिदिन लगाए रहे। 31 "एपोद के बागे को पूरा नीले रंग का होना चाहिए। 32 उसके बीच में सिर डालने के लिए छेद हो, उस छेद के चारों तरफ़ बख्तर के छेद जैसी एक बुनी हुई कोर हो कि वह फटने न पाए। 33 उसके नीचे वाले घेरे में चारों और नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े के अनार बनाना। उसके बीच-बीच चारों तरफ़ सोने की घंटियाँ लगाना। 34 अर्थात् एक सोने की घंटी और एक अनार। इस तरह बागे के नीचे वाले घेरे में चारों ओर ऐसा ही हो। 35 हारून उस बागे को सेवा करते समय पहना रहे। जब-जब वह पवित्रस्थान के अन्दर याहवे के सामने जाए या बाहर निकले, तब-तब उसकी आवाज़ सुनायी दे, नहीं तो वह मर जाएगा। 36 शुद्ध सोने की एक पट्टी बनवाना, छपाई की तरह ये शब्द खोदे जाएँ : 'याहवे के लिए पवित्र' 37 उसे नीले फीते से बांध देना जो कि पगड़ी के सामने वाले भाग पर रहे। 38 वह हारून के माथे पर रहे, ताकि इस्राएली जो कुछ पवित्र ठहराएँ अर्थात् जितनी पवित्र चीजें भेंट में चढ़ावे, उन पवित्र चीजों का दोष हारून उठाए रहें। हर दिन वह उसके माथे पर रहे, जिस से याहवे उन से खुश रहें। 39 महीन सनी के कपड़े का जो चार खाने वाला हो, उस से अंगरखा बनाया जाए। बेलबूटे की कढ़ाई का काम किया हुआ एक कमरबन्द भी बनाया जाए। 40 फिर हारून के बेटों के लिए भी अंगरखें, कमरबन्द और टोपियाँ बनवायी जाएँ। ये कपडे शान और सुन्दरता के लिए होंगे। 41 अपने भाई हारून और उसके बेटों को ये सब कपडे पहिनाकर उनका अभिषेक और संस्कार करना। उन्हें पवित्र करना ताकि वे मेरे लिए

याजक (पुरोहित) का काम करें। 42 उन के लिए सभी के कपड़े
की जाँघिया बनवाना जिससे उनकी देह ढँकी रहे। ये जाँघिया
कमर से जाँघ तक की होनी चाहिए। 43 जब कभी हारून और
उसके बेटे मिलाप वाले तम्बू में दाखिल हों या पवित्रस्थान
में सेवकाई करने वेदी के पास जाएँ, तब वे उन जाँघियों को
पहिने रहें। ऐसा न हो कि वे अपराधी ठहरें और मर जाएँ। यह
बात हारून और उसके वंश में सदा के लिए एक रिवाज़ बन
जाए।

29 1 उन्हें पवित्र करने के लिए जो कुछ तुम्हें उन के साथ
मिलकर करना है - वह है याजक का काम। वे एक
निर्दोष बछड़ा और दो निर्दोष मेंढे़ लें। 2 साथ में अखमीरी
रोटी, तेल से सने हुए मैदे के अखमीरी फुलके और तेल चुपड़ा
हुई अखमीरी पपड़ियाँ भी लेना। यह सभी मैदे से बनवाना।
3 इन को एक टोकरी में रखकर उस टोकरी को उस बछड़े और
उन दिनों मेंढ़ों समेत पास ले आना। 4 फिर हारून और उसके
बेटों को मिलाप वाले तम्बू के दरवाजे़ के पास लाकर पानी
से नहलाना। 5 तब उन कपड़ों को लेकर हारून को अंगरखा
और एपोद का बागा पहनाना। एपोद और चपरास बाँधना
और एपोद का काढ़ा हुआ पट्टा भी बाँधना। 6 सिर पर पगड़ी
रखना, पगड़ी पर पवित्र मुकुट रखना। 7 तब अभिषेक का तेल
उसके सिर पर डाल कर उसका अभिषेक करना। 8 फिर उसके
बेटों को पास लाकर उनको अंगरखे पहनाना। 9 फिर हारून
और उसके बेटों की कमर बान्धना और उन के सिर पर टोपियाँ
रखना, जिससे पुरोहित (याजक) पद पर सदा के लिए उनका
ही अधिकार हो। इस तरह हारून और उसके बेटों का संस्कार
करना। 10 तब बछ़डे को मिलाप वाले तम्बू के सामने पास ले
आना हारून और उसके बेटे बछ़डे के सिर पर अपने-अपने हाथ
रखें। 11 तब उस बछ़डे को याहवे के सामने मिलाप वाले तम्बू
के दरवाजे़ पर कुर्बान करना। 12 और बछ़डे के खून में से कुछ
लेकर अपनी उंगली से वेदी के सीगों पर लगाना। बाकी बचे
खून को वेदी के पाए पर उण्डेल देना। 13 अतंड़ियों के ऊपर
जमी चर्बी और कलेजे के ऊपर की झिल्ली और दोनों गुर्दों के
ऊपर की चर्बी को वेदी पर जलाना। 14 बछ़डे का मांस, खाल
और गोबर छावनी के बाहर पाप बलि के रूप में बाहर आग में
जलाया जाए। 15 एक मेंढे़ को लेकर हारून और उसके बेटे
अपने हाथों को उस पर रखे। 16 मेंढे़ को कुर्बान करके उसके
रक्त को वेदी पर चारो ओर छिड़कना। 17 मेंढे़ को टुकड़ों
में बाँट देना। उसकी अन्तड़ियो और पैरों को धोकर उसके
टुकड़ों और सिर के ऊपर रखना। 18 उस पूरे मेंढे़ को वेदी पर
जलाना। वह याहवे के लिए होम बलि है। वह खुश देनेवाली
सुगंध और याहवे के लिए भेंट होगी। 19 फिर दूसरे मेंढे़ को
लेकर हारून और उसके बेटे उसके सिर पर अपने-अपने हाथ
रखें। 20 तब उस मेंढे़ की कुर्बानी चढ़ाना और उसके खून में से
थोडा सा लेकर हारून और उसके बेटों के दाहिने कान के सिरे
पर और उन के दाहिने हाथ और दाहिने पाँव के अँगूठों पर
लगाना। तुम खून को वेदी पर चारों और छिड़क देना। 21 फिर
वेदी के खून और अभिषेक के तेल में से थोड़ा-थोड़ा लेकर
हारून और उसके कपड़ों पर भी छिड़क देना। तब वह अपने
कपड़ों सहित और उसके बेटे भी अपने-अपने कपड़ों सहित
पवित्र हो जाएँगे। 22 तब मेंढे़ को संस्कार वाला जानकर उस
में से चर्बी और मोटी पूँछ को और जिस चर्बी से अन्तड़िया
ढकी रहती हैं, उसको कलेजे की झिल्ली को और चर्बी समेत
दोनों गुर्दों को और दाहिने कंधे को लेना। 23 याहवे के सम्मुख
रखी अखमीरी रोटी की टोकरी में से एक रोटी, तेल से सने मैदे
का फुल्का और एक पपड़ी लेकर 24 हारून और उसके बेटों के
हाथों में रखकर हिलाए जाने की भेंट ठहरा कर याहवे के आगे
हिलाया जाए। 25 इन सब चीजों को हारून के हाथों से लेकर
होमबलि की वेदी पर जलाना, जिससे वह सुख देने वाली
खुशबू हो। वह याहवे के लिए हवन (भेंट) ठहरें 26 फिर हारून
के समर्पण के मेंढे़ की छाती को लेकर हिलाए जाने की भेंट
के लिए याहवे के आगे हिलाना, वही तुम्हारा हिस्सा ठहरेगा।
27 हारून और उसके बेटों के समर्पण के मेंढे़ में हिलाए जाने
की भेंट वाली छाती जो हिलायी जाएगी और उठाए जाने का
भेंट वाला कंधा पट्टा जो उठाया जाएगा, इन दोनों को पवित्र
ठहराना। 28 ये सदा काल की प्रथा की रीति पर इस्त्राएलियों
की ओर से उसका और उसके बेटों का हिस्सा ठहरे, क्योंकि ये
उठाए जाने की भेंटे ठहरी हैं। यह इस्त्राएलियों की ओर से उन
के मेल बलियों में से याहवे के लिए उठाए जाने की भेंट होगी।
29 हारून के पवित्र कपड़े (पहिरावा) उसके बेटे और पोते
भी पहनें, जिस से उन्हीं को पहिने हुए उनका अभिषेक और
समर्पण किया जाए। 30 उसके बेटों में से जो उसकी जगह पर
पुरोहित होगा, वह जब पवित्रस्थान में सेवा करने को मिलाप
वाले तम्बू में पहले आए। फिर उन कपड़ों को सात दिन तक
पहने रहे। 31 फिर पुरोहित (याजक) के समर्पण के मेंढे़ का
गोश्त किसी पवित्रस्थान में पकाना। 32 तब हारून अपने बेटों
के साथ उस मेंढ़े का गोश्त और टोकरी की रोटी दोनों को
मिलाप वाले तम्बू के दरवाजे़ पर खाए। 33 जिन चीजों से
उनका समर्पण और उन्हें पवित्र करने के लिए प्रायश्चित किया
जाएगा। इसलिए कि वह सब पवित्र (सामान्य से अलग)
होगा, दूसरे कबीले (कुल) का कोई व्यक्ति उसे न खाए। 34 यदि
समर्पित मांस या रोटी में से कुछ सुबह तक बचा रहे, तो उस
बचे हिस्से को आग में जलाना। वह पवित्र होगा और उसे
खाया न जाए। 35 मेरी आज्ञा के अनुसार हारून और उसके

बेटों से करना। सात दिन तक उन्हें अलग करने की विधि पूरी करना। 36 पाप बलि का एक बछड़ा प्रायश्चित के लिए हर दिन चढ़ाना। प्रायश्चित के समय वेदी को शुद्ध करना और पवित्र करने के लिए अभिषेक करना। 37 सात दिन तक वेदी के लिए प्रायश्चित करके उसे पवित्र करना, तब वेदी पवित्र ठहरेगी। जो कुछ उस से स्पर्श होगा वह भी पवित्र हो जाएगा।

30 1 धूप जलाने के लिए बबूल की लकड़ी की वेदी बनाई जाए। 2 उसकी लम्बाई-चौड़ाई एक हाथ की हो। वह आकार में चौकोर हो। उसकी चौड़ाई दो हाथ की हो। उसके सींग उसी टुकड़े से बनाए जाएँ। 3 वेदी के ऊपर वाले पहले और चारों तरफ़ के बाजुओं और सींगों को शुद्ध सोने से मढ़ना। इसके चारो ओर सोने की एक बाड़ बनाना। 4 इसकी बाड़ के नीचे इसके आमने-सामने के दोनों पल्लों पर सोने के दो-दो कड़े बनवाकर इसके दोनों ओर लगाना। वे इसके उठाने के डण्डों के खानों का काम देंगे। 5 बबूल की लकडी़ के डण्डों को बनाकर उनको सोने से मढ़ देना। 6 तुम उसे उस पर्दे के आगे रखना जों साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने है। तात्पर्य यह है कि प्रायश्चित वाले ढक्कन के आगे जो साक्षीपत्र के ऊपर है, वहीं मैं तुम से मिला करूँगा। 7 उसी वेदी पर हारून खुशबूदार धूप जलाया करे। हर दिन सुबह जब वह दीपक को ठीक करे, तब वह धूप जलाए। 8 गोधूलि के वक्त जब हारून दीपकों को जलाए तब धूप जलाया करें। यह धूप याहवे के सामने तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में हर दिन जलाया जाए। 9 उस वेदी पर तुम किसी दूसरी तरह का धूप मत जलाना। न ही उस पर होमबलि या अन्नबलि चढ़ाना और न ही अर्ध देना। 10 साल में एक बार हारून इसके सीगों पर प्रायश्चित करे। तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में साल में एक बार प्रायश्चित के पापबलि के खून से इस पर प्रायश्चित किया जाए। यह याहवे के लिए परमपवित्र है।
11 तब याहवे ने मूसा से कहा, 12 जब तुम इस्त्राएलियों की गिनती करने लगो, तो वे अपने-अपने जान के लिए याहवे को प्रायश्चित दें, जिस से जब तुम उनकी गिनती कर रहे हो, उस समय कोई मुसीबत उन पर न आ जाए। 13 जितने लोग गिने जाएँ, वे पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार आधा शेकेल दें (शेकेल बीस गेरा के बराबर होता है)। 14 याहवे की भेंट आधा शेकेल हो, बीस साल के या उस से ज्यादा उम्र के जितने हों, उन में से एक-एक जन याहवे को भेंट दे। 15 जब तुम्हारी जान के प्रायश्चित के लिए याहवे की भेंट चढ़ाई जाए, तब न अमीर लोग आधे शेकेल से अधिक दें, न गरीब लोग उस से कम दें।
16 तुम इस्त्राएलियों से प्रायश्चित की रकम लेकर मिलाप वाले तम्बू के काम में लगाना। वह याहवे के सामने इस्त्राएलियों की याद के लिए निशान ठहरे और उन के प्राणों का प्रायश्चित भी हो। 17 याहवे ने मूसा से कहा, 18 पीतल के पाये वाली पीतल की हौद बनाना। उसे मिलाप वाले तम्बू और वेदी के बीच में रखकर उसमें पानी भर देना। 19 उसमें हारून और उसके बेटे अपने-अपने हाथ पाँव धोया करें। 20 जब-जब वे मिलाप वाले तम्बू में दाखिल हो, तब-तब वे पानी से अपने हाथ-पाँव धोएँ, नहीं तो मर जाएँगे। जब-जब वे वेदी के पास सेवकाई करने (याहवे के लिए द्रव्य जलाने) आएँ, तब-तब वे हाथ-पाँव धोएँ, ताकि मर न जाएँ। 21 यह हारून और उसकी पीढ़ी-पीढ़ी के वंश के लिए सदा की प्रथा बन जाए। 22 फिर याहवे ने मूसा से कहा, 23 "तुम बढ़िया से बढ़िया खुशबूदार द्रव्य लो। यह पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार पाँच सौ शेकेल अपने आप निकला हुआ गंधरस, उसकाआधा (ढाई सौ शेकेल) खुशबूदार दालचीनी, ढाई सौ शेकेल खुशबूदार अगर 24 पाँच सौ शेकेल तज, एक हौन जैतून का तेल लेकर 25 उन से अभिषेक का पवित्र तेल, अर्थात् गंधी की रीति से तैयार किया हुआ खुशबूदार तेल बनवाना। यह अभिषेक का पवित्र तेल होगा।
26 और उस से मिलाप वाले तम्बू का और साक्षीपत्र के सन्दूक का 27 और सारे सामान समेत मेंज का और सामान समेत दीवट का और धूपवेदी का 28 और सारे सामान सहित होम वेदी का और पाए समेत हौदी का अभिषेक करना 29 उनको पवित्र करना, जिससे वे परम पवित्र ठहरें और जो कुछ उन से छू जाएगा, वह पवित्र ठहरेगा। 30 फिर हारून का उसके बेटों के साथ अभिषेक करना और इस तरह उन्हें मेरे लिए याजक का काम करने के लिए अलग करना। 31 इस्त्राएलियों को यह आज्ञा सुनाना, यह तेल तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में मेरे लिए पवित्र अभिषेक का तेल होगा। 32 यह किसी इन्सान की देह पर न डाला जाए और मिलावट में उसकी तरह और कुछ मत बनाना। यह पवित्र है और तुम्हारे लिए भी पवित्र होगा। जो व्यक्ति इसकी तरह कुछ बनाए या जो इस में से किसी दूसरे कुल वाले पर लगाए, वह अपने लोगों में से बर्बाद किया जाए। 34 फिर याहवे ने मूसा से कहा, "बोल, नखी और कुन्दरू नामक खुशबूदार चीजें और शुद्ध लोबान एक ही माप में लेना।
35 और इन का धूप अर्थात् नमक मिलाकर गंधी की प्रथा के अनुसार शुद्ध और अलग किया (पवित्र) द्रव्य बनवाना।
36 उसमें से कुछ पीसकर बारीक करके उसमें से कुछ मिलाप वाले तम्बू में साक्षीपत्र के सामने, जहाँ मैं तुम से मिला करूँ, रखना। वह तुम्हारे लिए परम पवित्र होगा। 37 जो धूप तुम बनवाओगे, मिलावट में उसकी तरह तुम लोग अपने लिए और कुछ मत बनवाना। वह तुम्हारे आगे याहवे के लिए पवित्र होगा। 38 जो कोई सूँघने के लिए उसकी तरह कुछ बनाए वह अपने लोगों में से बर्बाद किया जाए।

31 1 फिर याहवे ने मूसा से कहा, 2 सुनो, मै ऊरी के
पुत्र बसलेल को जो हूर का पोता और यहूदा के गोत्र
का है, बुला लेता हूँ। 3 मैं उसे बुद्धि, प्रवीणता, ज्ञान और हर
तरह के कामों की समझ देने वाले परमेश्वर के आत्मा से भर
देता हूँ। 4 जिससे वह बुद्धि से कारीगरी के काम सब तरह की
बनावट में अर्थात् सोने, चाँदी और पीतल में, 5 और जड़ने के
लिए मणि काटने में और लकड़ी पर नक्काशी का काम करें।
6 हाँ मैं दान के गोत्र के अहीसामाक के पुत्र ओहोलीआब को भी
उसके साथ कर दूँगा। बुद्धिमान लोगों में पाई जाने वाली बुद्धि
मैंने ही उन के अन्दर डाली है, ताकि मेरे द्वारा दी गई आज्ञा
के अनुसार वे बनाने का काम करें। 7 अर्थात् मिलाप वाला
तम्बू, साक्षीपत्र का सन्दूक और उसके ऊपर प्रायश्चित वाला
ढक्कन और तम्बू का सारह सामान। 8 सामान सहित मेंज,
सामान सहित शुद्ध सोने की दीवट, धूपवेदी 9 सामान सहित
होमवेदी, पाए के साथ हौदी 10 काढ़े हुए कपड़े हारून याजक
के काम के पवित्र कपड़े और उसके बेटों के कपड़े 11 अभिषेक
का तेल, पवित्र स्थान के लिए खुशबूदार पदार्थ इन सभी को
वे उन सब निर्दोषों के आधार पर बनाएँ, जो मैंने तुम्ही दी हैं।
12 फिर याहवे ने मूसा से कहा, 13 "तुम इस्त्राएलियों से यह भी
कहना, "तुम मेरे विश्राम दिनों को मानना, क्योंकि तुम्हारी
पीढ़ी-पीढ़ी में मेरे और तुम्हारे बीच यह एक निशान ठहरा है,
जिससे तुम यह जान सको कि याहवे हमें पवित्र करने वाले
हैं। 14 इसलिए तुम विश्राम दिन का पालन करना क्योंकि वह
तुम्हारे लिए सामान्य से हटकर है, जो उसे न माने, वह मार
डाला जाए : जो कोई उस दिन कुछ काम करे उसे मार डाला
जाए। 15 छैः दिन काम किए जाएँ, लेकिन सातवाँ दिन परम
विश्राम का और याहवे के लिए पवित्र है। इसलिए जो कोई
इस दिन काम करे वह ज़रूर मार डाला जाए। 16 इसलिए
इस्त्राएली विश्राम दिन को मानें। वे पीढ़ी-पीढ़ी में उनकी
सदा की वाचा का विषय जानकर माना करें। 17 वह मेरे और
इस्त्राएलियों के बीच सदा एक निशान रहेगा, क्योंकि छैः
दिन में याहवे ने आकाश और पृथ्वी को बनाया और सातवें
दिन कुछ नहीं किया। 18 सीनै पहाड़ पर ये सब बातें करने के
बाद अपनी उंगली से लिखी हुई साक्षी देनेवाली पत्थर की दो
तख्तियाँ दीं।

32 1 मूसा को पहाड़ से उतरने में देरी होते देख लोग
हारून के पास आकर कहने लगे, "हमारे लिए देवता
बनाओ, जो हमारा मार्गदर्शन करे, क्योंकि मूसा हमें मिस्त्र
देश से निकाल लाया था। अभी हमें नही मालूम कि उसे हुआ
क्या? 2 हारून बोला, "तुम्हारी पत्नियों और बेटे-बेटियों के
कानों में सोने की बालियों को उतारकर मेरे पास लाओ।"
3 तब उन सभी लोगों ने जिनके कान में सोने की बालियाँ थीं,
निकाली और हारून के पास ले आए। 4 हारून ने उन के हाथों
से वह सब लेकर औजार का इस्तेमाल कर सोने का एक बछड़ा
बना दिया। वे बोल उठे, "हे इस्त्राएल यही तुम्हारा देवता है,
जो तुम्हें मिस्त्र से निकाल कर लाया है।" 5 यह देखकर हारून
ने एक वेदी बनाकर यह घोषणा की, "कल प्रभु के लिए जश्न
(पर्व) मनाया जाएगा।" 6 अगले दिन वे सभी बड़े सवेरे उठ
गए और मेलबलि और होमबलि चढ़ायी। खाने पीने के बाद
लोग खेलने लगे। 7 प्रभु मूसा से बोले, "जिन लोगों को तुम
मिस्त्र से निकाल ले आए थे, वे गुमराह हो गए हैं, उनको नीचे
जाकर देखो। 8 मेरे बताए हुए रास्ते से वे बहुत जल्दी मुड़ गए
है। एक ढाल कर बनाए गए बछड़े की उन्हों ने पूजा की है
और बलिदान चढ़ाकर कहा है, "हे इस्त्राएलियों तुम्हारा जो
ईश्वर तुम्हे मिस्त्र से निकाल कर लाया है, यही है।" 9 फिर
याहवे ने मूसा से कहा, "मैं इन लोगों को अच्छी तरह जान
गया हूँ, ये ज़िद्दी लोग हैं। 10 तुम मेरे और उन के बीच में मत
आओ। मेरा गुस्सा उन पर भड़क उठा है और मैं उन्हें बर्बाद
कर डालूँगा। लेकिन तुम से मैं एक बड़ा राष्ट्र बनाऊँगा।" 11 तब
मूसा अपने याहवे परमेश्वर को यह कह कर मनाने लगा, "हे
याहवे, आपके लोगों पर आपका क्रोध क्यों भड़क उठा है। आप
तो अपने लोगों को बड़ी शक्ति और ताकतवर हाथ से मिस्त्र
देश से निकाल ले आए हैं ? 12 मिस्त्रियों को यह कहने का
अवसर क्यों मिले, कि उनका परमेश्वर उन्हें इसलिए बाहर
निकाल लाया कि उन्हें पहाड़ों पर मार डाले और पृथ्वी पर
से नामों-निशान मिटा डाले? अपने भड़के हुए क्रोध को शान्त
करें और अपनी प्रजा को ऐसा नुकसान पहुँचाने से रूके रहें।
13 अपने दास अब्राहाम, इसहाक और याकूब को याद कीजिए
जिनसे आप ने प्रण किया था, "मैं तुम्हारे वंशों को आकाश
के तारों के समान बहुत करूँगा। साथ ही यह सारा देश मैंने
जिसके बारे में कहा है, तुम्हारे वंश को दूँगा, ताकि वे सदा
काल तक उसके अधिकारी बने रहें।" 14 तब याहवे ने अपने
लोगों का नुकसान करने का इरादा बदल दिया। 15 तब मूसा
मुड़कर साक्षी की दोनों तख्तियों को हाथ में लिए पहाड़ से
उतर गया। उन तख्तियों के इधर-उधर (दोनों ओर) लिखा
हुआ था। 16 परमेश्वर ने उन तख्तियों को बनाया था। उन पर
खुदाई द्वारा लिखा हुआ परमेश्वर ही का था 17 लोगों के शोर
शराबे को सुन कर यहोशू मूसा से बोला, "छावनी से लड़ाई
की सी आवाज़ आ रही है।" 18 उस ने कहा, "यह शब्द जीतने
या हारने वालों का नहीं, लेकिन गीत गाने का है।" 19 छावनी
के पास आते ही मूसा को बछड़ा और लोगों का नाचना दिख
गया। तब मूसा आग बबूला हो उठा। उस ने वहीं पहाड़ के
नीचे तख्तियों को पटक दिया और वे टूट गईं। 20 तब उस ने

उन के बनाए हुए बछड़े को लिया और आग में फूँक दिया। पीसकर, चूरा-चूरा कर के पानी के ऊपर उसे फेंक दिया और इस्राएलियों को पिलवा दिया 21 मूसा हारून से कहने लगा, "इन लोगों ने तुम्हारे साथ क्या किया कि तुम ने उन्हें इतने बड़े अपराध में फँसाया?" 22 हारून ने जवाब में कहा, "स्वामी आप गुस्सा मत हों, आप तो जानते है कि इन लोगों का मन बुराई में ही रहता है।" 23 इन लोगों ने ही मुझ से कहा कि मैं उन के लिए देवता बनाऊँ जो हम सभी का मार्गदर्शन करें क्योंकि हमको मिस्र से छुड़ाने वाला, नहीं मालूम कहाँ गया। 24 तब मैंने उन से कहा था, "जिनके पास सोने के गहने हो, वे उतार कर मुझे दे। उन लोगों ने वैसा किया भी। जब मैंने वे गहने आग में डाले, तब यह बछड़ा निकल पड़ा।" 25 जब मूसा को दिखाई पड़ा कि लोग अपने आपे में नहीं थे (क्योंकि हारून ने उन्हें उन के दुश्मनों के सामने ऐसा करने की छूट दी थी)। 26 तब मूसा तम्बू के दरवाजे़ पर खड़ा हुआ और कहने लगा, "जो प्रभु की ओर है, वह यहाँ मेरे पास आए।" तब लेवी के सभी पुत्र उसके पास आकर खड़े हो गए। 27 वह बोला, "इस्राएल के परमेश्वर का कहना यह है, हर एक जन अपनी तलवार ले ले और एक दरवाजे़ से दूसरे दरवाजे़ तक अन्दर-बाहर जाकर अपने भाई, दोस्त और पड़ोसी को जान से मार डाले।" 28 लेवी के बेटों ने वैसा ही किया, जैसा मूसा ने करने के लिए कहा था। उस दिन लगभग तीन हजा़र लोग मारे गए। 29 फिर मूसा ने कहा, आज के दिन अपने आप को समर्पित करो, हर एक पुरूष अपने बेटों और भाइयों के विरोध होने के बावजूद ऐसा करे, जिससे परमेश्वर की भलाई चख सको। 30 अगले दिन मूसा ने लोगों से कहा, "तुम ने एक बड़ा अपराध कर डाला है, लेकिन मैं अब प्रभु के सामने जाकर तुम्हारे अपराध के लिए प्रायश्चित करूँगा।" 31 मूसा ने लौट कर परमेश्वर से कहा, "आह, इन लोगों ने बड़ा अपराध कर डाला है और अपने लिए सोने का देवता बना लिया है।" 32 अब यदि आप उनकी इस दुष्टता को क्षमा करें, तो ठीक है, लेकिन यदि नही तो, मैं यह निवेदन करता हूँ कि अपनी किताब से मेरे नाम को निकाल दें। 33 फिर प्रभु ने मूसा से कहा, "जिस किसी ने मेरे विरोध में पाप किया है, उसी का नाम मैं अपनी किताब से मिटा दूँगा। 34 इसलिए अब अपने लोगों को उस जगह ले चलो, जिसके बारे में मैंने तुम्हें बताया है। देखो, मेरा स्वर्गदूत तुम्हारे आगे-आगे चलेगा। फिर भी जब मैं दण्ड देना आरम्भ करूँगा, उस दिन इस दुष्टता का दण्ड भी दूँगा।" 35 इसलिए याहवे ने उन लोगों पर मुसीबत (बला) डाली, क्योंकि हारून के बनाए हुए बछड़े को उन्हीं ने बनवाया था।

33 1 फिर याहवे ने मूसा से कहा, "एक भूमि को देने की प्रतिज्ञा मैंने अब्राहम, इसहाक और याकूब से की थी, कि मैं उन के वंश को वह दूँगा। तुम अब इन लोगों को जिन्हें मिस्र से मुक्त करके लाए हो, उस देश में ले जाओ। 2 तुम्हारे आगे-आगे मैं एक दूत को भेजूँगा। मैं कनानी, एमोरी, हित्ती, परिज्जी, हिब्बी और यबूसी लोगों को ज़बरदस्ती निकाल दूँगा। 3 दूध और शहद से भरपूर देश को तुम जाओ। लेकिन क्योंकि तुम ज़िद्दी स्वभाव के पहले, मैं तुम्हारे साथ न रहूँगा। और संभव यह है कि, मैं कही रास्ते ही में तुम्हें मार न डालूँ। 4 यह सुनकर इन लोगों के बीच बड़ा रोना-धोना मच गया। उन्हों ने अपने गहने भी उतार दिए थे। 5 याहवे ने मूसा से कह दिया था, "मेरा यह संदेश इस्राएलियों को दो" तुम सभी हठीले हो, यदि मैं एक सेकेण्ड भी तुम्हारे साथ चलूँ, तो मैं तुम्हें बर्बाद कर डालूँगा। इसलिए अपनी देह से गहनों को निकाल दो, ताकि मैं जानूँ कि तुम्हारे साथ किया क्या जाना चाहिए।" 6 इसलिए इस्राएली होरेब पहाड़ से लेकर आगे तक अपने गहने उतारे रहें। 7 मूसा तम्बू को छावनी से बाहर दूर खड़ा कराया करता था और उसे मिलाप वाला तम्बू कहता था। जो कोई याहवे को ढूँढता वह छावनी के बाहर मिलाप वाले तम्बू के पास निकल जाता था। 8 जब-जब मूसा तम्बू के पास जाता, तब-तब सभी लोग उठकर अपने डेरे के दरवाजे़ पर खडे़ हो जाते थे। जब-तक मूसा उस तम्बू में दाखिल न होता था, तब तक उसकी ओर ताकते रहते थे। 9 उस तम्बू में मूसा के प्रवेश करते ही, बादल का खंभा उतरकर तम्बू के दरवाजे़ पर ठहर जाता था। तभी याहवे की बातचीत मूसा से हुआ करती थी। 10 लोग जब बादल को तम्बू के द्वार पर ठहरा हुआ देखा करते थे, तब उठकर अपने-अपने डेरे के दरवाजे़ पर से दण्डवत करते थे। 11 याहवे मूसा से इस तरह आमने-सामने बातें करते थे, जिस तरह कोई अपने भाई से बाते करता हो। मूसा छावनी में लौट आया करता था, लेकिन यहोशू जवान, जो नून का बेटा और मूसा का सेवक था, तम्बू के बाहर नहीं आया करता था। 12 मूसा ने याहवे से कहा, "आप मुझ से इन लोगों को ले जाने के लिए तो कह रहे है, लेकिन यह नहीं बताया कि मेरे साथ किस को भेजेंगे। फिर भी आप ने मुझे बताया है कि आपके ह्रदय में मेरे लिए बड़ी जगह है। 13 अब यदि मुझ पर आपकी कृपा बनी रहे तो मुझे अपने तौर-तरीके बताईए। ऐसा होने पर आपका ज्ञान पाने से आपकी कृपा मुझ पर बनी रहे। हाँ यह भी ध्यान रखे कि ये लोग आप ही की कौम है।" 14 याहवे ने कहा, "मैं खुद तुम्हारे साथ रहा करूँगा और तुम्हें सुकून मिलेगा।" 15 उस ने उस से कहा, "यदि आप हमारे साथ न आएँ तो हमें यहाँ से आगे न ले चलें। 16 यह मालूम कैसे पड़े कि आपकी कृपादृष्टि मुझ

पर और आपकी प्रजा पर है? क्या इस से भी कि आप हमारे संग-संग चले, जिससे मैं और आपकी प्रजा के लोग इस दुनिया के सभी लोगों से अलग ठहरें? 17 याहवे ने मूसा से कहा, मैं इस काम को जिसके बारे में तुम बता रहे हो, करूँगा, क्योंकि मेरी दया-दृष्टि तुम पर है और तुम्हारा नाम मेरे भीतर बस चुका है। 18 मूसा बोल उठा, "अपना तेज मुझे दिखाईए।" 19 परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम्हारे सामने से होकर चलते हुए अपनी सारी भलाई दिखाऊँगा। मैं याहवे नाम की घोषणा करूँगा और जिस पर मैं अनुग्रह करना चाहूँ, करूँगा। जिस पर मैं दया करना चाहूँगा, मैं ज़रूर करूँगा।" 20 फिर उस ने कहा, "तुम मेरे चेहरे का दर्शन नहीं कर सकोगे। इन्सान मेरा दर्शन करने के बाद जीवित ही नहीं रहेगा।" 21 फिर याहवे ने कहा, "सुनो मेरे पास एक जगह है, यहाँ तुम उस चट्टान पर खड़े रहो। 22 जब तक मेरा तेज तुम्हारे सामने हो कर चलता रहे, तब तक मैं तुम्हें चट्टान की दरार में रखूँगा और जब तक मैं तुम्हारे से होकर न चला जाऊँ, तब तक अपने हाथ से तुम्हें ढाँप रहूँगा। 23 इसके बाद मैं अपना हाथ उठा लूँगा तब तुम मेरे पीछे का दर्शन कर पाओगे मेरे सामने का नहीं।

34 1 फिर याहवे मूसा से बोले, "पहली तख्तियों की तरह पत्थर की दो और तख्तियाँ बना लो। इसके बाद मैं उन पर वह सब लिखूँगा जिन्हें पहले की तख्तियों पर लिखा था। 2 सुबह तैयारी के साथ सीनै पहाड़ पर चढ़ कर उसकी चोटी पर मेरे सामने खड़े रहना। 3 तुम्हारे साथ और कोई नहीं आना चाहिए, यहाँ तक कि कोई प्राणी वहाँ न दिखे, न भेड़-बकरी और न गाय-बैल वहाँ चरने पाएँ।" 4 तब मूसा ने पहले की तरह दो तख्तियाँ गढ़ीं। सुबह होते ही जो आज्ञा परमेश्वर की थी, पत्थर की तख्तियों को लेकर वह सीनै पर्वत पर जा खड़ा हुआ। 5 प्रभु बादलों पर उतरने के बाद वहीं उसके साथ खड़े रहे और प्रभु के नाम का ऐलान किया। 6 प्रभु ने उसके पास से गुज़रते समय यह घोषणा की, "प्रभु जो कृपा करने वाले दयालु, देर से गुस्सा करने वाले, भलाई और सच्चाई से भरपूर. 7 हजा़रों-हजा़रों पर कृपालु, दुष्टता और अपराधों को क्षमा करने वाले हैं, लेकिन वह दोषी को यों ही बिना सज़ा़ के नहीं छोड़ते हैं। परेश्वर पिता लोगों की दुष्टता का प्रभाव (सज़ा़) आने वाली सन्तान (तीसरी और चौथी पीढ़ी) तक पहुँचने देते हैं (या देते हैं)। 8,9 तब मूसा ने दण्डवत करते हुए कहा, "हे प्रभु यदि आपकी दया-दृष्टि मुझ पर हो, तो प्रभु हम लोगों के बीच में होकर चलें। ये लोग ज़िद्दी तो है, फिर भी हमारी बुराई और दुष्टता को माफ़ करें और अपना बनाकर स्वीकार करें। 10 परमेश्वर ने कहा, "सुनो, मैं एक वाचा बान्धता हूँ। तुम्हारे सभी लोगों के सामने मैं ऐसे भयंकर और अद्‌भुत काम करूँगा, जैसे इस दुनिया में किसी देश में नहीं हुए। जिन लोगों के बीच में तुम रहते हो, वे सभी उन कामों को देखेंगे। 11 आज मैं तुम से जो कुछ करने के लिए कह रहा हूँ। मैं तुम्हारे देखते-देखते एमोरियो, कनानियों, हित्तियों, परिज्जियों, हिब्बियों और यबूशियों को खदेड़ दूँगा। 12 जब कि तुम उन के बीच जाने वाले हो, ध्यान रखना कि उन के साथ किसी तरह की वाचा न बान्धना। यदि तुम ने ऐसा किया तो तुम फ़न्दे में फँस जाओगे। 13 उनकी वेदियों को ढा देना, मूरतों को तोड़ डालना, उनकी पवित्र समझी जाने वाली मूर्तियों को नाश कर देना। 14 इसलिए कि प्रभु परमेश्वर जो जलन रखने वाले परमेश्वर हैं और उनका नाम जलनशील है, उन्हें छोड़ किसी ईश्वर की उपासना तुम मत करना। 15 सतर्कता बरतना कि तुम उस देश में रहने वाले लोगों से सम्बन्ध स्थापित न करो, जिस से वे तुम्हें, अपने देवी-देवताओं के सामने चढ़ावा और उसमें से खाने के लिए न्यौता दें। 16 और तुम अपने बेटों के लिए उनकी बेटियों को लो, जो कि अपने देवी-देवताओं को मानने वाली होंगी। वे तुम्हारे बेटों को भी अपने ईश्वरों का उपासक बना डालेंगी। 17 अपने लिए ढाल कर तुम किसी धातु के देवी-देवता न बनाना। 18 तुम बिना खमीर वाली रोटी का पर्व मनाना। अबीब के माह में सात दिन बिना खमीर वाली रोटी खाना इसी महीने में तुम मिस्र की गुलामी से छूटे थे। 19 गर्भ का पहला फल (नर) तुम्हारे जानवरों का भी चाहे वह भेड़ का हो या गाय का, मेरा ठहरेगा। 20 गधे के पहले बच्चे को तुम एक मेम्ने से छुड़ा सकोगे। यदि तुम ऐसा न कर सको तो उसकी गर्दन तोड़ देना। तुम अपने बेटों में से जो प्रथम फल होंगे, उनको भी छुड़ा सकोगे। मेरे सामने कोई भी खाली हाथ न आए। 21 सात दिन तुम मेहनत करना, लेकिन सातवें दिन आराम करना। 22 तुम सप्ताह का त्यौहार, गेहूँ की फ़सल के प्रथम फल का त्यौहार और इकट्ठा करने का त्यौहार साल के आखिर में मनाना। 23 इस्राएल के परमेश्वर के सामने तुम्हारे सभी नर वर्ष में तीन बार मेरे सामने आएँ। 24 मैं तुम्हारे सामने, देशों को निकाल दूँगा, तुम्हारी सीमाओं को बढ़ाऊँगा। वर्ष में तीन बार जब तुम परमेश्वर के सामने (उपस्थिति में) प्रस्तुत होगे, तब तुम्हारी भूमि को हड़पने की हिम्मत किसी की नहीं होगी। 25 मेरे बलिदानों के रक्त को तुम खमीर के साथ मत मिलाना। न ही फ़सह के पर्व के बलिदान को अगली सुबह तक छोड़ना। 26 तुम्हारी के प्रथम फल (उपज) का पहला हिस्सा अपने प्रभु परमेश्वर के भवन में लाना। बकरी के बच्चे को उसकी माँ के दूध में मत पकाना। 27 फिर याहवे ने मूसा से कहा, "इन बातों को तुम लिख डालो। इन के आधार पर ही मैंने तुम्हारे और इस्राएल के साथ वाचा बाँधी है।" 28 चालीस दिन-रात मूसा प्रभु के साथ था। उस ने न खाना खाया, न

पानी पिया। उस ने उन तख्तियों पर अपने हाथ से वाचा के
शब्दों (दस आज्ञाओं) को लिख दिया। 29 मूसा के सीनै पहाड़
से नीचे आने पर (जब वह गवाही की दोनों तख्तियों को हाथों
में लेकर नीचे उतर रहा था) मूसा न जानता था, उसका चेहरा
रोशनी से दमक रहा था, क्योंकि उसकी बातचीत याहवे
परमेश्वर से हुई थी। 30 मूसा के चेहरे को चमकते हुए देखकर
हारून और इस्राएली पास आने से डरे। 31 लेकिन मूसा ने
उन सभी को अपने पास बुलाया। उन के पास आने पर उन
सभी से उसकी बातचीत हुई। 32 सभी इस्राएलियों को उस ने
वे सभी आज्ञाएँ बतायीं जो सीनै पहाड़ पर परमेश्वर ने उसे
दी थीं 33 जब तक मूसा उन से बातें करता रहा, अपने चेहरे
को ढाँके रहा। 34 लेकिन जब मूसा परमेश्वर से बातें करने के
लिए जाता था, अपने चेहरे पर से ओढ़नी हटा लिया करता
था। बाहर आने पर वह फिर से चेहरा ढक लिया करता था
और लोगों से वार्तालाप किया करता था। 35 इस्राएली मूसा
के चेहरे की त्वचा को प्रकाशमान होते देखा करते थे, इसलिए
वह जब तक वापस परमेश्वर से बातचीत के लिए नहीं जाता
था, ओढ़नी ओढ़े रहता था।

35 1 मूसा ने इस्राएलियों की सारी मण्डली को इकट्ठा
करके उन से कहा, "जिन कामों को करने की आज्ञा
याहवे ने दी है, वे ये हैं। 2 सभी लोग छैः दिन काम करें, लेकिन
सातवाँ दिन तुम्हारे लिए आराम का दिन ठहरे। जो व्यक्ति
सातवें दिन काम -काज करे, उसे मार डाला जाए। 3 सातवें
दिन तुम अपने घरों में आग तक मत जलाना। 4 फिर मूसा ने
इस्राएलियों की पूरी मण्डली से कहा, "जिस बात की आज्ञा
याहवे ने दी है वह यह है।" 5 तुम लोग याहवे के लिए दान
(भेंट) देना। लोग अपनी इच्छा से सोना, चाँदी, पीतल 6 बैंजनी
और लाल रंग का कपड़ा, महीन सनी का कपड़ा, बकरी का
बाल 7 लाल रंग से रंगी हुई मेंढों की खालें, सूइसों की खालें,
बबूल की लकड़ी 8 रोशनी देने के लिए तेल, अभिषेक का तेल,
धूप के लिए खुशबूदार पदार्थ 9 फिर एपोद और चपरास के
लिए सुलेमानी मणि और जड़ने के लिए मणि 10 तुम में से
हर एक जिसके पास योग्यता (कला) है, आए और वह बनाए
जिसको बनाने की आज्ञा याहवे ने दी है। 11 तम्बू, आवरण
सहित निवारा और उसकी घुंडी, तख्त, बेंडे, खम्भे और
कुर्सियाँ 12 डण्डों समेत सन्दूक, प्रायश्चित का ढक्कन और बीच
वाला पदार्थ 13 डण्डों और सब सामान के साथ मेंज, भेंट की
रोटियाँ 14 सामान और दियों समेत रोशनी देने वाला दीवट
और दीपक जलाने के लिए तेल। 15 डण्डों समेत धूप वेदी,
अभिषेक का तेल, खुशबूदार धूप और निवास के दरवाजे़ का
परदा, 16 पीतल की झंझरी, डण्डों आदि सारे सामान समेत
होम वेदी, पाए समेत हौदी। 17 खम्भों और उनकी कुर्सियों
समेत आँगन के पर्दे, आँगन के दरवाजे़ के पर्दे 18 तम्बू के
लिए खूँटे, आँगन के लिए खूँटे और उनकी डोरियाँ, 19 पवित्र
स्थान में सेवा के लिए बुने हुए कपड़े, हारून पुरोहित के लिए
पवित्र कपड़े और पुरोहित की तरह काम करने के लिए हारून
के बेटों के वस्त्र" 20 तब इस्राएलियों की सारी मण्डली मूसा के
सामने से लौट गई। 21 हर एक जन जिसके मन में जोश आया
और जिसकी आत्मा ने उसे इच्छा दी, वह मण्डली के मिलाप
वाले तम्बू, उसकी सेवा और पवित्र वस्त्रों के लिए प्रभु की भेंट
लाया। 22 जो पुरूष और महिलाएँ, सोने की भेंट देना चाहते
थे, वे कड़े, बुन्दे, गहने, सोने के जेवरात लाने लगे 23 जिसके
पास नीले, बैंजनी या लाल रंग का कपड़ा या महीन सनी का
कपड़ा, या बकरी की खाल या लाल रंग से रंगी हुई मेंढों की
खालें या सुइसों की खालें थीं वे उन्हें ले आए। 24 फिर जितने
चाँदी या पीतल की भेंट देने वाले 25 जितनी महिलाओं के
भीतर बुद्धि का प्रकाश या वे अपने हाथों से सूत कातकर
नीले, बैंजनी और लाल रंग के और महीन सनी के काते हुए
सूत को ले आयीं। 26 ऐसी महिलाओं ने बकरी के बाल भी
काते। 27 अगुवे लोग एपोद और चपरास के लिए सुलैमानी
मणि, जड़ने के लिए मणि, 28 प्रकाश देने अभिषेक और धूप के
सुगंधित चीजें और तेल ले आए। 29 जिस-जिस चीज के बनाने
की आज्ञा याहवे ने मूसा के द्वारा दी थी, उसके लिए जो कुछ
ज़रूरी था, वह सब महिलाएँ ले आई, यह सब अपनी-अपनी
इच्छा से था। 30 तब मूसा इस्राएलियों से बोला, "सुनो, यहूदा
कबीले के बसलेल को जो ऊरी का बेटा और हूर का पोता है,
नाम लेकर बुलाया है। 31 परमेश्वर ने उसे अपने आत्मा की
ऐसी भरपूरी दी है, कि वह प्राप्त बुद्धि, समझ और शान से
सब कुछ बना सकता है। 32 इसलिए वह सोने, चाँदी और
पीतल में और जड़ने के लिए मणि काटने में 33 और लकड़ी पर
नक्काशी करने में, यहाँ तक कि बुद्धि से हर तरह की निकाली
हुई बनावट में काम कर सके। 34 फिर याहवे ने उसके हृदय में
और दान के गोत्र के अहीसामाक के बेटे ओहोलीआब के मन में
सिखाने की योग्यता दी है। 35 इन दोनों के मन को याहवे ने
ऐसी अक्ल से भर दि ा है कि वे नक्काशी करने और गढ़ने वाले
और नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े और महीन सनी के
कपड़े में काढ़ने और बुनने वाले हों। यहाँ तक कि हर तरह की
कलाकृति करने वालों के मन भी।

36 1 बसलेल और ओहोलीआब और अन्य कलाकार
लो जिन्हें पवित्र स्थान की सेवा के लिए सब तरह
का काम करने के लिए योग्यता मिली थी, परमेश्वर की
आज्ञा के आधार पर मेहनत आरम्भ कर दी। 2 हर एक हुनर

वाले इन्सान जिस के मन को परमेश्वर ने उभारा था और
बसलेल व ओहोलीआब को मूसा ने अपने पास बुलाया।
3 पवित्रस्थान की सेवा और इसके बनाए जाने के लिए
इस्राएली लोग जो दान लाए थे, उसे मूसा ने इन लोगों के
सुपुर्द कर दिया। 4 पवित्रस्थान का काम करने वाले सभी
बुद्धिमान अपना-अपना काम छोड़कर मूसा के निकट आए।
5 वे बोले, "याहवे की आज्ञा के अनुसार जो कुछ किया जाना
चाहिए उसके लिए जो आवश्यक था, उस से अधिक लोग ले
आए हैं।" 6 तब मूसा ने यह ऐलान करवाया, "आदमी या
औरत कोई भी पवित्रस्थान के लिए अब दान न लाए।" 7 इस
तरह लोगों ने भेंट लानी रोकी, क्योंकि जितना कुछ ज़रूरी
था, उसके लिए सब कुछ मिल चुका था। 8 उन में के हर एक
निपुण व्यक्ति के निवास के लिए बटी हुई महीन सनी के कपड़े
और नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े के दस पर्दो को काढ़े
हुए करीबों सहित बनाया। 9 हर एक परदे की लम्बाई अट्ठाईस
हाथ और चौड़ाई चार हाथ की थी। सभी परदों का नाप
समान था। 10 पाँच परदे एक दूसरे से जोड़ दिए गए और बचे
हुए पाँच परदे भी एक दूसरे से जोड़े गए। 11 जिस जगह पर
ये परदे जोड़े गए वहाँ की दोनों छोरों पर नीले फ़न्दे लगाए
गए 12 दोनों छोरों में पचास-पचास फन्दे इस तरह लगाए कि
वे एक दूसरे के सामने थे। 13 सोने के पचास अंकड़े बनाए गए
और उन के द्वारा परदों को एक दूसरे से ऐसा जोड़ा कि निवास
मिलकर एक हो गया। 14 फिर निवास के ऊपर के तम्बू के
लिए बकरी के बाल के ग्यारह परदे बनाए। 15 एक-एक परदे
की लम्बाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ की थी। ग्यारह
परदों की नाप एक ही थी। 16 इन में से पाँच परदे अलग और
छै परदे अलग जोड़े गए। 17 जहाँ दोनों जोड़े गए, वहाँ की
छोरों में उस ने पचास-पचास फ़न्दे लगाए। 18 तम्बू के जोड़ने
के लिए पीतल के पचास अंकड़े भी बनाए, जिससे वह एक हो
जाएँ। 19 तम्बू के लिए लाल रंग से रंगी हुई मेंढों की खालों का
एक ओढ़ना और उसके ऊपर के लिए सूइसों की खालों का भी
एक ओढ़ना बनाया। 20 फिर निवास के लिए बबूल की लकड़ी
के तख्तों को खड़े रहने के लिए बनाया। 21 एक-एक तख्ते की
लम्बाई दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की हुई। 22 एक-एक
तख्ते में एक दूसरे से जोड़ी हुई दो-दो चूलें बनीं। निवास के सब
तख्तों को उस ने इसी तरह बनाया 23 निवास के लिए तख्तों
को इस तरह से बनाया, कि दक्षिण की तरफ़ बीस तख्ते
लगे। 24 इन बीस तख्तों के नीचे चाँदी की चालीस कुर्सियाँ
अर्थात् एक-एक तख्ते के नीचे उसकी दो चूलों के लिए उस ने
दो कुर्सियाँ बनाई। 25 निवास की दूसरी ओर यानि की उत्तर
की ओर के लिए भी उस ने बीस तख्ते बनाए। 26 इन के लिए
भी उस ने चाँदी की चालीस कुर्सियाँ अर्थात् एक-एक तख्ते के
नीचे दो-दो कुर्सियाँ बनाए। 27 निवास की पिछली ओर अर्थात्
पश्चिम की ओर के लिए उस ने छैः तख्ते बनाए। 28 पिछले
हिस्से में निवास के कोनों के लिए उस ने दो तख्ते बनाए। 29 वे
नीचे से दो-दो हिस्सों के बनें और दोनों हिस्से ऊपर के सिरे
तक एक-एक कड़े में मिलाए गए। उन दोनों तख्तों का आकार
ऐसा ही बनाया गया। 30 इस तरह आठ तख्ते हुए। उनकी
चाँदी की सोलह कुर्सियाँ हुई। एक-एक तख्ते के नीचे दो-दो
कुर्सियाँ। 31 फिर बबूल की लकड़ी के बेंड़े बनाए गए। निवास
की एक ओर के तख्तों के लिए पाँच बेंड़े। 32 निवास की दूसरी
ओर के तख्तों के लिए पाँच बेंड़े और निवास का जो किनारा
पश्चिम की तरफ़ पिछले हिस्से में था, उसके लिए भी पाँच
बेंड़े बनाए। 33 बीच वाले बेंड़े को तख्तों के मध्य में तम्बू के
एक सिरै से दूसरे सिरे तक पहुँचने के लिए बनाया 34 तख्तों
को सोने से मढ़ा गया और बेड़ों के घर का काम देनेवाले कड़ों
को सोने से बनाया। बेड़ों को भी सोने से मढ़ा गया। 35 इसके
नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े का और बटी हुई महीन
सनी वाले कपड़े का बीच वाला परदा बनाया। वह कढ़ाई के
काम किए हुए करूबों के साथ बना। 36 उसके लिए बबूल के
चार खम्भे बनाए गए। उन्हें सोने से मढ़ा गया। उनकी घुडियाँ
सोने की बनीं। उन के लिए चाँदी की चार कुर्सियाँ ढाल कर
बनवायी गईं। 37 तम्बू के दरवाजे के लिए नीले, बैंजनी
और लाल रंग के कपड़े का कढ़ाई का काम किया हुआ परदा
बनाया। 38 उस ने घुंडियों समेत उसके पाँच खम्भे भी बनाए
और उन के सिरों और जोड़ने की छडो ं को सोने से मढ़ा।
उनकी पाँच कुर्सियाँ पीतल की बनाईं।

37 1 बसलेल ने बबूल की लकड़ी का एक सन्दूक बनाया,
जिसकी लम्बाई ढाई हाथ, चौड़ाई डेढ़ हाथ और
ऊँचाई डेढ़ हाथ की थी। 2 उसे अन्दर बाहर शुद्ध सोने से
मढ़ने के बाद उस ने उसके चारों तरफ़ सोने की बाड़ बनाई।
3 उसके चारों पायों पर लगाने को उस ने सोने के चार कड़े
ढाल कर बनाए। दो कड़े एक ओर और दो कड़े दूसरी ओर
लगाए। 4 फिर उस ने बबूल के डण्डे बनाकर, उन्हें सोने से
मढ़ दिया। 5 उस ने उनको सन्दूक के दोनों ओर के कड़ों में
डाला, ताकि उनकी शक्ति से सन्दूक उठाया जाए। 6 फिर
उस ने शुद्ध सोने के प्रायश्चित वाले ढक्कन को बनाया। उसकी
लम्बाई ढाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की थी। 7 फिर सोना
गढ़कर दो करूब प्रायश्चित के ढक्कन के दोनों सिरों पर बनाए।
8 एक करूब एक सिरे पर और दूसरा करूब दूसरे सिरे पर
बना। उस ने उनको प्रायश्चित के ढक्कन के साथ एक ही टुकड़े
के दोनों सिरों पर बनाया। 9 करूबों के पंख ऊपर से फैले हुए
बने और उन पंखों से प्रायश्चित का ढक्कन ढपा हुआ बना उन के

मुँह आमने-सामने और प्रायश्चित के ढक्कन की ओर किए हुए
बने। 10 फिर उस ने बबूल की लकड़ी लेकर उस से एक मेंज
बनाई। इस मेंज की लम्बाई दो हाथ, चौड़ाई एक हाथ और
ऊँचाई डेढ़ हाथ की थी। 11 उस ने उसे शुद्ध सोने से मढ़ा और
चारों ओर सोने की एक बाड़ बनाई। 12 उस ने उसके लिए
चार अँगुल चौड़ी एक पटरी और इस पटरी के लिए चारों और
सोने की एक बाड़ बनाई। 13 उस ने मेंज के लिए सोने के चार
कड़े ढालकर उन चारो कोनों में लगाया, जो उसके चारों पायों
पर थे। 14 वे कड़े पटरी के पास मेंज उठाने के डण्डों के खानों
का काम देने को बने। 15 मेंज उठाने के लिए डण्डों को बबूल
की लकड़ी के बनाया और सोने से मढ़ दिया। 16 उस ने मेंज
पर का सामान अर्थात् परात, धूपदान, कटोरे और उण्डेलने
के बर्तन सब शुद्ध सोने के बनाए 17 फिर उस ने शुद्ध सोना
गढ़ा और पाए तथा डण्डी सहित दीवट को बनाया। पुष्पकोष,
गाँठ और फूल सभी एक ही टुकड़े के बनाए गए। 18 दीवट से
निकली हुई छैः डालियाँ बनीं। तीन डालियाँ उसके एक ओर
से और तीन डालियाँ उसके दूसरी ओर से निकली हुई बनी।
19 एक डाली में बादाम के फूल की तरह तीन-तीन पुष्पकोष,
एक-एक गाँठ और एक-एक फूल बना। दीवट से निकली हुई
उन छहों डालियों का यही आकार हुआ। 20 और दीवट की
डण्डी में बादाम के फूल की तरह अपनी-अपनी गाँठ और फूल
समेत चार पुष्पकोष बने। 21 और दीवट से निकली हुई छहों
डालियों में से दो-दो डालियों के नीचे एक-एक गाँठ दीवट के
साथ एक ही टुकड़े की बनी। 22 गाँठे और डालियाँ सभी दीवट
के साथ एक ही टुकड़े की बनीं। सारी दीवट गढ़े हुए शुद्ध सोने
की और एक ही टुकड़े की बनी थी। 23 उस ने दीवट के सातो
दियों और गुलतराश और गुलदान शुद्ध सोने के बनाए। 24 उस
ने सारे सामान सहित दीवट को किक्कार भर सोने से बनाया।
25 फिर उस ने बबूल की लकड़ी की धूपवेदी भी बनाई। उसकी
लम्बाई एक हाथ और चौड़ाई भी एक हाथ की थी वह चौकोर
थी और उसकी ऊँचाई दो हाथ की तथा उसके सींग उसके
साथ बिना जोड़ के बने थे। 26 ऊपर वाले पल्लो और चारो
ओर के बाजुओं और सींगो सहित उस ने उस वेदी को शुद्ध सोने
से मढ़ दिया। उसके चारो तरफ़ सोने की एक बाड़ बनाई।
27 उस बाड़ के नीचे उसके दोनों पल्लों पर उस ने सोने के दो
कड़े बनाए, जो उसके उठाने के डण्डों के खाने का काम दे।
28 डण्डों को उस ने बबूल की लकड़ी से बनाया और सोने से
मढ़ दिया। 29 उस ने अभिषेक का पवित्र तेल और खुशबूदार
द्रव्य का धूप गंधी की रीति के अनुसार बनाया।

38 1 उस ने होम वेदी बनाने के लिए बबूल की लकड़ी
का इस्तेमाल किया। उसकी लम्बाई और चौड़ाई
पाँच हाथ की थी और ऊँचाई तीन हाथ की। इस तरह से वह
चौकोर बनी थी। 2 उसके चारों कोनों पर उसके चार सींग
बनाए। वे बिना जोड़ के थे और उसको पीतल से मढ़ा गया।
3 उस ने वेदी के सारे सामान हाड़ियों, फावड़ियों, कटोरों,
काँटों और करछों को बनाया। सारा सामान उसका पीतल का
था। 4 वेदी के लिए उसके चारों ओर की कंगनी के नीचे उस ने
पीतल की जाली की एक झंझरी बनाई। वह नीचे से वेदी की
ऊँचाई तक पहुँचती थी। 5 पीतल की झंझरी के चारों कोनों के
लिए चार कढ़े ढाले गए, जो डण्डों के खानों का काम देते थे।
6 फिर उस ने डण्डों को बबूल की लकड़ी का बनाया और उसे
पीतल से मढ़ दिया। 7 फिर डण्डों को वेदी के किनारों के कड़ों
में वेदी के उठाने के लिए डाल दिया। उस ने वेदी को तख्तों
से खोखली बनाया। 8 उस ने हौदी और उसका पाया दोनों
ही पीतल के बनाए। यह मिलाप वाले तम्बू के दरवाजे़ पर
सेवा करने वाली स्त्रियों के पीतल के दर्पणों से बनाया गया।
9 एक आँगन बनाया गया, दक्षिण की ओर के लिए पर्दे बटी
हुई महीन सनी के कपड़े के थे। लम्बाई कुल मिलाकर सौ हाथ
की थी। 10 उन के लिए बीस खम्भे और इनकी पीतल की बीस
कुर्सियाँ बनी। और खंभों की घुंडियाँ तथा जोड़ने की छड़े चाँदी
की बनाई गईं। 11 उत्तर की ओर के लिए भी सौ हाथ लम्बे पर्दे
बने। उन के लिए बीस खम्भे और पीतल की बीस ही कुर्सियाँ
बनी। खंभो की घूडियाँ और जोड़ने की छड़े चाँदी की बनाई
गई। 12 पश्चिम की ओर के लिए सब पर्दे मिलाकर पचास हाथ
के थे। उन के लिए दस खम्भे और दस ही उनकी कुर्सियाँ थीं।
खंभो की घूडियाँ और जोड़ने की छड़े चाँदी की थीं। 13 पूर्व
दिशा की ओर वह पचास हाथ के थे। 14 आँगन के दरवाजे़ के
एक ओर के लिए पन्द्रह हाथ के पर्दे बने और उन के लिए तीन
खम्भे और तीन कुर्सियाँ थी। 15 आँगन के दरवाजे़ के दूसरी
ओर भी वैसा ही बनाया गया। आँगन के दरवाजे़ के दोनों
तरफ़ पंद्रह-पंद्रह हाथ के पर्दे बनाए गए। उन के लिए तीन ही
तीन खम्भे और तीन ही तीन इनकी कुर्सियाँ भी थीं। 16 आँगन
के चारों ओर सब पर्दे महीन बटी हुई सनी के कपड़े के बने
हुए थे। 17 खम्भों की कुर्सियाँ पीतल की और घूडियाँ और
छड़ें चाँदी की बनाई गई। उन के सिर चाँदी से मढ़े हुए और
आँगन के सब खम्भे चाँदी की घड़ों से जोड़े गए थे। 18 आँगन
के दरवाजे़ के पर्दे पर बेल-बूटे का काम किया हुआ था। वह
नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े का और महीन बटी हुई
सनी के कपड़े के बने थे। उसकी लम्बाई बीस हाथ की और
ऊँचाई आँगन की कनात की चौड़ाई की तरह पाँच हाथ की
थी। 19 उन के लिए चार खम्भे और खम्भों की चार ही कुर्सियाँ
पीतल की बनाई गईं। उनकी घूंडियाँ चाँदी की बनाकर सिरे
चाँदी से मढ़े गए। छड़े चाँदी ही की बनाई गई। 20 निवास और

आँगन के चारों ओर के सभी खूँटे पीतल के बने थे। लेवियों की सेवकाई के लिए 21 साक्षीपत्र के निवास के सामान के बारे में ब्यौरा यहाँ है जिसकी गिनती हारून पुरोहित के बेटे ईतामार के द्वारा मूसा के कहने पर कराई गई। 22 जिस जिस चीज के बनाए जाने का आदेश याहवे ने मूसा को दिया था यहूदा के कबीले के बसलेल ने जो हूर का पोता और ऊरी का पुत्र था, बनाया। 23 उसके संग दान के गोत्र वाले अहीसामाक का बेटा, ओहोलीआब था। वह नक्काशी करने, कढा़ई करने और नीले बैंजनी और लाल रंग के और महीन सनी के कपड़े में कढ़ाई करने में बहुत माहिर था। 24 पवित्रस्थान के सभी काम में जो भेंट का सोना लगा, वह पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से उनतीस किक्कार और सात सौ तीस शेकेल था। 25 मण्डली के गिने हुए लोगों के दान में चाँदी पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से सौ किक्कार और सत्रह सौ पचहत्तर शेकेल थी। 26 बीस साल और उस से ज्यादा उम्र के गिने लोग ये थे : छैः लाख तीन हज़ार साढ़े पाँच सौ पुरूष, हर एक जन की तरफ़ से पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार आधा शेकेल (एक बेका) मिला।

39 1 उन्हों ने नीले, बैंजनी और लाल रंग के काढ़े हुए कपड़े पवित्र स्थान की सेवा के लिए और हारून के लिए भी पवित्र वस्त्र बनाए। यह सब याहवे द्वारा मूसा को दिए हुए आदेश के अनुसार था। 2 उस ने एपोद को सोने, नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े का और महीन बटी हुई सनी के कपड़े का बनाया। 3 सोना पीटकर, उन्हों ने पत्तर बनाए, तारों को नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े में और महीन सनी के कपड़े में कढ़ाई की बनावट से मिला दिया। 4 एपोद को जोड़ने के लिए, उसके कन्धों के बंधन बनाए और वह अपने दोनों सिरों से जोड़ा गया। 5 उसको कसने के लिए जो कढ़ाई किया हुआ पटुका उस पर बना, वह उसके साथ बिना किसी जोड़ के उसी की बनावट के अनुसार, अर्थात् सोने और नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े का और महीन बटी हुई सनी के कपड़े का बना। यह सब कुछ मूसा को याहवे से मिले आदेश के मुताबिक था। 6 सुलेमानी मणि काटकर उन में इस्त्राएल के बेटों के नाम, जैसे छपाई का काम हो, वैसे खोदे और सोने के छिद्रों (खानों) में जड़ दिए। 7 उस ने उनको एपोद के कंधे के बन्धनों पर लगा दिया। यह इसलिए ताकि ये इस्त्राएलियों के लिए याद कराने वाले मणि ठहरें। यह सब याहवे के निर्दोष पर किया गया। 8 उस ने चपरास को एपोद की तरह सोने की और नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपडे़ की और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े में बेल-बूटे का काम किया हुआ बनाया। 9 चपरास चौकोर बनी और दोहरी भी। इसकी लम्बाई और चौड़ाई एक बालिश्त थी। 10 उसमें चार पंक्तियों में मणि जड़ दिए। पहली पंक्ति में माणिक, पद्यराग और लालड़ी जड़ दिए गए। 11 दूसरी पंक्ति में मरकत, नीलमणि और हीरा 12 तीसरी पंक्ति में लशम, सूर्यकांत और नीलम 13 चौथी पंक्ति में फी़रोज, सुलेमानी मणि और यशब जड़े गए। उन्हें अलग-अलग सोने के छिद्रों (खानों) में जड़ दिए गए 14 ये सभी मणि इस्त्राएल के बेटों के पात्रों की गिनती के अनुसार बारह थे। बारह कबीलों में से एक-एक का नाम जिस तरह खोदा जाता है, खोदा गया। 15 उन्हों ने चपरास और पर डोरियों की तरह गूँथे हुए चोखे सोने की जंजीर बनाकर लगाई। 16 फिर उन्होंने, सोने की दो खाने सोने की दो कड़ियाँ बनाकर दोनों कड़ियों को चपरास के दोनों सिरों पर लगाया। 17 तब उन्हों ने सोने की दोनों गूँथी हुई जंज़ीरों को चपरास के सिरों पर की दोनों कड़ियों में लगाया। 18 गूँथी हूई दोनों जंज़ीरों के दोनों बाकी सिरों को उन्हों ने दोनों खानों में जड़ के, एपोद के सामने दोनो कंधो के बन्धनो पर लगाया 19 तब उन्हों ने सोने के दो छल्ले बनाए तथा उसे चपरास (सीनाबन्द) के दोनों ओर उसकी कोर पर, जो एपोद के अन्दर की तरफ़ थी, लगाई। 20 उन्हों ने सोने की दो और कड़ियाँ बनाकर एपोद के दोनों कन्धों के बन्धनों पर नीचे से उसके सामने और जोड़ के पास एपोद के काढ़े हुए पटके के ऊपर लगाई। 21 तब उन्हों ने चपरास को उसकी कड़ियों के द्वारा एपोद की कड़ियों में नीले फीते से ऐसा बाँध दिया कि वह एपोद के काढ़े हुए पटके के ऊपर रहे और चपरास एपोद से अलग न होने पाए 22 फिर एपोद का बागा पूरे नीले रंग का बनाया गया। 23 उसकी बनावट ऐसी थी कि उसके बीच बख्तर के छेद की तरह एक छेद बना। छेद के चारों ओर एक कोर बनी कि वह फटने न पाए। 24 उन्हों ने उसके नीचे वाले घेरे में नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े के अनार बनाए। 25 शुद्ध सोने की घंटियाँ बनाकर बागे के नीचे वाले घेरे के चारों ओर अनारों के बीचों बीच लगाई । 26 अर्थात् बागे के नीचे वाले घेरे के चारों ओर एक सोने की घंटी और एक अनार लगाया गया कि उन्हें पहने हुए सेवकाई करें। 27 फिर उन्हों ने हारून और उसके बेटों के लिए बुनी हुई महीन सनी के कपड़े के अंगरखे 28 और महीन सनी के कपड़े की पगड़ी और महीन बटी हुई सनी के कपड़े का भीतरी वस्त्र 29 महीन बटी हुई सनी के कपड़े की और नीले, बैंजनी और लाल रंग की कढाई का काम की हुई पगड़ी : इन सभी को याहवे की आज्ञा अनुसार बनाया गया। 30 फिर उन्हों ने पवित्र ताज की पटरी शुद्ध सोने की बनाई और छपाई की तरह अक्षर खोदे गए। 31 उन्हों ने उसमें नीला फीता लगाया जिससे वह ऊपर पगड़ी पर रहे 32 इस तरह मिलाप वाले तम्बू के निवास का सारह काम खतम हुआ और जिस-जिस काम

का हुक्म याहवे ने मूसा को दिया था वैसा ही इस्राएलियों ने
किया। 33 तब वे निवास को मूसा के पास लाए अर्थात् घुंडियाँ,
तख्ते, बेंडे, खम्भे, कुर्सियाँ आदि सारे सामान के साथ 34 लाल
रंग की रंगी मेंढों की खालों की ओढ़नी, सूइसों की खालों की
ओढ़नी और बीच का परदा। 35 डण्डो समेत साक्षीपत्र का
सन्दूक, प्रायश्चित का ढक्कन 36 सभी सामान के साथ मेंज और
भेंट की रोटी। 37 सब सामान के दीवट और उसकी सज़ावट के
दीए और रोशनी देने के लिए 38 सोने की वेदी और अभिषेक
का तेल, खुशबूदार धूप और तम्बू के दरवाजे़ का परदा।
39 पीतल की झंझरी, डण्डों और सारे समान सहित पीतल
की वेदी और पाए सहित हौदी 40 खम्भों और कुर्सी सहित,
आँगन के पर्दे आँगन के दरवाजे़ का परदा, डोरियों और खूँटे
और मिलाप वाले तम्बू के निवास की सेवा का सारह सामान
41 पवित्रस्थान में सेवकाई करने के लिए बेल-बूटा काढे़ हुए
कपड़े और हारून याजक के पवित्र कपड़े जिन्हे पहनकर उन्हें
पुरोहित का काम करना था। 42 अर्थात् जो-जो आज्ञा याहवे ने
मूसा को दी थी, वैसे ही इस्राएलियों ने किया। 43 तब मूसा ने
सारे काम का जायजा़ लिया कि उन्हों ने याहवे की आज्ञा के
अनुसार सब कुछ किया है या नहीं।

40 1,2 फिर याहवे ने मूसा से कहा, "पहले महिने के
पहले दिन को तुम मिलाप वाले तम्बू के निवास
को खड़ा कर देना। 3 उस में साक्षीपत्र के सन्दूक को रखकर
बीच वाले पर्दे की ओट में कर देना। 4 मेंज को अन्दर ले
जाकर, जो कुछ उस पर सज़ाना है, सज़ा देना। तब दीवट
को अन्दर ले जाकर उसके दियों को जला देना 5 साक्षीपत्र के
सन्दूक के सामने सोने की वेदी को, जो धूप के लिए होगी, उसे
रखना 6 और निवासे के दरवाजे़ के सामने होम वेदी रखना।
7 मिलाप वाले तम्बू और वेदी के बीच हौदी को रखकर उसमें
पानी भर देना 8 चारों ओर के आँगन की कनात को खड़ा करना
और आँगन के दरवाजे़ पर पर्दे को लटका देना। 9 अभिषेक
का तेल लेकर निवास का और जो कुछ उस में होगा, सब कुछ
का अभिषेक करना। सारे सामान सहित उसको पवित्र करना,
तभी वह पवित्र ठहरेगा। 10 सब सामान सहित होम वेदी
का अभिषेक करके उसको पवित्र करना, तब वह परमपवित्र
ठहरेगा 11 पाए समेत हौदी का अभिषेक कर उसे पवित्र
करना 12 तब हारून और उसके बेटों को मिलाप वाले तम्बू के
दरवाज़ों पर ले जाकर पानीं से नहलाना 13 हारून को पवित्र
कपड़े पहनाना और उसका अभिषेक करके उसको अलग करना
कि वह मेरे लिए पुरोहित का काम करें। 14 उसके बेटों को ले
जाकर अंगरखे पहनाना 15 जैसे तुम उन के पिता का अभिषेक
करो, वैसे ही उनका भी करना, ताकि वे मेरे लिए याजक
(पुरोहित) का काम करें। उनका अभिषेक उनकी पीढ़ी-पीढ़ी
के लिए उन के सदा के पुरोहितपन का चिन्ह ठहरेगा। 16 इस
तरह मूसा ने याहवे के द्वारा दिए गए आदेश के अनुसार किया।
17 दूसरे साल के पहले महीने के पहले दिन को निवास खड़ा
किया गया। 18 मूसा ने निवास को खडा करवाया। उसकी
कुर्सियाँ रख उसके तख्ते लगाकर उन में बेंडे डाले और उसके
खम्भों को खडा किया। 19 उस ने निवास के ऊपर तम्बू को
फैलाया और तम्बू के ऊपर ओढनी को लगाया। यह सभी
याहवे के निर्दोष के अनुसार था। 20 फिर उस ने साक्षीपत्र को
लेकर सन्दूक में रख दिया। उस ने सन्दूक में डण्डों को लगाकर
उसके ऊपर प्रायश्चित के ढकने को रख दिया। 21 याहवे ने
जैसा निर्देष उसे दिया था, उस ने सन्दूक को निवास में पहुँचा
दिया और बीच वाले पर्दे को लटकाकर साक्षीपत्र के सन्दूक को
उसके अन्दर रख दिया। 22 उस ने मिलाप वाले तम्बू में निवास
के अन्दर की ओर बीच के पर्दे से बाहर मेंज को लगाया 23 उस
पर उस ने याहवे के सामने रोटी को सज़ा कर रखा। 24 उस
ने मिलाप वाले तम्बू में मेंज के सामने निवास के दक्षिण की
ओर दीवट को रखा। 25 उस ने दीयों को याहवे के सामने
जलाया। 26 उस ने मिलाप वाले तम्बू में बीच के पर्दे के सामने
सोने की वेदी को रखा। 27 उस ने उस पर खुशबूदार धूप
जलाया 28 उस ने निवास के दरवाजे़ पर पर्दे को लगाया।
29 मिलाप वाले तम्बू के निवास के किवाड़ पर होमवेदी को
रखकर उस पर होमबलि और अन्नबलि को चढ़ाया। 30 मिलाप
वाले तम्बू और वेदी के बीच हौद को रखकर उसमें धोने के
लिए पानी उण्डेला। 31 मूसा, हारून और उसके बेटों ने उसमें
अपने हाथ-पाँव धोएँ। 32 जब-जब वे मिलाप वाले तम्बू में या
वेदी के निकट जाया करते थे, अपने हाथ-पाँव धोया करते
थे। 33 उसमें निवास के चारों ओर वेदी के आस-पास आँगन
की कनात को खड़ा कराकर आँगन के दरवाजे़ं के पर्दे को
लटकाया 34 फिर बादल मिलाप वाले तम्बू पर आ ठहरा और
याहवे का तेज निवास स्थान में भर गया। इस कारणवश मूसा
अन्दर दाखिल न हो सका। 35 इस्राएलियों की पूरी यात्रा में
ऐसा ही हुआ करता था। जब-जब बादल निवास के ऊपर से
उठ जाता था, तब-तब वे निकल पड़ते थे। 36 यदि वह न
उठता था तो ठहरे रहते थे। 37 इस्राएल की सारी यात्रा भर
दिन में याहवे का बादल निवास पर और रात को उसी बादल
में आग उन सभी को दिखाई दिया करती थी।